सन्मार्ग प्रकाशन
१६, यू० बी० बंग्लो रोड, दिल्ली-११०००७

विमल मित्र

प्रथम संस्करण : १९८१

प्रकाशक : सन्मार्ग प्रकाशन
१६, यू० बी० बँग्लो रोड, दिल्ली-११०००७

मूल्य : २०-०० रुपये

मुद्रक : मार्ण्णम प्रिंटिंग प्रेस
विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

: १ :

यह कहानी सौ, दो सौ या तीन सौ साल पुरानी नहीं है, बिलकुल आज की ही है।

लेकिन तीन सौ साल पहले भी यहां एक दिन ऐसे ही लोग जमा हुए थे। दिल्ली की मसनद पर उस समय शाहजहा था। शाहंशाह के हुक्म पर एक दिन कासिम खां फौज लेकर हुगली के रास्ते यहा आ पहुचा। शहर लूटा, घर तोड़-फोड़ डाले, मन्दिर नष्ट किए, गिर्जा तोडा, आदमी, औरत, बच्चे किसी को भी नहीं छोड़ा। देखते-देखते गगा-किनारे पादरी डी-क्रूज साहब का गिर्जा खडहर हो गया। सारी रात आधी-पानी मे बीती, लेकिन पौ फटते ही जैसे बारिश अचानक रुक गई और हुगली शहर के लोगों ने आखें फाड़े आश्चर्य से देखा—बीच नदी से फादर डी-क्रूज साहब चले आ रहे हैं। उनके दोनों हाथ ऊपर उठे थे, और हाथ मे थी पत्थर की प्रतिमा, वर्जिन मेरी की।

फिर क्या था, 'हरि बोल, हरि बोल' की जय-जयकार के साथ 'गुरु मां आ गईं, गुरु मां आ गईं' की ध्वनि से जैसे आकाश गूज उठा। वर्जिन मेरी को वे लोग इसी नाम से पुकारते थे।

हां, तो आज वहां फिर उसी तरह भीड़ लगी थी।

गिर्जा अब पुराना हो गया है। दीवालो पर काई जमी है। आस-पास के पेड़ भी पुराने और बूढे हो गये हैं। नियमित देखभाल न होने से कोई इधर ज्यादा आता भी नहीं है, यहां तक कि खास बैंडिल के लोग भी इस ओर घूमने नहीं आते; लेकिन आज आए हैं। बगीचे के एक ओर कुछ सीढियां हैं, सीढियां चढ़कर एक चबूतरा है। उस चबूतरे पर ही एक औरत बेहोश पड़ी है।

भीड में से किसी ने पूछा, "अरे भाई, यहां क्या हुआ है? किस बात

की भीड़ है।"

एक ने कहा, "सुना है, कोई मर गया है।"

"कौन मरा है?"

"क्या मालूम, मरने को भी और कोई जगह नहीं मिली! मरा भी तो यहां, इस गिर्जे में आकर!"

लेकिन मन्दिर के देवता के दर्शनों को जिस प्रकार शुरू से पहली, फिरी दूसरी सीढ़ी चढनी होती है, शिल्प के देवता के लिए यह सब कुछ नहीं है। वहां का हाल ही निराला है, एक शब्द में कोई नियम-कानून नहीं है। बीच से भी आरम्भ किया जा सकता है और अन्त से भी। शिल्पदेव आरम्भ के पहले से ही शुरू है और समाप्ति के पश्चात् भी बाकी। मतलब यह है कि आरम्भ वहां आरम्भ नहीं है और अन्त, अन्त नहीं, बीच में सिर्फ यह जीवन ही एक महान शिल्प है। इस जीवन-शिल्प को लेकर ही मेरी यह कहानी है।

पहले पेज पर नाम लिखकर कहानी अभी शुरू करने ही वाला था, एक मित्र देखकर कहने लगे, "इतने नामों के होते हुए तुम्हें यही नाम रखने को मिला!"

मैंने कहा, "मेरी यह कहानी एक लड़की पर आधारित है।"

"उससे क्या, तुम्हारी और भी तो कितनी ही कहानियां दीदियों पर केन्द्रित हैं—पुतुलदीदी, सोनादीदी, मिष्टीदीदी, कलोजामदीदी—उसी तरह का कोई एक नाम दे सकते थे। इसके अलावा यह कठिन भी तो कितना है।"

"जिसको लेकर मेरी कहानी है, उसका जन्म ही मिथुन लग्न में हुआ था। इसके अलावा उसका नाम भी ऐसा कुछ अच्छा नहीं है, कम से कम कहानी के शीर्षक के लायक तो नहीं ही है। एकदम साधारण घरेलू लड़की। मिल की मोटी साड़ी, आंखों पर मोटे कांच का चश्मा और पढ़ने-लिखने में ही समय काटने वाली, पुरुषों के साथ उसका कोई सम्पर्क नहीं है। ऐसी लड़की का नाम यदि सुधन्या या उर्दिचि रखता तो क्या ठीक रहता? इसमें तो उसका असली नाम देना ही ठीक है।"

मित्र ने पूछा, "असली नाम क्या है।"

"कमला।"

"अरे, वही अपनी सुधीर बाबू की लड़की न ?" मित्र ने पूछा।

मैंने कहा, "नहीं।"

"तब क्या हम लोगों के साथ पढ़ती थी, वही कमला बोस न !"

"अरे नहीं, तुम उस कमला को नही पहचानोगे। मैं भी कमला दत्त को नहीं पहचानता। यों तो सुनी-सुनाई कहानी है। उसने जो कहा, ठीक वही लिख रहा हूं, ज़रा भी घटा-बढ़ी नहीं करूंगा।"

सच मे बढ़ाने या घटाने जैसा कमला के जीवन में कुछ है भी नहीं। कमला दत्त के जीवन में कोई नाटक भी नहीं है। एक शब्द मे उसके जीवन को लेकर कोई कहानी ही नहीं हो सकती। हुगली गर्ल्स स्कूल की हेड मिस्ट्रेस कमला दत्त एम० ए०, बी० टी० ने कभी सोचा भी नहीं होगा कि मैं, आदिनाथ का चित्र, किसी दिन उसी के जीवन को अपनी कहानी का कथानक बनाऊंगा। यह मालूम होने पर कमला के समान स्त्री शायद आदिनाथ को इतनी बातें नही बतलाती। चलते समय जिस औरत के टखने तक दिखलाई न दें, जिसने किसी परिचित के सामने भी अपने दिल की बात नही कही, जो इस समय भी अपना नाम लिखती है, 'कमलावाला दत्त', उसी लड़की की यह कहानी है। जान लेने पर शायद आत्महत्या ही कर बैठेगी। लेकिन आदिनाथ को मैंने वचन दिया है कि जिस प्रकार उसने बतलाया है, ठीक उसी ढांचे मे उसका चरित्र बैठाऊगा, ज़रा भी इधर-उधर नहीं होगी। न ज़रा-सा भी बढ़ाऊगा, न घटाऊगा। यह ठीक है कि कमला दत्त आज सोचने-समझने लायक नही है, लेकिन आदिनाथ तो है, सुकुमारी बसु तो है। और वही राममोहन सेन—हुगली गर्ल्स स्कूल के सेक्रेटरी। स्कूल खत्म हो जाने से क्या है, स्कूल के सेक्रेटरी तो सशरीर मौजूद है।

अगली बात शुरू करने से पहले एक बात और कह डालूं।

काफी दिन कलकत्ते से बाहर रहा। बाहर रहते समय कलकत्ते के मित्र, समाज, साहित्य सब कुछ प्रायः भूल ही गया था। मैं कभी कहानी

लिखता था अथवा कभी लिखूगा, यह बात कभी मेरे दिमाग मे ही नही आई। वैसे यह सब मैं 'सोनादी' की कहानी लिखते समय लिख चुका हूं, इसलिए इस समय नही लिखने से भी कोई ज्यादा नुकसान न होगा।

जो भी हो, काफी दिनों बाद जब कलकत्ते लौटा तो सब कुछ बदल गया था। जो दोस्त बेकार थे, उन्हें नौकरी मिल गई थी; जो धोती-कुर्ता पहनते थे, अब सूटबूटधारी हो गये थे; गरीब अमीर हो गये तथा कुमार नोन-तेल-लकड़ी के चक्कर में फस चुके थे। सबसे आश्चर्यजनक बात तो आदिनाथ ने कर डाली। अरे वही अपना पुराना बैठकबाज दोस्त आदिनाथ।

आदिनाथ ने शादी की है, लेकिन सब लोग जिस प्रकार शादी करते है, वैसे नही। जहा तक मुझे पता है, आदिनाथ का मेलजोल, यों कहिए सम्बन्ध पाच-छ. लड़कियों से था और पाचों से ही शादी करने की उसकी प्रतिज्ञा के बारे मे भी मालूम था, लेकिन रमा नही, रमला नहीं, सुतपा नही, सुप्रीति नही उसने शादी की भी तो सुकुमारी से ! और जो भी हो, कम से कम उससे शादी होने की तो कोई बात थी ही नही।

मिलते ही पूछा, "आखिर मे सुकुमारी ही मिली शादी करने को?"

आदिनाथ नें कहा, "हा, सुकुमारी से विवाह किया। चार-पाच बच्चे भी हो गये है। तुम्ही नही, सभी मुझसे यही सवाल करते हैं; लेकिन असली कारण कोई भी नही जानता।"

"लेकिन तुझे आखिर सुकुमारी ही क्यों पसन्द आई?" मैंने पूछा।

आदिनाथ ने कहा, "वैसे और सभी को मैंने यू ही जवाब देकर चलता किया है, लेकिन असल मे बात दूसरी है, वह कोई भी नही जानता। जानता हू सिर्फ मैं और सुकुमारी।"

"जरा मैं भी तो सुनूं तुम्हारा असली कारण?"

"असल कारण है कमला दत्त···"

"कमला दत्त? यह कौन है?"

"कमला दत्त, हुगली गर्ल्स स्कूल की हेड मिस्ट्रेस।" आदिनाथ ने बतलाया।

अवाक् हो गया। पूछा, "तुम रहते हो टालीगंज। कहा टालीगंज।

और कहां हुगली ! उसके साथ तुम्हारा परिचय कैसे हुआ ?"

आदिनाथ ने कहा, "वह एक लम्बी कहानी है, फिर किसी दिन कहूंगा। जो बात अभी तक किसी को नही बतलाई, तुम्हें बतलाऊंगा। तुम हो कहानीकार, मेरी बात ठीक से समझ पाओगे। यह तो तुम्हें मालूम ही होगा कि मैंने घर से सब सम्बन्ध तोड़ दिए हैं और अलग एक किराये के मकान मे रहता हूं। तुम्हारे आने से सुकुमारी भी खूब खुश होगी। उसने वह नौकरी छोड़ दी है।"

"नौकरी ? कौन सी ?"

"वही हुगली गर्ल्स स्कूल की नौकरी—कमला दत्त के स्कूल में ही तो सुकुमारी नौकरी करती थी।"

आदिनाथ से कमला दत्त की कहानी सुने भी कई साल गुजर गए है। इतने दिन तक लिखा नही, इसका भी एक कारण है—प्यार-मोहब्बत की कहानी लिखते घबड़ाता हूं, विशेषकर कमला दत्त के प्रेम की जो प्रेम अपनी ओर आकर्षित करता अथवा जिसमें धक्के खाने पड़े, वह प्रेम तो साधारण प्रेम है। जो प्रेम सृष्टि न कर सिर्फ ध्वंस करना ही जानता है, उसमें भी कोई खास बात नही है; लेकिन जो प्रेम अपनी ओर खीचता नही, दुतकारता नही, सृष्टि भी नही करता, यहां तक कि ध्वंस भी नही करता लेकिन जो अमंगल के भयकर ढाल पर ठेल देता है; जो न जीवन है न मौत, जिसकी अन्तिम मंजिल है जीवन और मौत के बीच की एक भयावह स्थिति—उस प्रेम को क्या कहूं ?

आज भी आंख बन्द करने पर दिखाई देता है बैंडिल स्टेशन पर उतर कर आदिनाथ का वही कोई एक मील तक घोड़ागाड़ी लेकर जाना। ठेठ कलकत्ते की लड़की सुकुमारी सप्ताह के छः दिन होस्टल में एक तरह से बन्दी की तरह रहती थी। शनिवार को शाम होते-होते आदिनाथ आ पहुंचता। बैंडिल स्टेशन की बाईं ओर प्लेटफॉर्म पार कर रास्ते पर दिखलाई देगा एक विशाल पीपल का पेड़, जिसके नीचे दो-तीन मामूली दर्जे की घोड़ागाड़ियां खड़ी रहती हैं, लेकिन सबसे साफ दिखाई देगा—तीन सौ साल पहले का वही गिर्जा। वही वर्जिन मेरी। उजड़े बाग के कोने में वही काई लगी ऊंची सीढ़ियां और उसके ऊपर वही नीरव चबूतरा, जिसे आज

भी कमला दत्त, आदिनाथ, सुकुमारी और राममोहन सेन स्पष्ट रूप से घेरे हुए हैं।

साईस भी आदिनाथ को पहचान गए थे। हर शनिवार को दो दस की लोकल से यह बाबू आता है, फिर करीब एक घंटे में लौटता है। साथ में होती है गर्ल्स स्कूल की एक 'दीदीमनि'। गाड़ी का दरवाजा-खिड़की सब बन्द कर बात करते-करते जाते हैं। साईस के कानों तक सिर्फ दो गलों की आवाज ही पहुंच पाती है। वे लोग न बात समझ पाते हैं, न समझने की कोशिश ही करते हैं—इसके बाद चार बजे की लोकल में चढ़ाकर उन लोगों की छुट्टी। आने-जाने का किराया डेढ़ रुपये। कुर्ताधारी बाबू जेब से मनीबेग निकाल किराया देकर जल्दी टिकट खरीदने चले जाते। करीब एक-डेढ़ साल तक इसी प्रकार चलता रहा। विश्वासी आदमी, रुपया जांचने की जरूरत भी नहीं होती। इतने भरोसे के आदमी पर भी क्या अविश्वास किया जा सकता है!

इस इलाके में हुगली गर्ल्स स्कूल का काफी नाम है। अभिभावक अपनी बच्चियों को यहां भेजकर निश्चिन्त रहते है। वैसे सभी टीचर्स पढ़ी-लिखी और भले घर की हैं, लेकिन बड़ी दीदीमनि की तो बात ही कुछ और है।

लोग कहते हैं कि 'बड़ी दीदीमनि' के भरोसे पर अपनी लड़कियां इस स्कूल मे पढ़ने के लिए छोड़ते हैं—नहीं तो और क्या है!

लड़कियां स्कूल में अंग्रेजी पढ़ें, गणित सीखें, सिलाई-कढ़ाई सीखें फिर भी मेम साहब न बन जाएं, बड़ों का आदर करें। गृहस्थ लड़कियों को और चाहिए ही क्या? जितने दिन स्कूल है, आचार-व्यवहार, हिसाब किताब, सिलाई-कढाई, अंग्रेजी लिखना-पढ़ना यही सब चलेगा। फिर तो किसी की शादी होगी सलकिया, किसी की बड़ा नगर, किसी की उत्तर-पाड़ा, किसी की निकचशीगंज और बहुत भाग्यशाली होने पर किसी की कलकत्ते। ससुराल में जिससे कोई कहने न पाए—'एकदम गंवार बहू है।' नहीं तो और क्या, बात तो मां-बाप को ही सुननी होती है। सास-ससुर कहेंगे कि अच्छे मां-बाप है, लडकी को थोड़ा पढ़ाया भी नहीं।

ये सब बहुत पहले की बात है। तब सुकुमारी भी इस स्कूल में नौकरी नहीं करती थी। आदिनाथ भी शनिवार को शनिवार अपनी ड्यूटी

बजाने नही आता था। स्कूल मे उस समय वहां के पहले सेक्रेटरी राम मोहन सेन एडवोकेट जैसे धूनी रमाए बैठे रहते। मुहल्ले के चार भले आदमियों की लड़कियों को इकट्ठा कर उन्होंने ही एक दिन बिना किसी खास उद्देश्य के इस स्कूल की नींव डाली। समाज की भलाई का कोई काम, जिसे करने से सब आदमी प्रशंसा करें, मूल प्रेरणा थी। पैतृक सम्पत्ति काफी थी ही। जमीन-जायदाद, गहने, कम्पनी के कागज, और भी न जाने क्या-क्या ! शौक से ही एडवोकेट हुए थे, बिना इसके कुछ जमता नहीं इसीसे। नही तो दो बार एम० ए० पास करके घर में भी बैठ सकते थे, लेकिन फिर भी कानून पढ़ा, एडवोकेट हुए। कहते थे—भई, कानून पढ़ लेना अच्छा है, न लगे अपने काम, किसी दूसरे का ही उपकार हो सकता है।

वास्तव मे राममोहन सेन परोपकारी आदमी है, इस बारे में सन्देह की गुजाइश नही है। नही तो उनकी क्या आफत आई थी कि यह स्कूल खड़ा करते ! वह भी यह लडकियो का स्कूल ! तनख्वाह नाममात्र, लेकिन पढाई के मामले में एकदम सख्त। अच्छी तरह देख-सुनकर छांट-छांटकर टीचर लाए है। शृंगार-पिटारा कुछ नहीं चलने का। कक्षा में पान खाना, गहना पहनना सब मना है। अगर तुम्हारे पास गहना है तो जाओ बाहर, कलकत्ते में जाकर पहनो छात्राओं की आंखों से परे, नही तो वही देखेंगी और सीखेंगी। टीचर को देखकर ही तो सीखती हैं ये लड़किया।

आदिनाथ आते ही पहले तो अवाक् रह गया।

सुकुमारी की चिट्ठी पाकर ही तो आया था वह। लिखा था, वैंडिल स्टेशन से बाहर निकलकर पीपल के पेड़ के नीचे से एक घोड़ागाड़ी किराये पर ले आना, क्योंकि स्कूल से स्टेशन तक पैदल जाना हम लोगों के लिए मना है। बड़े सख्त हैं हमारे सेक्रेटरी ! मेरी छुट्टी दो बजे होती है। हमारी प्रधानाचार्य कमला दत्त है, उनसे मिलकर मेरे नाम की चिट्ठी भेजते ही मैं चली आऊंगी—ज्यादा देरी मत करना।

आदिनाथ ने बतलाया, "सुकुमारी को तो तुम लोग पहचानते ही हो। पहले तो इतने दूर की नौकरी करने को ही तैयार नही थी। मेरे साथ जल्दी-जल्दी मुलाकात नही होगी, इसीसे।"

फिर बोली—"तुम वचन दो, हर शनिवार को आओगे ?"

सुकुमारी उस पुराने जमाने की महिला थी। आदिनाथ सुकुमारी और हम लोग जिस काल में जन्मे थे, उस समय औरतों का नौकरी करना तो अलग, रास्ते में निकलना भी महान अपराध था। घर की औरतों को लेकर थियेटर देखने जाने पर घोड़ागाड़ी की सब खिड़कियां बन्द करके जाना होता था, लेकिन सुकुमारी को उस जमाने में जन्म लेकर भी नौकरी करनी पड़ी, केवल मजबूरी से। सुकुमारी हम लोगों के मित्र तपन की फुफेरी बहन थी। दूसरे के सिर पर बोझ बनकर रहने से, जो भी मिले कुछ न कुछ करना अच्छा है, इसीलिए नौकरी की, लेकिन कब और कैसे आदिनाथ ने सुकुमारी से अपना परिचय कर लिया, पहले तो हम लोगों को पता ही न चला। जिस समय जान पाए, मामला काफी बढ़ चुका था।

तपन हंसते-हंसते कहता, "आदिनाथ किस-किसको संभालेगा ?"

हम लोग भी सोचते कि सुकुमारी के भाग्य में काफी दु:ख लिखे हैं। सुकुमारी के पास न रूप है, न रुपया ही। दूसरी ओर जो-जो थीं, उन सबके सामने सुकुमारी कुछ भी न थी। रमा के पिता के पास गाड़ी थी। रमला के भाई काफी बड़ी जगह पर काम करते थे। सुतपा के पास और तो कुछ नहीं, लेकिन रूप था। सुप्रीति का गाना सुनने लायक था। इन सबके हाथ से छीन लाने की चाहे जिसकी भी हिम्मत हो, सुकुमारी की तो कम से कम नहीं ही थी।

आदिनाथ ने कहा, "लेकिन अन्त में उसी सुकुमारी की जीत हुई।"

सच में हम लोग हैरान थे। मैंने कहा, "लेकिन वही तो जानना चाहते हैं, आखिर सुकुमारी में ऐसा क्या था ?"

"सुकुमारी औरत थी, इसीसे।" आदिनाथ ने कहा।

"औरत !" और भी आश्चर्य में पड़ गए।

"यह बात आज तक और किसी से नहीं कही। रमा, रमला, सुतपा सुप्रीति, वाकई में सुकुमारी से अधिक रूपसी और गुणवान थी। रमा वास्तव में बड़े आदमी की लड़की थी। उससे शादी करने पर शायद किसी दिन खाने-पीने की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। रमला अपने भाई से कहकर मेरे लिए शायद अच्छी नौकरी की व्यवस्था कर देती। सुतपा

निस्संदेह सुन्दर थी। साथ लेकर घूमने पर दस आदमी जरूर ही ईर्ष्या से कुढ़ते और सुप्रीति का सा गला कितनों ने पाया है ! सब स्वीकार करता हूं; पर भाई मुझे उन लोगों को लेकर सभा में तो जाना नही था। मुझे तो बहू को लेकर गृहस्थी चलानी थी।"

"और कोई क्या गृहस्थी नहीं चला रहा ?" मैंने आश्चर्य मे पूछा।

"नही, कोई गृहस्थी नही चला रहा। कौन-कौन गृहस्थी चला रहा है, जरा सुनू ना ? अच्छी तरह से पता लगाकर देखो, सब जगह चोरी चल रही है। जिन लोगों ने वाकई मे गृहस्थी जमाई है, उन सभी की पत्निया औरतें है।"

"औरतें ! क्या मतलब ?"

आदिनाथ ने कहा, "कमला दत्त, जिसका चरित्र शुद्ध सच्चे सोने की तरह पवित्र था, माता-पिता जिसके स्कूल मे अपनी लड़कियां भेजकर उनके सती-सावित्री बनने की आशा करते, जिसके पैरों को भी मुझे छोड़कर शायद किसी ने नही देखा और अध्यापिकाओ को जो मां की तरह स्नेह करतीं, बहन की तरह प्यार करतीं, स्वामी विवेकानन्द के चित्र को प्रणाम कर जो दिन का काम शुरू करती, स्कूल की बाई, महाराज, नौकरी और दरबान जिसका नाम लेते नही अघाते, वही कमला दत्त, हुगली गर्ल्स स्कूल की प्रधानाचार्या कमला दत्त भी औरत नही थी।"

मैं और भी हैरान था, पूछा, "इसका मतलब ?"

आदिनाथ ने कहा, "मेरी शादी के सिर्फ तीन महीने बाद जब हम लोगों के यहा लडका हुआ तो जितने मुंह उतनी बातें हुईं। किसी ने लम्पट कहा। कोई कहता—"जनाब अन्दर ही अन्दर शिकार कर रहे थे, बच्चू अब पकड़ मे आए है।" यहां तक कि मुझे अपना घर भी छोड़ना पड़ा, लेकिन मुह से मैंने कुछ नही कहा। आज भी नही कहता—कहने से कोई समझता नही; लेकिन तुम्हें बतलाता हूं। तुम मनुष्यों का मन लेकर काम करते हो, शायद समझ पाओ···"

"कहो।" मैंने कहा।

आदिनाथ ने कहा, "सुकुमारी उन रमा, रमला और सुतपा की जरा भी परवाह नही करती थी। उन सबो से उसे किसी भी दिन कोई डर नही

था। वह कहती—"सुना है, तुम उन सबो के साथ ही अधिक समय बिताते हो, और मुझे छोड़कर शायद उन्ही मे से किसीके साथ शादी करोगे।"

मैं पूछता, "सुनने की बात छोड़ो, तुम क्या सोचती हो ?"

"मुझे तो हसी आती है।"

"क्यो, इसमे हंसने की क्या बात है ?"

उस समय मैं शायद किसी होटल मे बैठा सुकुमारी के साथ बात कर रहा होता। शनिवार को हम लोग ट्रेन से कलकत्ते आते । आकर किसी दिन सिनेमा, कभी रेस्टोरेंट तो कभी ईडन गार्डन में सध्या बिताकर अन्तिम लोकल से फिर उसके बोर्डिग छोड़ने जाता। इसके बाद फिर से कलकत्ते की गाड़ी पकड़ता। लडाई का ज़माना, इतनी रात को उस समय गाड़ी में कोई नही होता था। खाली कम्पार्टमेट मे सुकुमारी की बातें सोचता-सोचता लौटता। मुझे आश्चर्य इसी बात का था कि पैसा, रूप और इज्ज़त आबरू मे सबसे कम होने पर भी आखिर उसमे इतना आत्मविश्वास आया तो कहा से !

वह कहती, "अपने ऊपर अगर इतना विश्वास भी न होगा। तो तुमसे मिलती क्यों हूं ? दुनिया मे मेरा कोई नही है। रिश्तेदारो के यहा गले पड़ी आफत हूं। गरमी की छुट्टी मे मामा के यहा जाने पर मुझे सबके लिए खाना बनाना पड़ता है। तुमसे मिलने तक का समय नही निकाल पाती। इतना सब होने पर भी तो तुम्हारे साथ कितने सालों मे घुल-मिल रही हू; तुम्हें भी मिलने दे रही हूं—यह सब क्या यो ही समझते हो ?"

फिर जरा रुककर कहती, "पता है, मामा के यहा मेरे लिए एक सोने का अलग कमरा तक नहीं है। यहा स्कूल के बोर्डिग मे भी हम सारी अध्यापिकाएं एक ही कमरे मे सोती हैं। अपना कहने को मेरे पास कभी कुछ भी नही, अपना घर गृहस्थी, रसोई कुछ भी नहीं।" फिर जरा आवाज और भी धीमी करके कहती, "अभी भी मेरा अपना कहने को कोई नहीं है, एक सिर्फ तुम्हे छोड़कर…"

यह निर्भरता, ये भाव—सच में मुझे नये लगते। रमा, रत्ना और गुनपा के पास मैं महज एक गहने की तरह था, जो औरतों के लिए शोभा की चीज है। आवश्यक भी कहा जा सकता है, साथ ही समय पर उसे बेच-

कर पेट भी भरा जा सकता है; लेकिन सुकुमारी के लिए मै उसके अंग की तरह अभिन्न था। मुझे छोड़कर वैसे वह और कुछ सोच ही नही पाती थी। मुझे याद है, बातचीत के बीच वह कभी-कभी 'मेरे भविष्य' की जगह कह जाती 'हम लोगों का भविष्य'। कहती, "अब हम लोगों को कुछ रुपये जमा करने चाहिए।"

मैं नही, हमारा नही, मेरा नहीं—हम लोगों का। मुझे साथ लेकर ही था उसका भविष्य, मुझे केन्द्र करके ही थे उसके सारे स्वप्न, सारी कल्पनाएं, जो भी हो, सब। उसके सम्मान मे मेरा भी सम्मान, मेरे अपमान में उसका अपमान था। तीसरे की उसे आशका तक नही थी और इसी से वह कभी उस बारे में सोचती भी नही थी।

यही सब सोच कर शनिवार का दिन मैंने सुकुमारी के लिए सुरक्षित कर दिया था। सप्ताह के और दिन मैं किसी के भी साथ क्यो न काटूं, शनिवार सुकुमारी के साथ ही काटना होगा। प्यार का आकर्षण मुझमें था या नही, और था तो कितना था—यह सब मैंने कभी नहीं सोचा। कर्तव्य, सहानुभूति नाम से जो कुछ है, उसी के आकर्षण से मैं जाता था।

पूछता, "किसी दिन विश्वासघात कर बैठूं तो ?"

"तुम करोगे विश्वासघात ? तब तो मेरा औरत होना ही बेकार है।"

"औरत क्या तुम अकेली हो ? रमा, रमला, सुतपा, सुप्रीति—वे सभी तो औरतें हैं।"

"मैं तुम्हें जितना पहचानती हूं, वे सब क्या तुम्हें उतना पहचानती हैं ? उनमे से कोई भी क्या इतना चाहती है, जितना कि मैं ? सच-सच बतलाओ !"

फिर जरा रुककर कहती, "कमला दी क्या कहती है—जानते हो ?"

"कमला दी ?"

"हां, हमारे स्कूल की प्रधानाचार्या कमला दत्त। वह कहती हैं, स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है—"पैसा होने से दारिद्र्य का भय है, रूप होने से उसके कुरूप हो जाने का डर है, गुण होने से दोष का भय है, ज्ञान होने से अज्ञान का भय है—पाकर ही तो खो देने का भय है ? मेरे पास तो कुछ है ही नही—इसी से मुझे किसी बात का भय भी नहीं है।"

"कमला दी का तुम्हे शायद सबसे ज्यादा डर है ?"

"डर ? डर क्यों होने लगा ? हां, भक्ति कह सकते हो—सच ! ऐसी औरत मैंने अब तक की अपनी जिन्दगी मे तो कभी देखी नही।"

"शायद काफी सुन्दर है ?"

"जरा भी नही, बल्कि कुरूप कहना ही ठीक होगा, लेकिन कमला दी के साथ दो मिनट बातचीत करने के बाद रूप की कमी फिर और नही खटकती। कमला दी कहती है—"भगवान ने मुझ पर बडी दया की कि मुझे रूप नही दिया। रूप के आकर्षण से कोई शादी तो कर लेता, लेकिन फिर क्या यहा छात्राओं को पढा पाती ? छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाने मे जो आनन्द मिलता है, वह क्या शादी करके गृहस्थी बसाने मे मिल पाता ?"

कमला दत्त को मैंने अब तक नही देखा था। सुकुमारी से ही उसकी बढाई सुनता। चाय की दुकान पर, सिनेमा मे जहा कही भी जाते, सुकुमारी बात-बात मे कमला दत्त की कोई न कोई बात छेड देती।

सुकुमारी ने एक दिन कहा, "देखो आज मामा के यहा जाने का नाम लेकर तुम्हारे साथ आ गई, कमला दी जानने पर खूब गुस्सा होंगी।"

"लेकिन तुम्हारी कमला दी की भी तो एक दिन शादी होगी ?"

"शादी होगी ! किसने कहा ?"

"वाह ! शादी ही नही होगी ?"

"शादी होने पर स्कूल कौन चलाएगा ? गरीब की लडकी है, सोचकर हमारे सेक्रेटरी राममोहन सेन ने इसी स्कूल में एक दिन भरती करा दिया था। एक पैसा भी नहीं देना पड़ा था। उस समय कमला दी की उम्र ही कितनी थी, यही कोई चार या पाच साल रही होंगी। उस समय स्कूल के नाम पर भी थी सिर्फ एक टीन-शेड। न यह दुमजली इमारत थी, न ही अध्यापिकाओ के लिए यह बोर्डिंग था। खुद सेक्रेटरी साहब उस समय लड़कियों को पढाते थे। फिर कमला दी आई और साथ ही साथ इस स्कूल के भाग्य खुले। नहीं तो क्या मुझे ही यहा नौकरी मिलती ? और न तब तुमको ही हर शनिवार को चार-पाच रुपये खर्च करके मेरे लिए यहा चैंडिल स्टेशन पर आना पड़ता।"

इसी तरह कुछ-कुछ सुकुमारी से सुना था। बाद मे फिर कमला दत्त

से परिचय होने पर उससे भी सुना—"राममोहन सेन थे वहां के खानदानी रईस। डबल एम० ए० और एल०एल० बी०। प्रैक्टिस शुरू न कर उन्होंने लड़कियों का स्कूल खोला। मुहल्ले-मुहल्ले चक्कर काटते और हाथ जोड़ कर हर एक से बोलते—"आप लोगों की सहायता पर ही हम लोगों के स्कूल की सफलता निर्भर है। अगर आप लोग सहायता करें तो कृतार्थ होऊंगा—बस, और कुछ नहीं।"

शुरू-शुरू में किसी ने साथ नहीं दिया। दो-एक लोगों ने दया करके सिर्फ अपने घर की लड़कियों को भेज दिया। कुल चार-पांच छात्राएं और एक टीन-शेड; बस! शुरू-शुरू में तो राममोहन सेन महाशय को स्लेटें भी अपने ही पैसे से खरीदकर देनी पड़ी, बिस्कुट वगैरह का लोभ दिलाया, पूजा पर खिलौने खरीद-खरीद कर दिए।

अभी भी कमला दत्त आई नहीं थी। कमला दत्त उस समय या तो हाल ही में जन्मी थी अथवा जन्मी भी नहीं थी। बाघ-निमुन्दिपुर की पानापोखर के पास की झोंपडी में, शहर से दूर एक परिवार में एक लड़की का जन्म हुआ। न शंख बजा, उलू-ध्वनि भी नहीं हुई और न किसीने उसके अभिभावकों की ओर से कांसे का घंटा ही बजाया। एक बिनचाही बेकार लड़की। घर में बाप भी नहीं था। अंधेरी रात, तीन कोस दूर से आकर दाई ने नाल काटी।

मां की भी प्रायः 'अब गई, अब गई' अवस्था थी। इतने दिन बाद हुई भी तो लड़की, बेचारी रो ही पड़ी थी। कष्ट के कारण जितना नहीं रोई, उतना तो क्षोभ, दुःख और अपमान के कारण रोई।

फिर हठात् एक दिन बाप आ पहुंचा। अचानक जाने की तरह ही था उसका हठात् आ धमकना।

आते ही पूछा, "किस समय हुई?"

सब सुनकर कहा, "मिथुन लग्न में हुई। लड़की भाग्यवान है। लेकिन…"

"लेकिन क्या? बचेगी तो?" मां ने आतुरता से पूछा।

बाप ने कहा, "तुम्हारी लड़की काफी काम की है। खूब नाम कमाएगी, सभी आदर करेंगे, लेकिन…"

"लेकिन क्या ?"

"शास्त्र में लिखा है कि मिथुन राशि पर शनि के रहने से जातक बन्धनमुक्त होता है। उसके ऊपर रवि की दृष्टि होती है..."

"उससे क्या होता है ?"

"लडकी बडी सीधी और ठंडी प्रकृति की होगी। सब लोग सम्मान भी करेंगे। धर्मभीरू होगी। कष्ट सहन कर सकेगी। लेकिन तुम्हारी लडकी जीवन में कभी सुख नहीं पाएगी।"

पहले तो घर आकर मां के हाथ में पांच सात रुपये दे देता। दो-चार दिन घर रहकर खाता-पीता और कुछ दिन इसी तरह चुपचाप ज़मीन-आसमान के कुलावे मिलाते-मिलाते निकल जाते।

मोहल्ले मे किसी से मुलाकात होने पर कोई यदि पूछता, "अरे चाचा हैं न ?"

"हा, अभी आया हू।"

तभी कोई शायद पूछ बैठता, "अरे इतने दिन थे कहां ?"

चाचा कहते, "दुनिया में क्या जगह की कमी है—तमाम दुनिया ही तो अपनी है।"

"लेकिन इस बार? इस बार किस ओर गायब होगे ?"

चाचा कहते, "कहा जाऊगा भाई! उसके राज्य में क्या कही भागने की जगह है? पीछे-पीछे चन्दा-सूरज जो आएगे भागकर जाओगे कहा ?"

"लेकिन इस बार तो चाची के लड़की हुई है, अब और कहीं मत जाना तुम। समझे ?"

बाप मा से पूछता, "घर में रोता कौन है ?"

"मुन्नी, और कौन ?"

"बड़ी रोने वाली है !" कहकर बाप आसमान की ओर ताकता।

"उससे क्या है! बचपन में जितना रोना है, रो लो बाद में तो सिर्फ हंसना ही होगा।"

"ठीक है, ठीक है, रोने दो। बाद में आप ही सब ठीक हो जाएगा। रोए बिना भाग्य जागेंगे कैसे? ठीक रोना ही अच्छा है। लड़की तुम्हारी भाग्यवती है।"

लेकिन फिर एक दिन भागने को तैयार। आधी रात में उठकर मां हाथ पकड़ लेती है, "इतनी रात को साकल खोल कर कहां जा रहे हो?"

"बाहर जा रहा हूं।"

"अभी ही लौट आओगे न ?"

"नहीं, मेरा फिर बुलावा आया है।"

"लेकिन तब लड़की को पालेगा कौन ?"

"लड़की के बारे में सोचने वाली तुम कौन हो ? जिसकी चीज़, वह देखेगा।"

"क्या खिलाऊंगी, क्या पहनाऊंगी ? दूध पीती बच्ची···"

"अरे हम-तुम तो साधन-मात्र हैं—त्वम् ही प्राण' शरीरे।—मुझे-तुम्हें जो खिला रहा है, वही खिलाएगा-पहनाएगा···"

कहकर बाप जो गया तो फिर किसी दिन लौटकर नहीं आया। अब तक फिर भी बीच में कभी-कभी आ जाता, दो-चार दिन रहता। इस बार लड़की ही जैसे काल हो गई। बन्धन ही माया है और माया का बन्धन सबसे बड़ा है। उसी बन्धन से पूरा-पूरा छुटकारा मिल गया, लेकिन अन्त में उसकी भविष्यवाणी का एक-एक शब्द सच निकला।

राममोहन सेन ने उसी समय हुगली में स्कूल खोला। मुहल्ले के पांच परोपकारियों ने जाकर उन्हें सारा हाल बताया। दुःखी, मां-बाप का पता नहीं, ऐसी विपत्ति के समय आपको छोड़ और किस पर भरोसा किया जा सकता है ?

सेक्रेटरी ने कहा, "ठीक है, यहीं रहने दो।"

रहने का मतलब—रहना, खाना-कपड़ा, पढ़ना-लिखना सब। जिसका धन, उसी ने देखा। बाप फरार, मां सिर्फ निमित्त के लिए गर्भधारणी ही रही। बाघ-निमुन्दिपुर से कमला का वही अन्तिम सम्पर्क था।

: २ :

राममोहन सेन सात पुश्त से खानदानी रईस थे। विशाल ज़मीन-जायदाद, ज़मींदारी, कचहरी, और भी न जाने क्या-क्या। हज़ारों का

कारोबार रोज होता। स्वस्थ-सुन्दर शरीर। बायें हाथ में एक सोने से मढ़ा तावीज। तेरह-चौदह बच्चे। घर मे गोलमटोल आह्लादी बहू। उनका शरीर गहनों से भरा, गऊशाला गायों से भरी, कोठार अनाज से भरा, कमरा किताबों से भरा, घर लड़के-लड़कियों से भरा और सन्दूक रुपयों से भरा था। खाओ-पियो, मौज करो, दीयताम् भुज्यताम् वाली बात।

लेकिन बड़े कड़े आदमी। हर बात का नियम। सुबह छ: बजे सबको उठाना होगा, और रात को दस बजे बत्ती बन्द। सुबह सात बजे यदि कचहरी में अपनी टेबल पर चाय आनी ही चाहिए, तो उसी तरह ठीक बारह बजे रसोई से खाने का बुलावा आना चाहिए। चाहे स्कूल कमेटी की आवश्यक मीटिंग हो या कुछ भी, घड़ी मे जब देखते कि बारह बजने में पाच मिनट है, तो कहते; "अच्छा, मैं तो उठूगा अब।"

एक बार उठने की कहने पर किसी की हिम्मत नहीं है कि फिर उन्हे एक मिनट भी रोक ले। साक्षात् भगवान भी उन्हें फिर नही रोक सकते। तब जाते हैं अन्दर। खाने बैठने पर एक आदमी पास खड़ा होकर पंखा झलेगा। और महाराज दिखलाता—यह अरहर की दाल है—यह मूग की—

तभी पूछेंगे, "उस कमल वाली कटोरी में क्या है ?"

"जी, उसमें आलू-बरी है।"

"ठीक है, ठीक है। पत्थर की कटोरी में वह किस चीज की चटनी है ?"

"लौकी की।"

सब मालूम करने पर एक-एक कर खाना शुरू करते। पूछते, "आज रोहू मछली का झोल किसने पकाया है ?"

इसी घर मे एक दिन कमला दत्त आई थी। घर में और भी चौदह-पन्द्रह बच्चे थे। जैसे सागर मे बूंद, किसी को पता भी नही चला। और इतनी रोने वाली लड़की कमला भी यहां आकर ठंडी हो गई। एक ओर बैठकर पढ़ती, फिर चुप-चाप घर आ जाती। इतनी कच्ची उम्र में ही जीवन का सबसे बड़ा आघात खाकर बेचारी जैसे अटपटा-सी गई थी। चुपचाप वह कब बडी हो गई, किसी को पता भी न लगा। इतने सावधान

और कड़े राममोहन सेन भी नही जान पाए कि फ्रॉक छोड़कर कमला ने कब से साड़ी पहनना शुरू कर दिया, बालों का जूड़ा बनाने लगी, ब्लाउज पहनने लगी।

अचानक एक दिन राममोहन सेन की नज़र पड़ गई। देखकर हैरान रह गए। पूछा, "कौन हो तुम ?" कमला कमरे के अन्दर ही आ रही थी।

बोली, "मैं···"

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"कमलाबाला दत्त।"

"ओह, बाघनिसुन्दिपुर की कमला दत्त ! अच्छा-अच्छा, तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है ?"

शर्म से कमला अच्छी तरह बात भी नही कर पा रही थी, लेकिन अचानक एक घटना हो गई। राममोहन सेन की पत्नी आह्लादी बहू ने उसे अपने कमरे में बुला भेजा। स्नेह से खाना खिलाया। अलग कमरे में सोने का प्रबन्ध किया। अलमारी से कुछ अच्छी-अच्छी साड़िया निकालीं। बोली, "ये सब अब तुम पहनो। तुम बड़ी हो रही हो।"

और स्वय गृहस्वामी ने उसे घर पर पढ़ाने का भार लिया।

बाघ-निसुन्दिपुर का स्वप्न पीछे छूट गया। कमला दत्त ने ज्ञान-विज्ञान की कठिन मंजिल पार करना शुरू किया। रामायण, महाभारत, व्रत-कथाएं, गणित, स्वास्थ्य-सोपान, इतिहास-भूगोल यही उसके रात-दिन के साथी हो गए।

राममोहन सेन ने कहा, "इसी तरह साधना करके एक दिन आदमी बन पाओगी। समझी ?"

फिर बोले, "मैंने खिलौने बनाने के लिए स्कूल नही खोला है, आदमी बनाने के लिए खोला है। तुम लड़की हो, लेकिन मैं मनुष्यत्व के प्रति तुम्हारे कर्तव्य को किसी पुरुष से ज़रा भी कम नहीं मानता।

"दस आदमी तुम्हारा यश-गान करें, तुमको श्रद्धा करें, सम्मान करें, ऐसा व्यवहार करो, रहन-सहन बनाओ—इसी प्रकार का जीवन बिताओ।"

"विलासिता और भोग-वासना दो दिन की चीज़ है। उसम दु:ख है, लेकिन शिक्षा का आनन्द और ज्ञान की दीप्ति अक्षय है।"

"शुद्ध सोने में जिस प्रकार जंग नहीं लगती—ज्ञान भी वही सोना है।"

"स्वामी विवेकानन्द का स्मरण करो, उनके उपदेशों को समझने की *कोशिश करो, तभी जीवन सार्थक होगा।"*

यही था प्रारम्भ।

फिर छोटे-से स्कूल की एक के बाद एक सारी कक्षाएं समाप्त हो गईं। कमला दत्त ने कहा, "अब मैं क्या पढ़ूं ?"

"पढाई का भी क्या अन्त है ? तुम्हें अभी और पढ़ना होगा और बड़ा होना होगा। और अधिक ज्ञान-प्रकाश पाना होगा। तुम्हारे लिए *मैं इस स्कूल को हाई स्कूल करूंगा। चिट्ठी-पत्री चल रही है। हाई स्कूल* किए बिना अब नहीं चलने का। लड़कियां भी अब काफी बढ़ गई हैं। केवल हाई स्कूल करने से ही काम नहीं चलेगा। अध्यापिकाओं के लिए रहने की जगह भी बनानी होगी।"

और बोर्डिंग बना, स्कूल की भी नई बिल्डिंग बनी। अखबारों में विज्ञापन निकले, नई अध्यापिकाएं आईं। चारों ओर चहारदीवारी से घिरी बिल्डिंग। बाहर से कोई लडकियों के पाव तक नहीं देख सकता, एकदम पर्दानशीन स्कूल।

एक-एक कक्षा बढ़कर कमला दत्त ने मैट्रिक की परीक्षा दी। उसी साल कमला दत्त को राममोहन सेन ने स्कूल की प्रधानाचार्या बना दिया तथा एफ० ए०, बी० ए०, एम० ए० आदि सारी परीक्षाएं प्राइवेट ही दिलवा दीं।

कमला दत्त ने पूछा, *"अब ?"*

"अब क्या, और पढो। तुम्हें पढना नहीं छोड़ना है। मैं भी स्कूल को कॉलिज करूंगा। मेरी बहुत दिनों की साध है, मैं आदमी बनाऊंगा। तुम्हें मैंने अपनी इच्छानुसार बनाया है। तुम्हीं होगी प्रिन्सिपल। लेडी प्रिन्सिपल ! क्यों, डर लग रहा है कि नहीं संभाल पाओगी ?"

ठीक उसी समय एक घटना हो गई।

चारों ओर हुगली गर्ल्स स्कूल का नाम था। उत्तरपाड़ा, बांस-*बाड़िया, सिगुर, द्वारवासिनी, गोसाईं मालपाड़ा, दीघा, पाडुआ,* चुचड़ा तक से लडकियां पढ़ने आतीं। उनके रहने को होस्टल है, चारों ओर से

बन्द । होस्टल, बोडिंग सब चहारदीवारी से घिरे हैं। लड़कियाँ हॉस्टल से निकलकर स्कूल पढ़ने आती, लेकिन कोई देख नहीं पाता। लम्बा-चौड़ा कम्पाउंड, करीब तीस बीघे मे फैला था। चारो ओर वृक्ष-लताओं से आवेष्टित जेलखाने की तरह विशाल चहारदीवारी। अन्दर घूमो, हवा खाओ, झूला झूलो, तालाब, मन्दिर, बगीचा सभी कुछ।

नैवेद्य में केले की तरह स्कूल के ऊपर सिर्फ एक राममोहन सेन थे। एकमात्र पुरुष। उनके नीचे उनकी एकमात्र प्रतिनिधि कमला दत्त। वैसे एक स्कूल-कमेटी थी, लेकिन सिर्फ नाम के लिए। सभी सेक्रेटरी की मुट्ठी मे थे, लेकिन स्कूल के साथ उनका सम्पर्क सिर्फ कमला दत्त के माध्यम से ही था।

स्कूल के इलाके में कमला दत्त ही प्रधान थी—सर्वेसर्वा।

किसी ने तालाब में साबुन से कपड़े धोए, बगीचे से किसी ने फूल तोड़ लिया—कमला दत्त ठीक पकड़ लेगी। मेहतरानी झाड़ू ठीक से नहीं लगा रही—कमला दत्त से डाट खानी ही पड़ेगी। सुबह सबसे पहले उठ कर चुपचाप सारे कम्पाउंड का चक्कर लगा आती हैं। कहां गड़बड़ है, किसने नियम का उल्लंघन किया है, किसने गन्दगी की है, सब ओर उसकी स्नेहसिक्त, लेकिन सतर्क दृष्टि रहती है।

कमला दत्त हंसते-हंसते पूछती, "कल शाम बगीचे में शायद झाड़ू लगाना भूल गई थी कालू की मां ?"

या पूछती, "रात को बारह बजे तक तेरे यहा रोशनी क्यों हो रही थी प्रीति ?"

राममोहन सेन कहते, "सोचता हू, हफ्ते मे एक दिन खाने की कक्षा हो। कमला, तुम्हारी क्या राय है ?"

राममोहन सेन के अपने घर मे भी उस समय काफी परिवर्तन हो गया था। आह्लादी बहू और भी आह्लादी हो गई। लड़के-लड़कियो की शादी हो चुकी, नाती-पोते हो गए—फिर भी लगता है, जैसे छोटी-सी बच्ची हों। अभी भी गहनों की केटलॉग लेकर बैठी-बैठी नये पैटर्न खोजती या पूछतीं, "आज सुबह चच्चड़ी किसने बनाई थी ?" या शाम

को बिस्तरे पर पड़ी-पड़ी ही चिल्लातीं, "आज क्या तुम लोगों का चाय-पानी नहीं होगा? खा-पीकर सोना ही क्या काम है? हाथ-मुंह धोना, बाल बांधना कुछ भी तो नहीं हुआ है अभी तक?"

नहाने जाते समय शरीर से गहने उतारकर अलमारी में बन्द करतीं। नहाने के बाद निकालकर फिर पहनतीं और कहतीं, "और नहीं होता मुझसे। बुरा हाल हो गया मेरा तो इन रोज के धन्धों से।"

यह बुरा हाल उनका हमेशा ही रहता है। अब कमला दत्त इस घर में कभी-कभी ही आती है, लेकिन वह जब सिर्फ पांच वर्ष की थी, तभी से देख रही है।

बीच-बीच में सेक्रेटरी साहब के पास तो आना ही पड़ता है। तभी मासी मां से मिल जाती है। उसे देखते ही आह्लादी मासी मां कहतीं, "अरे, कमला बेटी, आज किसका मुंह देखकर उठी थी!"

"क्यों, मैं तो समय मिलते ही आती हूं मासी मां!"

"अरे, अब तेरे स्कूल की नई बिल्डिंग बन गई है, तू हेड मास्टरानी हो गई। तनख्वाह बढ़ गई—अब तुझे मासी मां की याद क्यों आने लगी? ससुराल से विनी आयी थी। कहती थी—'कमला दी का तो अब बड़ा नाम हो गया है।' लड़की को तेरे स्कूल में दाखिल कराएगी। कहती है—'कमला दी के पास पढ़कर मेरी लड़की आदमी बन जाएगी।'"

"विनी आदि सब कैसी है मासी मां?"

"यही तो, सामने चैत्र में विनी के बच्चा होगा। साथ में आई थी। एक हार बनवा दिया। पन्द्रह भरी का है। बीस रुपये तो बनाई के ही ले लिए। रोजाना पहनने के दो थे। आने-जाने के लिए एक और बनवा दिया। लेकिन तू भी तो अब हेड मास्टरानी हो गई। अब गहने बनवा, गला सूना-सूना लगता है।"

कमला कहती, "ना-ना मासी मां, हम सबों को ऐसे ही ठीक है। मास्टरानियों को देखकर लड़कियां भी तो वही सब करेंगी।"

आह्लादी मासी मां गाल पर हाथ रखकर कहती, "ओ मां, तू कहती क्या है! मास्टरानी हुई है तो क्या मन की साध-अभिलाषा नहीं है? क्या हमेशा ही मास्टरानी ही रहेगी? शादी-ब्याह..."

"नही मासी मां, सेन महाशय वह सब पसन्द नही करते। इसके अलावा, हमारे स्कूल का इसीलिए तो नाम है। मैं ही अगर गहने-जेवर पहनूंगी, तो गरीब लडकियों को दु.ख होगा।"

"हा, ठीक ही तो है। उन्होंने छुटपन से तुझे ठोक-पीटकर तैयार किया है। वह खुद हमेशा पढ़ना-लिखना लिए रहते हैं, तुझे भी वैसा ही बनाया है। मैं तेरी पूज्य होती हूं, आशीर्वाद देती हूं कि तेरा स्कूल और भी बड़ा हो। तेरा नाम हो, यश हो और···क्या कहूं—लेकिन मासी मां को मत भूल जाना। हां, आज यही खाना खाकर जाना। समझीं ?"

"न मासी मा, आज माफ करो।"

"क्यों ? आज कोरमा बना है, थोड़े से गरम भात के साथ···"

कमला कहती, "मांस खाना मैंने छोड़ दिया है।"

"यह क्या, मांस कब छोड़ दिया ?" मासी मा आश्चर्य से पूछती।

"कभी का छोड दिया है। इसके अलावा आज हमारे होस्टल में मटर-गोभी की तरकारी बनी है। रात को मैं अधिक नहीं खाती, दो रोटी मे ही पेट भर जाता है।"

"अरे राम, इस उम्र मे इतना कम खाती है ! मेरा तो भई, आठ के बिना काम नही चलता।"

"ज्यादा खाने से नीद जो आती है, पढाया नही जाता, झपकी आती है।"

आह्लादी मासी मां तकिये का सहारा लेकर कहती, "कहे देती हूं, इतना मत पढ़। पढ-पढकर चेहरा कैसा झुलसा लिया है ! जमाई आकर ···" और इसके साथ ही कमला को मारे शरम के मासी मां के पास से भागना पड़ता।

सेक्रेटरी के सामने बैठकर और ही बातें सुननी पड़ती। सेक्रेटरी राममोहन सेन की कचहरी मे विशाल टेबल के सामने बैठकर कमला दत्त एकदम बदल जाती। राममोहन सेन जैसे जादू जानते थे। जिस तरह सपेरे साप को वश में कर लेते हैं, वैसे ही कमला को भी सेक्रेटरी के पास रहना ही अच्छा लगता है। सेक्रेटरी के हां कहने पर वह हां कहती, उनके ना कहने पर उसकी भी ना होती। सेक्रेटरी की बात की जैसे वह

प्रतिध्वनि हो।

सेक्रेटरी प्रश्न करते, फिर खुद ही उत्तर देते—अच्छी-अच्छी बातें, सदुपदेश। कमला सिर्फ सुनती। वैसे वह उससे उत्तर की आशा भी नहीं करते थे।

पूछते, "मन-माफिक काम किसे कहते हैं, कहो तो कमला !"

कमला चुप रहती, तब खुद ही बोलते, "जिस काम के साथ हमारे मन का योग है, जिसमें जबर्दस्ती जैसी कोई बात नहीं होती, जिसे करने में हमें आनन्द मिलता है, उसी को मन-माफिक काम कहते हैं। ठीक है न ?" कमला फिर भी कुछ नहीं बोलती।

सेक्रेटरी फिर बोलते, "मन-माफिक काम मिलने पर तो उसे मूर्ख भी कर डालते हैं, उसमें बहादुरी किस बात की ?" सिर्फ सिर हिलाकर कमला धीरे से कहती, "हा।"

"तुम्हें मैं अपने मन के मुताबिक बनाना चाहता हू, मैं चाहता हूं कि तुम हर काम अपनी इच्छा से, अपने मन के मुताबिक करो। इस स्कूल के काम में ही—लड़कियों के पढ़ाने में ही—तुम अपने लिए आनन्द की खुराक ढूढ़ो। अन्य लोगों की तरह तुम्हें साधारण जीवन नहीं बिताना है। तुम्हारा कर्तव्य काफी महान है। तुम्हारे ऊपर काफी जिम्मेदारी हैं। 'जोआन ऑफ आर्क' की कहानी याद है ? सिस्टर निवेदिता की बातें याद हैं ?"

कहकर सेक्रेटरी काफी देर तक कमला की ओर एकटक देखते रहते। और कमला, वह नीचे नजर झुकाए चप्पल के चमड़े को नाखून से खुरचती होती।

"अब जाओ।"

घोड़ागाड़ी बाहर खड़ी ही होती। कमला धीरे-धीरे गाड़ी में चढ़कर खिड़की बन्द कर लेती।

: ३ :

प्रीति कहती, "आज मुझे आधे दिन की छुट्टी चाहिए कमला दी !" कमला काम करते-करते नजर उठाकर कहती, "दरख्वास्त दी है

क्या ? कहा है, याद तो नहीं आता।"

"आधे दिन की छुट्टी, उसके लिए भी दरख्वास्त !"

"आधे दिन की हो चाहे पूरे, स्कूल का अनुशासन भी तो कुछ है। पता है, सेक्रेटरी यह सब पसन्द नहीं करते।"

"सेक्रेटरी ही सब कुछ हैं, तुम कुछ भी नहीं ? तुम भी तो प्रधानाध्यापिका हो, तुम्हारा क्या कोई अधिकार ही नहीं है?"

कमला गम्भीर होकर कहती, "बहस मत करो प्रीति, जो कह रही हू, सुनो।"

अवकाश के क्षणों मे जब सब अध्यापिकाए होस्टल मे बैठी गप्पबाजी कर रही होती, कमला दत्त कहती, "तुम लोग इसकी और स्कूलों के साथ तुलना मत करो। जो पैसे लेकर पढाते है, पढाने-लिखाने के नाम पर जो लोग व्यवसाय करते हैं, उनकी बात अलग है। यहां पढ़ाने का उद्देश्य मनुष्यत्व सिखलाना है, पढाना तो साधन-मात्र है। हमारे सेक्रेटरी मुझसे यही बात कहते हैं। स्वामी विवेकानन्द के उपदेशों का मनन करके देखो, ब्रह्मचर्य ही स्त्री-पुरुषों का सबसे पहला धर्म है। आज तुम लोग हंस सकती हो, लेकिन जरा 'जोआन ऑफ आर्क' के बारे में सोचो, 'सिस्टर निवेदिता' के बारे में सोचकर देखो।"

कभी-कभी रात को सोने के पूर्व स्वामी विवेकानन्द के चित्र के सामने खड़ी-खड़ी काफी देर तक न जाने क्या सोचती रहती। कमला दत्त बिना मां-बाप की लड़की कमला—जो सारे जीवन सेक्रेटरी के प्रति कृतज्ञ है, उस बाघ-निमुन्दिपुर में पाना-पोखर के पास तो शायद वह अब तक मलेरिया से मर ही गई होती। बाप की याद नहीं आती। चेहरा देखने पर भी शायद उसे नहीं पहचान पाएगी। लोग-बाग कहते हैं कि वह फक्कड़ आदमी थे। जीवन-मृत्यु से मुक्त, सुख-दुःख, आनन्द-वेदना सब कुछ जीत चुके थे। लेकिन सेक्रेटरी कहते हैं, अपनी मुक्ति से क्या होगा ? स्वयं अपने लिए मुक्ति की कामना भी तो एक तरह की चरम स्वार्थपरता है।

बिस्तर पर लेटे-लेटे नींद आने से पहले कमला दत्त काफी समय तक सोचती रहती—एक दिन यह स्कूल और भी बड़ा होगा। इस होस्टल की छत पर खड़े होकर जिधर भी देखोगी, दिखलाई देंगी सिर्फ इमारतें,

ऊंची और भव्य। लड़कियों का वोर्डिंग, लड़कियों का स्कूल। लड़कियों को सिलाई सिखाने के लिए सैकड़ों मशीनें। कान में हर समय गूंजेगा घर्र-घर्र का शब्द। उत्तर दिशा में लड़कियों के लिए स्कूल का अपना अस्पताल होगा, पूर्व की ओर देखते ही नज़र आएगी—बगीचे के सामने लड़कियों की व्यायामशाला। पास में ही होगा विशाल पुस्तकालय, वाचनालय जहां ससार की सारी अच्छी किताबें ठसाठम भरी होंगी। इसके बाद दाहिने ओर घूमने पर दिखलाई देगा विज्ञान-कक्ष। केमिस्ट्री और फिजिक्स की बडी-बड़ी प्रयोगशालाएं, बायोलॉजी तथा जूलॉजी और बोटनी के यंत्र, म्यूजियम आदि-आदि। फिर बाईं ओर सीधे जाओ। लाल-लाल कंकरीट का रास्ता। दोनों ओर छाया करते झाऊ के लम्बे-लम्बे पेड़। थोड़ा चलने पर ही नजर आयेगा सभा-कक्ष। लम्बी-लम्बी और चौड़ी सीढ़ियां चढकर उसमें घुसते ही दिखलाई देंगे अन्दर चारों ओर टंगे बडे-बडे चित्र। सबसे पहले सिस्टर निवेदिता, फिर जोआन ऑफ आर्क, फिर दमयन्ती, लोपा-मुद्रा, गार्गी, मैत्रेयी, सावित्री और सीता से लेकर मैडम क्यूरी, सरोजनी नायडू—कोई भी बाकी नहीं रहेगा। बीच-बीच में अपने उपदेश देने आएंगे ससार के विभिन्न जगहों के नामी और विख्यात महापुरुष। कितने ही विश्वविद्यालयों के वाइस-चांसलर आएंगे। वे लोग कमला दत्त को वहां देखकर आश्चर्यचकित रह जाएंगे। पूछेंगे—'आपका ही नाम कमला दत्त है न? बड़ी ख्याति सुनी है आपकी।' और तभी पास खड़े राममोहन सेन जवाब देंगे—'सिस्टर निवेदिता के आदर्श पर ही मैंने इन्हें गढ़ा है।'

"ऊंचे आदर्श, उच्च विचार और महान उद्देश्य होने से एक दिन सफलता मिलती है।"

'कुछ शब्द और कुछ पुस्तकें ही तो शिक्षा नहीं है—असली शिक्षा है, मानसिक शक्तियों का विकास।'

उसी शिक्षा को आदर्श मानकर ज्ञान और मनन के सहारे कमला दत्त आगे बढ़ी है, एक न एक दिन तो सिद्धि मिलेगी ही। लड़कियां कमला दत्त से जितना डरती हैं, उतनी ही श्रद्धा भी करती हैं। मैदान में खेलते-खेलते अगर किसी की नजर कमला पर पड़ जाए, तो सब एकदम

खामोश हो जाएंगी, " अरे देख, बडी दीदी आ रही है !"

लेकिन बड़ी दीदी कुछ भी नही कहती, डाटती भी नही, सिर्फ सिर पर हाथ फेरती है और आगे बढ़ जाती है। जाते-जाते कभी कहती है, "वाह ! रुक क्यों गईं ? तुम लोग खेलो न, लेकिन पढ़ाई-लिखाई ठीक चल रही है न?" या किसी लड़की के चिबुक पर हाथ रखकर स्नेह से पूछती, "तुम किस क्लास मे पढती हो ?"

लड़की डर से सिटपिटा जाती, फिर अपना नाम और क्लास बतलाती।

बड़ी दीदीमनि कहती, "वाह, नाम तो बड़ा अच्छा है ! अच्छा, जरा कहो तो, आत्मोत्सर्ग।"

लड़की के ठीक-ठीक बतला देने पर कहती, "ठीक ! बड़े होने पर आत्मोत्सर्ग कर पाओगी न बेटी ? दूसरों के लिए बड़ा काम करना जिससे दस आदमियों का भला हो।"

"बेटी तुम्हारा क्या नाम है ?"

"सुमिता।"

"वाह ! लेकिन तुम अपने नाम का मतलब जानती हो ? तुम सभी की मित्र हो, तुम किसीसे झगडा नही करोगी, किसी की उन्नति पर ईर्ष्या नही करोगी—तभी तुम्हारे माता-पिता का रखा नाम सार्थक होगा। समझी ?"

हर रोज स्कूल शुरू होने पर कमला दत्त सारे स्कूल का चक्कर लगाने निकलती। किस कक्षा मे लड़कियां शोर-गुल कर रही हैं, अथवा अध्यापिका ठीक मे नही पढ़ा रही हैं। सब देखकर फिर आकर बैठती अपने कक्ष मे। विशाल कक्ष, कमरे के बीचोबीच सिस्टर निवेदिता का एक चित्र यहा भी टंगा था। सेक्रेटेरिएट टेबल पर बैठकर कुछ देर चिट्ठी-पत्री और फाइलों में समय बिताना पड़ता। छात्राओं के अभिभावक आते। फीशिप की दरख्वास्तें। चार महीने का वेतन बाकी पड़ा है। प्रकाशक आते, जो स्कूल में अपनी किताबें लगा लेने का अनुरोध करते। सभी का दावा, सभी का अनुरोध, सभी के साथ नम्र व्यवहार करना, सभी की बातें शान्ति से सुननी होती।

सभी एक-एक कर कमला दत्त को नमस्कार करके चले जाते। सभी उसके मीठे व्यवहार से खुश। चारों ओर कमला दत्त और कमला दत्त। लोग-बाग कहते, "क्या व्यवहार है! अभी भी ससार से अच्छे आदमी एकदम खत्म नहीं हुए हैं, नहीं तो दुनिया आखिर चलेगी कैसे भाई?"

अभिभावक कहते, "आपके पास अपनी लड़किया भेजकर हम लोग निश्चिन्त है, इसीलिए तो लड़कियों को इसी स्कूल मे पढा रहे हैं। नही तो *क्या लड़कियों के और स्कूल नही—पास भी पढते है, फीस भी कम* है, लेकिन···"

सुकुमारी उस समय बडानगर के ललिता स्मृति बालिका विद्यालय मे नौकरी करती थी। जगह उसे पसन्द भी थी। कलकत्ते के पास ही थी और आदिनाथ के साथ भेंट भी जल्दी-जल्दी होती थी। तनख्वाह भी कोई कम नहो थी—पैसठ रुपये, महगाई भत्ता ऊपर से, लेकिन प्रधानाध्यापिका के साथ नही बनी। बड़ी घमंडी औरत थी। किसी को कुछ नही समझती थी। तीन दिन नागा करने से एक दिन की तनख्वाह कट जाती।

कहती, "जरा-सी छूट मिलते ही आप लोग सिर पर चढ़ जाती हैं।"

सुकुमारी या अन्य अध्यापिका कहती, "बुखार आया था—कहे तो डॉक्टर का सर्टिफिकेट ला दू?"

मगर वह किसी की भी सुनने-मानने वाली न थी।

उस दिन आदिनाथ से मिलते ही सुकुमारी ने कहा, "तुम कोई दूसरा स्कूल देखो न, यहा अब और अच्छा नही लगता।"

हुगली के इस स्कूल की खबर आदिनाथ ने ही दी थी। अखबार मे विज्ञापन निकला था। उसी को देखकर आदिनाथ ने एक दरख्वास्त दे दी थी।

सुकुमारी के और था ही कौन? मामा और ममेरे भाई। लेकिन बुआ की लडकी के बारे में सोचने का उन लोगों के पास समय नही था। सुकुमारी के रिश्ते की नाव मे कही एक बडा-सा छेद हो गया था, जिस पर किसी की नजर नही पड़ी। नजर पड़ी थी सिर्फ आदिनाथ की।

आदिनाथ ने ही एक दिन चुपके से उस दरार का पता लगाया। इसके बाद उसी दरार से धीरे-धीरे सुकुमारी के जीवन में प्रवेश कर एक दिन अचानक सर्वेसर्वा हो बैठा। सुकुमारी को कपड़े खरीदने है, साथ मे आदिनाथ जाएगा। सुकुमारी के लिए नौकरी दरख्वास्त, छुट्टियो का प्रार्थना-पत्र, उसकी बीमारी के समय डॉक्टर के यहा चक्कर लगाना, सुकुमारी के लिए स्नो, क्रीम, पाउडर खरीदना—सभी कुछ आदिनाथ का काम हो गया।

नये स्कूल मे नौकरी की दरख्वास्त पहले ही भेजी जा चुकी थी। इंटरव्यू के दिन आदिनाथ ही साथ आया। इससे पहले दोनो मे से कोई भी बैंडिल स्टेशन नही आया था—हुगली गर्ल्स हाई स्कूल। सुबह साढ़े नौ बजे खा-पीकर दोनो रवाना हुए थे।

सुकुमारी ने पूछा, "तुम क्या कभी पहले भी इस ओर आए हो ?"

"मुझे इस ओर आने की कभी जरूरत ही नही पडी। तुम आई हो क्या ?" आदिनाथ ने पूछा।

दोनों ही नये, लेकिन स्कूल नामी था, इसलिए कोई विशेष तकलीफ नहीं हुई। तीन-चार गाड़ीवान पीपल के पेड के नीचे सवारियों की राह देखते खडे थे।

इन दोनो को देखकर एक साईस ने आवाज दी, "आइए बाबू, अरे माईजी, इधर, एकदम नई गाडी है, हवा की तरह जाएगी···"

आदिनाथ ने कहा, "मैं वेटिंगरूम मे हूं, तुम हो आओ।"

आखिर मे सुकुमारी अकेली ही गई। आदिनाथ को आज भी याद है, एक के बाद एक न जाने कितनी सिगरेटों का उद्धार करके वह उस दुपहर को छटपटाया था, लेकिन सुकुमारी का अभी भी कोई पता नही था। बीच-बीच में एक-आध ट्रेन आती तो थोड़ी हलचल होती। ट्रेन के जाते ही सब शान्त। पान-बीडी और चाय वाले थोड़ी देर चीखकर फिर ऊंघने लगते। प्लेटफॉर्म नम्बर दो के उस पार केवल जंगल ही जंगल नजर आ रहा था। जगल की हरियाली देखकर आखें फटी रह जाती थीं। काठ की एक बेंच पर बैठे-बैठे क्लान्ति से प्राय सो ही गया था कि सुकुमारी हसती-हसती आई।

आदिनाथ ने पूछा, "बड़ी खुश नजर आ रही हो, नौकरी मिल गई क्या ?"

सुकुमारी ने कहा, "मैं अगर नौकरी न भी करना चाहूं तो भी वे लोग मुझे नहीं छोड़ रहे थे।"

"मतलब ?"

"मतलब और क्या—एपॉइंटमेंट मेरा ही हुआ, और किसी का भी नहीं। वे लोग तो मुझे छोड़ ही नहीं रहे थे। कहते थे—'काफी दूर से आई हैं, खा-पीकर जाइएगा।"

"हूं, तब क्या तुम खा-पीकर आई हो ?' "

"वाह, तुम यहां बिना खाए-पीए पड़े हो और मैं खाकर आती ! मेरा मन तो यहीं लगा था।"

"उसमें क्या है, खाकर ही आती न !' "

"यह देखो, गुस्सा हो गए न ? मैंने क्या जानकर देर की है ? इटरव्यू जब खत्म हो गया, आते समय कहने गई, लेकिन छोड़ा नहीं। कहने लगे—'जरा रुकिए, यहीं खा-पीकर जाइएगा।' बड़ी मुश्किल से यह कह कर पीछा छुड़ाया कि मेरे साथ में कोई और भी है।"

"उन लोगों ने पूछा नहीं कि कौन है ?"

"पूछने से क्या है, मैं बतलाऊंगी ही क्यों ? मैंने बात एकदम टाल दी। जो भी हो, वहां हेड मिस्ट्रेस बड़ी अच्छी है—कितना मीठा स्वभाव, बिलकुल मां की तरह। सभी उनसे खुश हैं। स्कूल की सभी अध्यापिकाएं उनकी प्रशंसा कर रही थीं। उन लोगों ने कहा—"यहां पर आपको जरा भी तकलीफ नहीं होगी, हमारे सेक्रेटरी ने व्यवसाय के लिए तो स्कूल खोला नहीं है। हम लोगों की इच्छा है कि एक दिन सारे बंगाल, बंगाल ही क्यों, सारे भारत में, इस बैंडिल में ही सिर्फ लड़कियों की एक यूनिवर्सिटी हो। सामने की वह जमीन देख रही हैं—चारों ओर जितनी भी जमीन है, सब स्कूल की सम्पत्ति है। सेक्रेटरी ने स्कूल के ही नाम कर दी हैं।"

कमला दत्त ने सुकुमारी को बतलाया, "वह देखिए, उस स्थान पर हम लोगों का हॉल बनेगा। जगह-जगह से प्रसिद्ध व्यक्ति आकर वहां भाषण देंगे। अन्दर बड़े-बड़े तैल-चित्र लगाए जाएंगे—केवल महिलाओं

के। ससार की जितनी भी महान महिलाए हैं—दमयन्ती, लोपामुद्रा, गार्गी, मैत्रेयी, फ्लोरेंस नाइटिंगेल, सीता, सावित्री, मैडम क्यूरी, सिस्टर निवेदिता, सरोजनी नायडू—सभी के। और उस ओर जो खाली जगह दिखाई दे रही है, वही होगी केमिस्ट्री, फिजिक्स और जूलॉजी की लेबोरेटरियां और म्यूजियम। आप लोग आइए। सेक्रेटरी का कहना है—कुछ चुनी किताबें पढ़ना या कुछ शब्दो को सीख लेना ही शिक्षा नही है। मानव के मन-मस्तिष्क की सारी शक्तियों के विकास का नाम ही वास्तविक शिक्षा है। हम लोगो के सेक्रेटरी को देखा न लड़कियो की शिक्षा के लिए उन्होने क्या नही किया है! यह उन्ही की चेप्टा थी कि एक छोटी-सी टीन-शेड से यह स्कूल आज इतना बढा हुआ है। इसीलिए चारो ओर इतनी ख्याति है।"

सुकुमारी ने कहा, "लेकिन सभी तो कहते है कि आपकी चेप्टा से ही हुआ है?"

"मेरी बात छोड़ो भाई! मैं जानती ही क्या हूं, पढाई-लिखाई भी कितनी की है? माता-पिता तो थे नही—दूसरे के घर रहकर···अच्छा, आपके घर मे कौन-कौन है?"

"मेरे भी मा-बाप कोई नही है। दूर रिश्ते के एक मामा हैं।"

"तब तो आपके साथ मेरी खूब पटेगी। आप भी मालूम होता है, अधिक विलासिता नही पसन्द करती।"

सुकुमारी ने कहा, "विलासिता करने लायक पैसा ही कहा है?"

"क्यो, शायद पैसा होने पर विलासिता करती! अगर अच्छी तरह से सोचकर देखें, विलासिता में जरा भी सुख नहीं है। अगर होता, तो इतने लोग, जिनका नाम लिया—यही फ्लोरेंस नाइटिंगेल, मैडम क्यूरी, जोआन ऑफ आर्क और सिस्टर निवेदिता—सब सेवा का पथ नही चुनती। इसके अलावा मन-माफिक काम तो मूर्ख भी कर लेते हैं। उसमें बहादुरी ही क्या है? लेकिन सब कामों के माफिक अपने मन को बना लेना ही बड़ी बात है।"

और दूसरी अध्यापिकाओ के साथ भी बातचीत हुई। सभी खूब खुश थी। अधिकाशतः सुकुमारी की तरह ही दूर से आई हुई थी। चाल-चलन,

पोशाक, बातचीत सब सादा और आडम्बरहीन।

एक ने कहा, "आप चली आइए न, यहां हॉस्टल-खर्च फ्री है, खाने के लिए सिर्फ मेसिंग चार्ज देना होगा। वह भी एकदम नाममात्र को, किसी महीने चौदह, किसी महीने पन्द्रह। यहां सिनेमा-थियेटर की तो खैर बात ही नहीं, रास्ते में घूमना भी मना है। इसीसे अगर कहीं जाना है तो गाड़ी का खर्च है। आइए न आप। आपकी मां नहीं हैं, कमलाजी आपको मां की तरह देखेंगी।"

इसके बाद फिर एक दिन सुकुमारी आदिनाथ को साथ लेकर आई। दरख्वास्त भी एक दिन आदिनाथ ने लिखी। इंटरव्यू के लिए भी आदिनाथ को साथ लाई। इस बार भी सूटकेस-बिस्तर वगैरह सामान सब आदिनाथ ही पहुंचा गया। सुकुमारी ने पहुंचकर कहा, "इतनी दूर की नौकरी, बराबर आओगे न?"

आदिनाथ ने कहा, "आऊंगा नहीं तो क्या!"

"मुंह से ही कह रहे हो, मुझे यहां पहुंचाकर तुम्हें तो छुट्टी हुई। तुमसे दूर रहकर मुझे तो डर लग रहा है। सचमुच आओगे न?"

आदिनाथ ने कहा, "जरूर आऊंगा। हां पहले की तरह जल्दी-जल्दी तो आ नहीं पाऊंगा। महीने में दो-तीन बार आने की कोशिश करूंगा।"

"नहीं, हर शनिवार को आना होगा।"

"हर शनिवार को यदि ना आ पाऊं? कितना काम बाकी पड़ा है।"

"अगर शनिवार के शनिवार नहीं आओगे, तो मैं नौकरी छोड़ दूंगी, तुम्हें कहे देती हूं। फिर मामा के यहां जाकर चूल्हा फूंकूंगी—वही शायद अच्छा लगेगा।"

आदिनाथ ने कहा, "मैं फिर क्या कहता! उसी पीपल के पेड़ के नीचे से एक गाड़ी ठीक कर सुकुमारी को बैठा दिया और हर शनिवार को आने का वचन दिया। वचन देकर रखना ही होगा, इस बात पर मेरा जरा भी विश्वास नहीं है। यह बदनामी मेरे घनिष्ट से घनिष्ट मित्र भी मेरे बारे में नहीं करेंगे। इसके अलावा सुकुमारी के प्रति मेरा जितना आकर्षण है, उतना ही रमा, रमला, सुनपा, सुप्रीति पर भी है। सुकुमारी

के लिए जितना समय खर्च करूगा, उतना और सभीपर भी करना होगा। सभीके प्रति मेरा आकर्षण सामान था। किसी पर भी पक्षपात जैसी कोई बात नही थी। सभी समझती थी कि मैं सिर्फ उसका ही हूं। उसीके लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को हर समय तैयार रहूगा। लेकिन आज कहने मे दोष नही है कि उस दिन 'हुगली गर्ल्स हाई स्कूल' मे सुकुमारी को पहुचाकर मैं जरा भी विचलित नही हुआ। वास्तव मे जरा समय मिलेगा, थोडी मुक्ति मिलेगी—सोचकर जरा खुशी ही हुई थी।

लेकिन सुकुमारी के दिन वहा अच्छे ही कट रहे थे। शुरू मे तो प्राय रोज ही चिट्ठी आती—नये स्कूल की बातें, नौकरी का विवरण। चिट्ठी लिखने मे मुझे जितना आलस आता, सुकुमारी का हाल ठीक उलटा ही था। चिट्ठी मे पचानवे प्रतिशत बात होती कमला दत्त की। वैसी औरत मैंने नही देखी। कमला दी ने क्या कहा, कमला दी ने क्या करनें को मना किया है, कमला दी को क्या अच्छा लगता है, क्या सोचती है, कमला दी का स्वप्न क्या है—यही सब वह लिखती।

वह लिखती—और भी तो कितनी जगह नौकरी की, लेकिन ऐसी हेड मिस्ट्रेस कही नही देखी। हम लोगों को कुछ भी नही सोचना होता। सब कुछ कमला दी के ऊपर छोडकर निश्चिन्त रहतीं हैं। मां को देखा नही, बहन या भाई भी नहीं हैं, सिर्फ तुम्हे छोड़कर जीवन में किसी का प्यार भी नही मिला। कमला दी ने जैसे सब कमियों को पूरा कर दिया है। तुम शनिवार को आओ। कमला दी से परिचय कराऊगी। तुम्हें भी पसन्द आएगी। ऐसी औरतें सच मे कम ही होती है।—हर चिट्ठी मे पचमुख से कमला दी की प्रशसा।

लेकिन पहले कुछ शनिवारो को कई कारणों से आदिनाथ नही जा पाया। कॉलेज छोडकर व्यापार अभी शुरु ही किया। इस व्यवसाय के ऊपर ही आदिनाथ का भविष्य निर्भर था। इसके अलावा और सब तो थी ही, सिर्फ सुकुमारी ही तो नही थी। फिर सुकुमारी चिट्ठी तो नियमित लिख ही रही थी, अतः बैंडिल जाने की योजना कुछ दिनो के लिए स्थगित कर दी गई।

कमला दत्त ने सुकुमारी को पहले ही दिन बतला दिया, "देखो भाई, हमारे होस्टल मे जरा कड़ाई है।"

"उससे मुझे कोई आपत्ति नही।" सुकुमारी ने कहा।

"हा भई, यह-वह अध्यापिका और छात्राओं से मिलने हर समय चले आ रहे है—वह नही चलेगा। सेक्रेटरी को यह सब पसन्द नही है। कहते हैं—'लडकियो का स्कूल है, इसीलिए जरा सावधान होकर चलना होगा।' हा, तुम्हारे अभिभावक के रूप मे किसका नाम लिखू? ज्यादा लोगों का नाम मत देना भाई, उससे काम का बड़ा नुकसान होता है। इसके अलावा फिर सभी इसका-उसका नाम देंगे, किसी पर भी अनुशासन नही रहेगा।"

सुकुमारी ने कहा, "अधिक आदमियो के नाम मैं पाऊगी कहा कमला दी! मैं भी तो माता-पिताहीन लड़की हू, नही तो क्यो घर छोड़कर नौकरी करने आती!"

कमला दत्त जैसे जरा क्षुब्ध हो उठी। बोली, "इसे नौकरी क्यों कह रही हो सुकुमारी? गृहस्थी सभी बसाते हैं। गृहस्थी मे क्या सुख है? मैंने देखा है, स्वय गृहस्थी नही बसाई है, लेकिन गृहस्थी में मा को सारी जिन्दगी किस तरह कष्ट उठाने पड़े, वह देखा है। मान लो कि यह आश्रम है, सभी यहा सेवा करने आए हैं, छात्राओ की सेवा करें, अपने मनुष्य-जीवन पाने का अधिक से अधिक लाभ उठाए।"

पिछले दिन सेक्रेटरी के पास सुनी बातों को कमला दी फटा-फट बोल जाती। सभी अध्यापिकाए कह रही थी कि युद्ध के कारण सभी चीज़ों के दाम बढ गए हैं। पांच रुपये महगाई भत्ता बढा देने से उन लोगों का काफी लाभ होगा। छात्राओं की फीस तो हम लोगों ने बढा दी है।

सेक्रेटरी राममोहन सेन के सिरहाने स्वामी विवेकानन्द की गेरुआ पगड़ी पहनने तस्वीर है। क्या तेज से दमदमाता चेहरा! नये युग का नया अवतार! कमला दत्त ने पलक उठाकर सेक्रेटरी के चेहरे की ओर देखा। लगा, जैसे सेक्रेटरी की दोनों आखें भी उतनी ही तेजोमय, उतनी ही दीप्तिमय और करुणा से भरी हैं। उस चेहरे के पास जैसे पांच रुपये महगाई भत्ते की अर्जी लाकर महान अपराध किया। मन में हुआ कि वह

इस छोटी-सी बात के लिए इस महान आत्मा का ध्यान भंग करने क्यों आई ! उसकी इतने दिन की शिक्षा और उपदेश जैसे बेकार गए।

सेक्रेटरी ने पूछा, "तुमने क्या कहा कमला ?"

"मैंने उन लोगों से कुछ नहीं कहा, सिर्फ इतना ही कहा है कि सेक्रेटरी के सामने मैं दरख्वास्त पेश कर दूंगी। फिर वह जो भी करें।"

राममोहन सेन जरा मुस्कराए, बोले, "मैं भी कुछ नहीं कर पाऊंगा। स्कूल सिर्फ मेरा ही नहीं है। मैं सेक्रेटरी भले ही हूं, लेकिन यह प्रतिष्ठान तो सभी का, सारे जन-साधारण का है। इसी की एक कमेटी भी है। प्रतिष्ठान का अच्छा-बुरा, उन्नति-अवनति हर विषय की जिम्मेदारी उसकी है; लेकिन तुम भी तो कुछ कह सकती थी ?" कहकर सेक्रेटरी जरा रुके। फिर बोले, "कह नहीं सकती थी ?"

कमला दत्त की समझ में जैसे कुछ नहीं आया हो। सिर झुकाए बैठी रही।

सेक्रेटरी ने कहा, "बहुत कुछ कह सकती थी। कह सकती थी कि यह प्रतिष्ठान एक आश्रम की तरह है। यहां हम सभी सेवा करने आए हैं, छात्राओं की सेवा और अपने मनुष्यत्व-लाभ की दुस्साध्य साधना करने। कह सकती थी कि इस मानव-संसार में हम लोगों ने अक्षय सम्पदा का अधिकार लेकर जन्म ग्रहण किया है। परमात्मा की इतनी बड़ी देन का हम लोगों को उपहास नहीं करना चाहिए। इस वरदान का, मानवता की सेवा न कर, गृहस्थी और नोन, तेल, लकड़ी में दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। संसार के और लोग जो चाहे, करें; जो सोचना चाहें, सोचें; लेकिन हम यहां शान्ति और आराम के लिए नहीं आए हैं। हमने कल्याण की चाहना की है। और कल्याण चाहकर दुःख-कष्ट से घबड़ाना नहीं चलेगा। कल्याण का तो जन्म ही दुःख से है उसका मुकुट···ये सब बातें क्या तुम कह नहीं सकती थी ?"

कमला ये सब बातें सुनते-सुनते जैसे खो गई थी। फिर अचानक उसे लगा, जैसे एक ही दिन में उसने बहुत कुछ सीख लिया हो।

सेक्रेटरी ने कहा, "अरे, तुम तो उठ रही हो ?"

"हां, मैं अब चलूंगी, उन लोगों को ये सब बातें बतलाऊंगी।"

और वह चली आई—इतना ही काफी था।

उस दिन प्रथम कक्षा की छात्राओं को पढ़ाते-पढ़ाते कमला दत्त ने कहा, "तुम लोगों की तरह मैं भी एक दिन छोटी थी। मैंने भी तुम लोगों की इसी संस्था में सब कुछ सीखा है, पास किया है। हमारी यह सस्था मात्र एक स्कूल नही है, यह है एक आश्रम, जहा हम सब सेवा करने आए हैं, दूसरों की भलाई करने आए हैं। अपने मानव-जीवन का अच्छे से अच्छा उपयोग करेंगे। तुम लोग अच्छी तरह से सोच देखो—मनुष्य विधाता की श्रेष्ठ सृष्टि है। हम लोगों के अधिकार, हम लोगों की शक्ति असीम है। विधाता के वरदान को व्यर्थ नष्ट कर हमें उसका उपहास नहीं करना है। और लोग जो चाहें, करें; लेकिन यहा आकर हमको खाली नही बैठना है। कुछ करना है, जो कल्याणकारी हो, लेकिन कल्याण के साथ दुःख भी हो सकता है, जिसका हमें सामना करना है। यह सस्था छोड़कर अब तुम लोग कर्मभूमि मे उतरो, तो मेरी आज की बातों को याद करना।"

लड़कियां कहती, "बड़ी दीदी कितना अच्छा पढ़ाती हैं।"

"एम० ए०, बी० टी० कोई हसी-खेल नही है।"

महीने मे एक बार कमेटी की मीटिंग होती। मीटिंग सेक्रेटरी की कचहरी में ही होती, और सौ मेम्बर आते। प्रधानाध्यापिका कमला दत्त भी एक ओर चुपचाप जैसे साक्षी देती बैठी रहती।

इस प्रकार की बैठकों में साधारणतः सेक्रेटरी राममोहन सेन ही सब कुछ होते थे। जो कुछ भी करना होता, वही करते—प्रस्ताव पास कराना, वार्षिक व्यय पास कराना अथवा वार्षिक आय-व्यय की रिपोर्ट देना। इसके अलावा संस्था के बारे में अगर कोई शिकायत आदि होती तो वह भी।

यह कहते, "आप लोगों को यह तो मालूम ही है कि हम लोगों का यह स्कूल मात्र लड़कियों का स्कूल ही नहीं है, यह तो एक बड़े प्रतिष्ठान का एक विभाग-मात्र है।"

सरल बाबू ब्राह्म थे। लम्बी दाढी और मूछों से भरा चेहरा। अलवान लपेटे एक ओर बैठे। बोले, "सो तो है ही।"

सेक्रेटरी ने कहा, "अपने हुगली जिले में शिक्षा का जो बीज हम लोगों ने रोपण किया है, आशा है, वह एक दिन यूनिवर्सिटी के रूप में फल-फूलकर बड़ा होगा। लड़ाई के हंगामे से बचने के लिए बहुत-से लोग यहां आ बसे हैं। छात्राओं की संख्या भी पहले से दुगुनी हो गई है। स्थानाभाव को पूरा करने के लिए स्कूल की इमारत को बढ़ाना होगा। अतएव मेरा प्रस्ताव है कि छात्राओं की फीस में कुछ बढ़ोतरी की जाए—विशेषकर जबकि सारी चीजों की कीमत तेजी से बढ़ रही है, हमें यह करना ही होगा।"

ललित बाबू खुद व्यापारी आदमी थे। बोले, "अरे और क्या, दाम तो बढ़ ही गए हैं। कल सुबह ही बाईस रुपये के भाव से तीन सौ ग्रुस माल खरीदा है और शाम को ही, क्या बताऊं मोशाई, कुछ कहना नहीं, सुनना नहीं, दाम एकदम बारह आना बढ़ गए। पहले से पता होता तो और ज्यादा खरीद लेता।"

सरल बाबू ने सरलता दिखाई, "शिक्षा का दाम बढ़ाना क्या अच्छा होगा? एक तो वैसे ही गरीब गृहस्थ···आपका क्या मत है कमलादेवी?"

लेकिन जवाब दिया सेक्रेटरी ने, "शिक्षा के सम्बन्ध में जब बात उठी है तो उस बारे में भी मुझे कुछ कहना है। आपको मालूम ही है कि स्त्री-शिक्षा के लिए यहां की महान विभूतियों ने क्या किया था। विशेषकर इस हुगली जिले में कितने विरोध के बावजूद आज स्त्री-शिक्षा का प्रचार हुआ है—यह तो आप लोगों के लिए अनजानी बात नहीं है। इसका सारा श्रेय उन महापुरुषों को ही है।"

सरल बाबू ने शरीर को झटका देकर कहा, "हां, राममोहन राय को हम लोग कहीं भूल न जाएं।"

सेक्रेटरी बोले, "उस समय जबकि क्रिश्चियन मिशनरियों की चेष्टा से हिन्दू धर्म प्रायः लोप हो रहा था, यही राममोहन राय आए थे तब हम लोगों का उद्धार करने।"

सरल बाबू ने सीधे बैठते हुए कहा, "उसी के साथ ब्रह्मानन्द केशवचन्द्र के बारे में भी तो कुछ कहिए।"

तारक बाबू गले और सिर में मफलर लपेटे अभी तक चुपचाप बैठे

थे। कुछ कहना उनका स्वभाव नहीं था, लेकिन और नहीं रुक पाए।

"क्यों, विद्यासागर क्या ऐसे ही आ गए थे ? विद्यासागर क्या बाढ़ के पानी के साथ आ गए थे ?"

सरल बाबू जल्दी उत्तजित नही होते। इस बार भी नहीं हुए, बोले "विद्यासागर महाशय ने जो कुछ भी किया हो, शुरू मे तो थे राममोहन राय और फिर ब्रह्मानन्द केशवचन्द्र। उनके उपदेश पढ़े हैं—अहा, कितने महापुरुष थे वे लोग !"

तारक बाबू बोले, "आप सीता-वनवास पढ़ें,उससे भी अच्छा लगेगा। शिक्षा-शिक्षा तो कर रहे हैं, विद्यासागर महाशय यदि किताबें नही लिखते तो लडकिया पढती क्या ?"

तभी सेक्रेटरी ने रोक दिया। कहने लगे, "अगर यही बात है तो इसी हुगली ज़िले में सन् १८०० मे बगाल में सबसे पहले श्रीरामपुर में महिला स्कूल खोलने वाली थी एक विदेशी महिला, जिनका नाम था मैडम हैना मार्शमैन ! वास्तव मे बगाल का सर्वप्रथम महिला स्कूल वही था। किसी एक के करने से कोई महान काम नही होता। हुआ भी नही है—लेकिन इसके ये मतलब नही हैं कि कोई किसी से छोटा है। अपने इस स्कूल को ही लीजिए, क्या मुझ अकेले की चेष्टा से यह बन पाता ? आप सभी लोगों की सहायता से ही तो आज इस स्थिति मे आ पाया है।"

ललित बाबू ने कहा, "यह कैसे कहा जा सकता है ? अपने इस स्कूल में कम से कम दो लाख रुपया तो लगाया ही है। कौन करता है आजकल—व्यापार मे दो लाख लगाने से डबल न सही, सेवेण्टी परसेण्ट तो···"

सेक्रेटरी बोले, "लाभ-नुकसान की बात सोचकर मैंने इस स्कूल की नींव नही डाली थी। यह प्रसंग आज की बैठक मे असंगत है। आज मैं एक और ही विषय आप लोगों के सामने रखना चाहता हूं। स्कूल की कुछ अध्यापिकाओं ने एक दरख्वास्त मेरे पास भेजी है—तनख्वाह बढ़ाने के लिए। मैं दरख्वास्त पढ़कर सुनाता हूं, सुनिए—सुनकर आप लोगों का जो मत हो, कहें।"

बोर्डिंग में सभी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी।

मनीषा सेन ने कहा, "महीना अगर न भी बढ़े तो क्या करेंगे भाई, नौकरी तो नहीं छोड़ पाऊंगी!"

माधुरी ने कहा, "क्यों, आसनसोल गर्ल्स स्कूल में जाते ही अस्सी रुपये मिलेंगे।"

"विज्ञापन मैंने भी देखा है। गणित, हिस्ट्री, अंग्रेजी सभी कुछ पढ़ाना होगा।—मेहनत नहीं है क्या! इसके अलावा कोचिंग क्लास ऊपर से है।" इला दत्त ने कहा।

"और दूर कितना!" मनीषा सेन ने कहा, "आसनसोल क्या यहीं है?"

"अरे, बैंडिल आए हैं तो क्या आसनसोल नहीं जा पाएंगे?"

माधुरी ने कहा, "जब घर ही छोड़ा है तो जहां ज्यादा पैसे मिलेंगे वहीं जाएंगे?"

मनीषा सेन ने कहा, "लेकिन कमला दी की सी हेड मिस्ट्रेस कहां पाओगी?"

इला दत्त बोली, "इसके अलावा कुछ दिन बाद ही तो हमारा स्कूल कॉलेज हो रहा है। तब तो प्रोफेसर भी हो सकते हैं!"

"हां, कॉलेज में यूनिवर्सिटी!" माधुरी ने जलकर कहा।

मनीषा सेन ने कहा, "मैं कह रही हूं न, यूनिवर्सिटी न हो, लेकिन कॉलेज तो होगा ही—तुम देख लेना।"

सुकुमारी उस समय नई-नई आई थी। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आया।

सबके चले जाने के बाद सुकुमारी ने पूछा, "अच्छा मनीषा दी, आपने कहा कि कॉलेज होगा, ऐसा क्यों?"

"अरे, सब समझ में आएगा। कुछ दिन रुको, खुद मालूम हो जायेगा कि क्यों होगा।"

"कहिए न मनीषा दी, क्यों होगा?"

"तो सुनो," मनीषा दी ने कहा, "वह कमला दी है न, उन्हीं के लिए यह स्कूल प्राइमरी से जूनियर हुआ, फिर एक दिन जूनियर स्कूल से

हाई स्कूल हुआ, अब हाई स्कूल को कॉलिज करने की बात चल रही है। और कमला दी अगर यह स्कूल छोड़ दें, तो सेक्रेटरी इस स्कूल को बन्द कर देंगे। उन्ही के लिए तो यह स्कूल है। हम लोगों की नौकरी और जो कुछ भी देख रही हो—सब कुछ। वही ध्येय है, हम लोग तो मात्र निमित्त हैं।"

"लेकिन स्कूल क्यों बन्द कर देंगे ?"

पहले तो सुकुमारी काफी आश्चर्यचकित हो गई—ध्येय, निमित्त केवल कमला दी ! लेकिन और सुनने को समय नहीं था। मीटिंग समाप्त कर कमला दी आ गई थी।

उस दिन तनख्वाह किसी की भी नहीं बढ़ी। जितने साल सुकुमारी ने शादी से पहले वहां नौकरी की, उतने दिन कहने लायक तनख्वाह कभी नहीं बढ़ी। वेतन-वृद्धि के प्रश्न पर हमेशा ही व्यय की कमी का सवाल आ खड़ा होता।

कमला दी कहती, "मान लो न कि हम लोग सब सेवा करने आए हैं। देशवासियों की सेवा, अपने मनुष्य-जीवन का अच्छे से अच्छा उपयोग करने यहां आए हैं—ऐसा नहीं सोच सकती क्या ?"

मीटिंग से आकर कमला दत्त ने उस दिन कक्षा में जाकर लड़कियों को भी उपदेश दिया। कहा, "एक दिन इसी बंगाल में राजा राममोहन राय ने फिर से स्त्री-शिक्षा का बीजारोपण किया। बाद में कुछ विदेशी मिशनरियों, केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि ने इसे आगे बढ़ाया, लेकिन सुनकर शायद तुम लोगों को आश्चर्य होगा, आज से प्रायः डेढ़ सौ वर्ष पहले बंगाल के इसी हुगली जिले के श्रीरामपुर में सबसे पहला बालिका विद्यालय खुला। यह बात सन् १८०० की है। उस विद्यालय की स्थापना की एक विदेशी महिला ने। उनका नाम तुम लोग याद रखो। वह थीं सुविख्यात पादरी मार्शमैन साहब की पत्नी श्रीमती हैना मार्शमैन। इसी हुगली जिले के बैंडिल शहर में एक और प्रथम महिला विद्यालय की स्थापना करने वाले का नाम एक दिन प्रातःस्मरणीय रहेगा। इसके साथ यह भी याद रखो—आज जो तुम लोगों की फीस में

आना बढ़ा है, आशा है, उस गौरवमय दिन की याद कर इसके लिए तुम लोगो के मन में क्षोभ नहीं होगा। अपने माता-पिता को भी यह बात अच्छी तरह से समझा देना, जिससे वे लोग भी हम लोगों के महान उद्देश्य में सहायता करें।"

ठीक उसी समय एक घटना हो गई। आदिनाथ ने कहा, "उसी बीच एक दिन शनिवार को सुकुमारी की चिट्ठी पाकर मैं हुगली गर्ल्स हाई स्कूल, बैंडिल की प्रधानाचार्या कमला दत्त के दफ्तर मे जाकर हाजिर हुआ।"

इससे पहले बैंडिल स्टेशन पर आदिनाथ सिर्फ दो बार ही आया था। पहले तो सुकुमारी को लेकर इंटरव्यू के लिए, फिर नौकरी करने पर सुकुमारी को पहुंचाने।

सुकुमारी ने लिखा था—"बार-बार लिखने पर भी तुम नही आ रहे हो। अगर इस शनिवार को भी नही आओगे तो मैं नौकरी छोड़ दूंगी। मुझे यहां अकेले छोड़कर तुम मजे से घूमो, यह नही चलने का। जरूर आना, कहे देती हूं। स्टेशन से बाहर आकर आने-जाने के लिए एक घोड़ागाडी ठीक करना। मैं तुम्हारे साथ कलकत्ता घूमने जाऊंगी।"

उस दिन वाला गाड़ीवान शायद पहचान गया। धूप में स्टेशन के आसपास की सारी जगह जल रही थी। सिर्फ पीपल के पेड़ के नीचे जरा-सी छाया थी।

हुगली गर्ल्स हाई स्कूल को आदिनाथ उसी दिन पहली बार देखा था। दो-तीन दोमंजिली इमारतें। चारों ओर लताओं से ढकी चहार-दीवारी, लगभग जेल की चहारदीवारी के बराबर ऊंची। सामने लाल कंकरीट बिछा अन्दर जाने का रास्ता।

प्रधानाचार्या के कमरे में सूचना भिजवाते ही अन्दर से बुलाहट आई।

सुकुमारी की चिट्ठियो के कारण आदिनाथ कमला दत्त के बारे में काफी जानता था। दफ्तर में घुसते ही उसे लगा, जैसे कमला दत्त को उसने पहले भी देखा हो। वही विशाल सेक्रेटेरिएट टेबल। पास ही अलमारियों में किताबों का पहाड़। सामने की दीवाल पर सिस्टर

निवेदिता की काफी बड़ी तसवीर। साफ-सुथरा करीने से सजा कमरा। उसमे सरल-स्वस्थ, लेकिन गम्भीर चेहरे पर चश्मा लगाए कमला दत्त को दूर से ही पहचाना जा सकता था सकता था।

कमरे मे आदिनाथ के घुसने के साथ ही कमला दत्त ने सिर उठाकर देखा, पूछा, "आप ही का नाम शायद आदिनाथ मुकर्जी है ?"

"जी हां।" आदिनाथ ने जवाब दिया।

कमला दत्त ने सामने की कुरसी दिखाकर कहा, "बैठिए, सुकुमारी को अभी बुलाए देती हूं।"

आदिनाथ के बैठने पर कमला दत्त ने एक कागज पर न जाने क्या लिखकर अन्दर भेज दिया फिर बोली, "हमारे यहां छात्राओं अथवा अध्यापिकाओं के आने-जाने की काफी कड़ी व्यवस्था है।"

इस पर आदिनाथ ने कहा, "ठीक ही तो है, यही तो होना चाहिए।"

"हां, और इसमें," कमला दत्त ने कहा, "आप लोगों को भी सुविधा है और आप लोगों की स्वजन अध्यापिका या छात्रा, जो भी यहां रहें, उनको भी सुविधा रहती है। छोटी जगह है न, इसीलिए हमारे सेक्रेटरी इस विषय में खूब कड़े हैं।"

आदिनाथ और क्या कहता ! सिर्फ कहा, "यह तो है ही, आजकल जरा सख्त होकर ही चलना चाहिए। मेरी भी यही धारणा है।"

कमला दत्त ने इस प्रकार कहा, जैसे कैफियत दे रही हो, "हां लेकिन कुछ लोग यह सब पसन्द नहीं करते, इसीलिए कहा जाता है कि लड़कियों का स्कूल चलाना वास्तव में एक आफत है। जरा भी इधर-उधर होने से पचास बातें उठती हैं।"

सुकुमारी शायद तैयार ही थी, सिर्फ बुलाने की ही राह देख रही थी; लेकिन उतने ही से समय में कमला दत्त से काफी बातें हो गईं।

आदिनाथ ने पूछा, "इस बारे मे तो सुना है, आपके स्कूल का काफी नाम है।"

कमला दत्त के हाथ में कलम और सामने अधलिखी चिट्ठी पड़ी थी। इस बात के उत्तर में उसने उस चिट्ठी को फिर से लिखना शुरू कर दिया। जब सुकुमारी आई तो उसने देखा कि आदिनाथ चुपचाप बैठा है

और कमला दी चिट्ठी लिख रही है।

"अच्छा, तो कमला दी, मैं चलूं फिर···।"

कमला दत्त ने कहा, "अच्छा भई, लेकिन ज्यादा देर मत लगाना। मैं तुम्हारी राह देखूंगी।"

बाहर आकर दोनों गाड़ी में बैठे।

सुकुमारी ने कहा, "खिड़की बंद कर लो।"

"वाह दम घुटेगा।"

"नहीं, घुटने दो। हमारे स्कूल का यही नियम है। जरा ही सा तो रास्ता है, फिर ट्रेन में तो खुला मिलेगा ही। हां, तो तुमने कमला दी को देखा?"

"देखा।" आदिनाथ ने जवाब दिया।

"वह तो पता है कि देखा, लेकिन कैसी लगी?"

आदिनाथ उस दिन हंस पड़ा था। कहा, "अलंकार-शास्त्र के अनुसार तुम्हारी कमला दत्त शंखिनी की श्रेणी में आती है।"

"शंखिनी! वह क्या?"

"शास्त्रानुसार नारी के चार प्रकार होते हैं—पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और हस्तिनी, लेकिन तुम्हारी कमला दी को हस्तिनी नहीं कहूंगा, नहीं तो तुम नाराज हो जाओगी। शंखिनी ही ठीक रहेगा। कहा भी है—

दीघल श्रवन, दीघल नयन,
दीघल चरण, दीघल पाणि···"

इसके बाद जरा हंसकर उस दिन आदिनाथ ने कहा था, "ये सारे लक्षण दूर से ही मिल गए, लेकिन शंखिनी नारी के साथ···"

"हे भगवान!" सुकुमारी ने आश्चर्य से कहा, "इन्हीं लक्षणों से तुम किसी के बारे में सोचते हो क्या?"

आदिनाथ ने कहा, "लक्षण बिना मिलाए चल सकता है क्या? औरतों के चरित्र के बारे में शास्त्रों में लिखा है—'देवा ना जानन्ति कुतो मनुष्या!' लक्षण मिलाकर फिर भी जरा अदाज लग जाता है।"

"इतनी देर में तुमने तो चेहरा, कान, नाक, आंख हाथ-पैर सभी

देख लिए होंगे ? और क्या-क्या लक्षण देखे ?"

"और जो लक्षण हैं—उन्हें मिलाने के लिए और भी अच्छी जानकारी की आवश्यकता है। ऊपर ही ऊपर देखने में नहीं होगा। लेकिन वह कहा सम्भव है ?"

आज भी याद है, आदिनाथ की बात सुनकर सुकुमारी उस दिन खूब रोई थी।

"देखो, तुम और किसी के भी सम्बन्ध में जो कुछ चाहे कहो, कुछ भी नहीं कहूंगी, लेकिन कमला दी के सम्बन्ध में कृपया ऐसा न कहो। ऐसी औरतें बहुत कम होती हैं। मेरी मा नहीं हैं, लेकिन यहा आकर मैं उस अभाव को भूल गई हू। शिखा दी विधवा है, इसलिए कमला दी भी मछली नहीं खाती। चारों ओर इतने सिनेमा-बाइस्कोप हो रहे हैं, सभी तो जाते हैं, लेकिन कमला दी गई है कभी ! पान, सुपाड़ी, यहा तक कि लवंग भी नहीं खाती। मिल की साड़ी और फीते-बंधे जूते नहीं पहनती। हम सभी ने वेतन बढाने की अर्जी दी, लेकिन कमला दी पाच साल पहले जो वेतन पाती थी, आज भी उतना ही पाती हैं। कमला दी कहती हैं—'क्या होगा ज्यादा पैसा लेकर, मेरे तो कोई है नहीं, जिसको देना पड़े। इससे तो अच्छा है कि स्कूल-फंड में ही जमा हो। स्कूल की की आय बढ़ने में ही मुझे तो खुशी है।' "

: ४ :

लेकिन लौटते-लौटते रात के दस बज गए। काफी दिनों के बाद कलकत्ते जाना, अरसे बाद आदिनाथ का साथ। सिनेमा देखकर और खा-पीकर आने में जरा देरी होना स्वाभाविक ही था।

लौटते समय सुकुमारी ने कहा, "प्रत्येक शनिवार को आना, नहीं आने से सच में मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता है।"

उधर कमला दत्त कह रही थी, "तुम सब लोग खा-पीकर सोने जाओ, मैं बाद में खाऊंगी। सुकुमारी के लिए मुझे तो बैठना ही पड़ेगा।"

मनीषा दी, मीरा दी, ललिता दी, माधुरी, शिखा दी, सभी नौ बजे

के बाद खा-पीकर सो गई।

सुकुमारी के आते ही कमला दत्त ने कहा, "इतनी देर कर अब आना हुआ है तुम्हारा ! इस तरह देरी करने से मैं जरूर ही सेक्रेटरी से कह दूंगी। पता नहीं है कि वे यह सब पसन्द नहीं करते ; इसमें सस्था की बदनामी है।"

फिर खाते-खाते पूछा, "अच्छा, इतनी देर तक तुम लोगों ने किया क्या, ज़रा सुनू ?"

"करते क्या, सिनेमा देखा, चाय पी..."

"इसी में इतनी देर ! अच्छा, तुम लोगों मे क्या-क्या बातें हुई ?"

"यही, सब इधर-उधर की, सब याद भी नहीं है।"

"आदिनाथ के घरवाले कुछ नहीं कहते ?"

"ओ मां, वहा क्या किसी को पता है ?"

"कौन-कौन हैं आदिनाथ बाबू के घर ?"

"सभी हैं, मा-बाप, भाई-बहन—कौन नहीं हैं ? इसके अलावा हम लोगों की जान-पहचान क्या आज की है ? आज दस साल हो गए हम लोगों को मिलते।"

कमला दत्त ने कहा, "यह ठीक है कि तुम लोगों की जानपहचान दस साल से है, लेकिन अच्छा काम नहीं कर रही हो। यह भी तुम्हें कहे देती हू। किसी पुरुष के साथ किसी युवती का मिलना उचित नहीं है। इसका परिणाम अच्छा नहीं होता सुकुमारी—यह मेरे से सुन रखो।"

"लेकिन कमला दी, हम लोगों ने तो कोई अनुचित काम नहीं किया !"

कमला दी ने कहा, "लेकिन प्रवृत्ति के विकृत होते कितनी देर लगती है ? जो महानन्द लगता है, उसका परिणाम कितना भयंकर है, यह तुम अभी नहीं समझ पाओगी। समझ में नहीं आता, इतने तुच्छ सुख के प्रति तुम लोगों का इतना मोह क्यों है ? जीवन नहीं बिता सकती क्या ? उसी दिन तो पढ़ा था, रवीन्द्रनाथ ने कहा है—बड़े में ही हम लोगों का वास है, यही सत्य स्मरण कराने के लिए तो यह मत्र है—ओम् भूर्भुवः स्वः—यह बात भूलकर जब हम लोग सोचते हैं कि तुच्छ और छोटे

"कब और कितने देर सोती हैं, जैसे हम लोगों को पता नहीं है ?"

"अच्छी बुद्ध हो ! बिना सोए क्या आदमी बचता है ?"

"लेकिन हम लोग जब उठते है, तब तक आपका आधा काम पूरा हो चुका होता है। कब सोती है, कब उठती हैं—कुछ भी तो पता नही लगता। काली की मां कहती है, बड़ी दीदीमनि की दो आंखें और बारह हाथ हैं, शायद उसका कहना झूठ नही है।"

"अगर दो आखें और बारह हाथ होते तो लोग राक्षसी कहते।" कमला दत्त ने कहा, "काली की मा की बात छोड़ो। फिर भी इतना काम करके भी तो रोज सेक्रेटरी से डांट खानी पड़ती है।"

"क्यों ?"

"मेरे अगर दो आंखें और बारह हाथ है तो उनके चौबीस हाथ और बारह आखें हैं। इतना कर्मठ आदमी और नही देखा भाई। मैं अगर वैसी हो पाती ! उसी दिन की तो बात है, सेक्रेटरी कह रहे थे—'उम्र के साथ-साथ आजकल काम में भी तुम ढील डाल रही हो कमला !'"

कमला को वह दिन आज भी याद है। हमेशा की तरह आज भी वह स्कूल की रिपोर्ट देने गई थी।

सेक्रेटरी ने फाइल देखते-देखते कहा, "इस बार रिजल्ट इतना खराब क्यों हुआ है ?"

कमला दत्त ने कहा, "हा, गणित मे इस बार काफी लड़कियां फेल हुई है।"

"गणित कौन पढ़ाता है ?"

"मनीषा सेन। अपने यहां की काफी पुरानी अध्यापिका हैं।"

लेकिन वेतन बढ़ाने के लिए तो उस दिन इन्हीं लोगों ने दरख्वास्त दी थी। इन लोगों को अगर काम करने की इच्छा न हो तो हम जबरदस्ती उन्हें रोककर नहीं रखना चाहते—ये क्या तुम उन लोगों को समझा नही सकती हो ?"

बिना कुछ उत्तर दिए कमला चुपचाप बैठी रही।

सेक्रेटरी ने फिर कहा, "उस दिन देखा, वे लोग रास्ते पर घूमने निकली थी। मैंने बार-बार कह दिया है कि जितने दिन वे लोग हमारे

घर में ही हम लोगों का वास है, तुच्छ सुख ही सुख है, तभी हृदय में तरह-तरह के उपद्रव शुरू होते हैं—जिनसे सब काम, क्रोध, लोभ, मोह…"

सुकुमारी चुप रही।

कमला दत्त ने कहा, "ये जो प्राय: ही चिट्ठियां आती हैं तुम्हारे नाम से, ये शायद आदि बाबू की ही लिखी होती हैं ?"

"उनकी चिट्ठी न मिलने से मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता कमला दी !"

कमला दत्त जरा देर चुप रही। फिर बोली, "मैं अगर तुम्हारी मा होती सुकुमारी तो तुम्हे आदिनाथ बाबू के साथ मिलने को जरूर मना करती। खैर, जाने दो, अपना अच्छा-बुरा सोचने की तुम्हारी उम्र हो गई है।"

काफी रात हो चुकी थी। उस रात कमला दत्त ने और कुछ नहीं कहा।

काफी दिन बाद ही सुकुमारी ने आदिनाथ को ये सारी बातें बतलाईं। सुकुमारी ने कहा, "पता नहीं क्यों, कमला दी की बातें सुनकर उस रात मन न जाने कैसा-कैसा करने लगा। लगता था, जैसे मैं बड़ा अन्याय कर रही हूं। तुमसे इतने दिन से जान-पहचान है, लेकिन पहले तो किसी ने इस तरह से नहीं मना किया। मां तो थी नहीं। मन में हुआ—'अगर मा होती तो सच ही शायद इस तरह तुमसे नहीं मिल पाती। वह भी तो इसी तरह मना करती।' लेकिन अजीब हैं कमला दी भी ! स्कूल और यह संस्था छोड़कर कभी कुछ सोचती ही नहीं हैं। किसी दिन किसी की चिट्ठी की प्रतीक्षा में तारे गिन-गिनकर रात का दिन नहीं किया। सोच रही थी, लेकिन कुछ भी ठीक नहीं कर पा रही थी।

"सच, कभी तो सोच-सोचकर हैरान रह जाती। रात-दिन स्कूल और स्कूल ! छात्राओं का अच्छा बुरा, शिक्षा और उत्कर्ष ! फाइल और चिट्ठी-पत्री ! कमेटी और मीटिंग ! सेक्रेटरी और एजूकेशन ! थकान भी तो नहीं आती ! मन भी तो नहीं ऊबता ! "

लेकिन कमला दत्त कहती, "अरे, मैं भी तो आदमी हूं, क्लान्ति आएगी नहीं, तो फिर रात को सोती किसलिए हू ?"

"कब और कितने देर सोती है, जैसे हम लोगों को पता नहीं है ?"

"अच्छी बुद्ध हो ! बिना सोए क्या आदमी बचता है ?"

"लेकिन हम लोग जब उठते हैं, तब तक आपका आधा काम पूरा हो चुका होता है। कब सोती है, कब उठती हैं—कुछ भी तो पता नहीं लगता। कालो की मा कहती है, बड़ी दीदीमनि की दो आंखें और बारह हाथ हैं, शायद उसका कहना झूठ नहीं है।"

"अगर दो आखें और बारह हाथ होते तो लोग राक्षसी कहते।" कमला दत्त ने कहा, "कालो की मा की बात छोड़ो। फिर भी इतना काम करके भी तो रोज सेक्रेटरी से डांट खानी पड़ती है।"

"क्यों ?"

"मेरे अगर दो आखें और बारह हाथ हैं तो उनके चौबीस हाथ और बारह आखें हैं। इतना कर्मठ आदमी और नहीं देखा भाई। मैं अगर वैसी हो पाती ! उसी दिन को तो बात है, सेक्रेटरी कह रहे थे—'उम्र के साथ-साथ आजकल काम में भी तुम ढील डाल रही हो कमला !' "

कमला को वह दिन आज भी याद है। हमेशा की तरह आज भी वह स्कूल की रिपोर्ट देने गई थी।

सेक्रेटरी ने फाइल देखते-देखते कहा, "इस बार रिजल्ट इतना खराब क्यों हुआ है ?"

कमला दत्त ने कहा, "हा, गणित में इस बार काफी लड़कियां फेल हुई है।"

"गणित कौन पढ़ाता है ?"

"मनीषा सेन। अपने यहा की काफी पुरानी अध्यापिका हैं।"

लेकिन वेतन बढ़ाने के लिए तो उस दिन इन्हीं लोगों ने दरख्वास्त दी थी। इन लोगों की अगर काम करने की इच्छा न हो तो हम जबरदस्ती उन्हें रोककर नहीं रखना चाहते—ये क्या तुम उन लोगों को समझा नहीं सकती हो ?"

बिना कुछ उत्तर दिए कमला चुपचाप बैठी रही।

सेक्रेटरी ने फिर कहा, "उस दिन देखा, वे लोग रास्ते पर घूमने निकली थी। मैंने बार-बार कह दिया है कि जितने दिन वे लोग हमारे

स्कूल में रहेगी, हमारे स्कूल के नियम-कानून मानकर चलना होगा। यह सिर्फ स्कूल ही तो नही। इसको आश्रम समझना होगा, और इस काम को भी नौकरी नही मानना होगा। इस तरह अगर काम कर सको तो रहो, नही तो कहो, मैं यह स्कूल बन्द कर दू।"

कमला दत्त का शरीर थर-थर कांपने लगा। स्कूल उठा देने में सेक्रेटरी का क्या आता जाता है, लेकिन कमला दत्त! उसके लिए भी क्या यह स्कूल कर्मस्थल है, जिससे सिर्फ वेतन का सम्पर्क हो? आज अगर सेक्रेटरी वेतन न दें, तब भी तो यहीं रहना होगा। सेक्रेटरी से उसे डर भी लगता है, लेकिन एक दिन भी उनके पास आए बिना जैसे शान्ति नही मिलती। लगता है, जैसे सेक्रेटरी की आखो में कोई जादू है। सेक्रेटरी ने उसे किसी दुर्भेद जाल में चारो ओर से जकड़ रखा है, और कमला दत्त को जैसे उसका अभ्यास पड गया हो। दु:साध्य बन्धन मे ही जैसे उसके लिए परमतृप्ति थी। कष्टप्रद होने पर भी वह इन बन्धनों को काट नही पाएगी। सेक्रेटरी अगर आज उसे इस स्कूल की जिम्मेदारी से मुक्ति दे भी दें, तो कमला दत्त की जाने की भी जैसी हिम्मत नही है। जैसे वह एकदम असहाय, नि:सम्बल हो। इतने दिन तक सेक्रेटरी के सघन आश्रय मे रहकर भी कमला दत्त जैसे निराश्रय थी।

आह्लादी मासी मा किसी-किसी दिन कहती, "धन्य है बेटी तू!"

कमला दत्त पूछती, "धन्य होने क्यों जाऊं मासी मा?"

"उस दिन अपना जमाई, अरे वही पूटी का दूल्हा कह रहा था—ऐसी औरतें लाखों मे एक भी मुश्किल से मिलती है। स्कूल की लड़कियों को वह कितना चाहती है!"

"मासी मा, इतनी प्रशंसा मत कीजिए, नहीं तो आदत खराब हो जाएगी।"

आह्लादी मासी मां ने कहा, "नही री, कोई मजाक थोड़े ही कर रही हूं! मैंने तो कह दिया था—"कमला बेटी को तो छुटपन से ही पढ़ने लिखने का ऐसा ही शौक है।" मैं तो देखती रही हूं न, मेरे पेट के लड़के-लड़कियों के साथ ही तो बड़ी हुई है, लेकिन मेरे बच्चों को पता भी नही है कि पढ़ाई-लिखाई आखिर है क्या बला!"

सच में कमला दत्त को जैसे नशा था। सिर्फ पढ़ाई-लिखाई में ही नशा हो, यह बात नहीं है, स्कूल के ऊपर भी नहीं है, काम में भी नहीं। नशा है और ही एक चीज के ऊपर।

"याद है," मनीषा सेन ने एक दिन सुकुमारी से कहा था, "जानती हो न भाई, इस स्कूल के लिए कमला दी हैं और कमला दी के लिए यह स्कूल। सेक्रेटरी भी कभी कमला दी को नहीं छोड़ेंगे और कमला दी भी सेक्रेटरी को छोड़ अन्य कहीं नहीं जा पाएंगी।"

उस दिन सुकुमारी इस बात का मतलब नहीं समझ पाई थी।

कितनी बार कितनी अच्छी-अच्छी जगह से कमला दत्त की माग आई थी। चन्द्रनगर कृष्णभामिनी नारी मन्दिर वालों ने बुलाया था। महिला शिक्षा सदन चूचड़ा से बुलावा आया। काफी प्रलोभन भी दिखलाए। चन्द्रनगर में बड़े-बड़े लोगों के घर थे। गोन्दलपाड़ा की लड़कियों के लिए नया स्कूल बना। पालपाड़ा और बीबी के बाजार में भी स्कूल खुले। इतना ही नहीं, कलकत्ते से भी तो कितनी बार बुलाया गया। उन्हीं सेक्रेटरी के मित्र रायबहादुर हरनाथसेन, उन्होंने भी कितना अनुरोध किया!

शुरू-शुरू में यही माधुरी, मनीषा सभी कहतीं, "जाइए न कमला दी, कलकत्ते जाकर वेतन काफी बढ़ जाएगा।"

इस पर कमला दी कहती, "वेतन चाहने पर क्या यहीं नहीं बढ़ जाएगा?"

सरला ने कहा था, "आप भी क्या हैं, हम लोगों को अगर ऐसा अवसर मिलता! हमसे तो कोई कहता ही नहीं।"

सुकुमारी उस समय आई नहीं थी।

उसने पूछा, "इस विषय को लेकर सेक्रेटरी कभी कुछ नहीं कहते क्या?"

कमला दत्त ने जवाब दिया, "हां, सेक्रेटरी से मैं यही सब कहने जाऊंगी न? हां, तुमने भी खूब कहा सुकुमारी! तुम लोग तो डर के मारे उनके सामने बोल भी नहीं पाती। इतने दिन से उनके यहां जा रही हूं, इसके अलावा मैं तो एक तरह से उन्हीं के यहां पली हूं, लेकिन फिर

भी उनके सामने जाते जैसे मेरे पांव कांपते हैं। घर के बच्चे भी उनके सामने नहीं पड़ते, मेरी तो बात ही जाने दो।" फिर जरा रुककर कहती, "लेकिन जानती हो अन्दर ही अन्दर उनमें काफी दया-माया है।"

"चेहरा देखकर तो लगता नहीं।" सुकुमारी कहती।

"लेकिन चेहरा भी क्या है—शुद्ध 'एरियन'। चौड़े-चौड़े पंजे, लगता है, इन हाथों से पकड़ लें तो एकदम भुरता हो जाएगा, लेकिन उस कठोर चेहरे में वह नर्म हृदय कहां छिपा है, बाहर से समझ पाना मुश्किल है। रिपोर्ट देने रोज ही उनके पास जाना पड़ता है, लेकिन दो दिन के लिए भी वह कहीं जाते हैं, तो न जाने कैसा खाली-खाली-सा लगने लगता है। मन में होता है कि इतना भार शायद अब और नहीं सम्भाल पाऊंगी। जब लौटकर आते हैं और मैं सामने जाकर खड़ी होती हू, तो जैसे मन फिर हलका हो जाता है; लेकिन सुनकर शायद तुमको विश्वास नहीं होगा—आज तक उन्होंने मुझसे कभी सीधे मुंह बात नहीं की है। उनसे प्रशसा मिली हो, ऐसा एक दिन भी याद नहीं आता।"

सच में कितनी ही बार सेक्रेटरी के यहां से निकलकर कमला इस बन्द गाड़ी में खूब रोई है। बाहर का कोई आदमी इस बात को नहीं जानता। स्कूल के लिए यह जो जी तोड़ परिश्रम है, उसके लिए बाहर जितनी ही ख्याति क्यों न मिली हो उसको, एक कण भी उससे नहीं मिलता है।

बल्कि कभी-कभी तो कहते हैं, "तुमसे यहां का काम नहीं होने का, "तुम नौकरी छोड़ दो न !"

छोटी लड़की मीनू भागती-भागती आकर कहती, "मां, बाबा हैं न, कमला दी को खूब डांट रहे हैं।"

आह्लादी मासी मां नौ बजे तक पड़ी-पड़ी अंगड़ाई ले रही थी। बोली, "तुझे इन सब बातों में कान देने की क्या जरूरत री मुंहजली !"

"सच मां, मैंने देखा है, कमला दी रो रही थी।"

दो दिन बाद मिलने पर मासी मां पूछती, "वह, शायद उस दिन काफी नाराज हुए थे, इसीलिए कई दिनों से नहीं आई ? मीनू कह रही थी।"

सुनकर पहले तो एकदम से स्तब्ध-सी रह गई कमला। फिर ज़रा सभलकर बोली, " हां, लेकिन वह तो बड़े है। मेरे अच्छे के लिए ही तो कहते है। ज़रा भी बुरा नही लगता।"

"सच, तुम्हारे अच्छे के लिए ही कहते हैं। तुम्हारे लिए ही तो स्कूल खुला, तुम पढ़ोगी। लिख-पढ़कर बड़ी होगी, इसीलिए स्कूल बड़ा किया गया। और अब तुम्हारा ही नाम करने के लिए स्कूल कॉलेज हो रहा है।"

"यह क्या मैं जानती नही मासी मां?"

सोने से पहले उस दिन कमलादत्त ने सुकुमारी से कहा, "इतना कहा, शायद काफी गुस्सा हो गई होगी?"

"लेकिन और किसी से मत कहना कमला दी!"

"किसी से कहने जाऊंगी, मेरे पास इतना समय ही कहा है भाई! मेरी क्या इच्छा नही होती! मेरा भी मन करता है कि सिनेमा जाऊं, अच्छी-अच्छी साड़ी और गहना पहनू। बाघ-निसुन्दिपुर में बड़ी होने पर मैं भी शायद यही करती लेकिन यहा सेक्रेटरी के पास रहकर उस सबकी ओर मन ही नही जाता। लगता है, वह सब दो दिन का हो। उससे आंखों को भले ही थोड़ा आराम मिले, लेकिन हृदय को शान्ति नहीं मिलती। गीता में लिखा है—'सर्व धर्म परित्यज मामेकं शरणं व्रज'—यही जो लड़कियो की सेवा करने का काम लिया है, उसीमें जीवन बिता पाऊं तो अपने को धन्य मानूंगी।

"जीवन में मुझे और कुछ नही चाहिए।"

पूछा—फिर?

आदिनाथ ने कहा—इसके बाद अगले शनिवार को भी गया। फिर उसी तरह स्टेशन से निकलकर घोड़ागाड़ी ठीक करके हुगली गर्ल्स स्कूल पहुचा।

उस दिन भी ठीक उसी तरह कमला दत्त काम में मग्न थीं। माथे पर पसीना झलक आया था। सफेद साड़ी से अच्छी तरह शरीर ढंके थी। एक कलम लिए न जाने क्या लिख रही थी कमला दत्त।

आदिनाथ को देखकर बोली, "अरे नमस्कार, बैठिए!"

फिर जरा रुककर पूछा, "सुकुमारी क्या आज भी आपके साथ घूमने जाएगी ?"

"बात तो ऐसी ही है। सुकुमारी ने मुझे चिट्ठी लिखी थी।"

"चिट्ठी लिखी !"

कैसा एक आश्चर्य का सा भाव छा गया कमला दत्त के चेहरे पर—अचानक जैसे कोई आशा टूट गई हो, लेकिन तभी अपने को सभाल लिया, बोली, "अभी बुलाए देती हू !"

पहले की ही तरह नौकरानी ने जाकर खबर दी। सुकुमारी शायद तैयार ही थी। सजी-धजी एक मिनट मे आई। आते ही बोली, "अच्छा तो कमला दी···।"

बाहर जाते-जाते एकदम रुककर सुकुमारी ने कहा, "आज मैं जल्दी ही लौट आऊगी कमला दी ! उस दिन की तरह देर नही होगी।"

कमला दत्त ने उसी तरह सिर नीचे किए काम करते-करते कहा, "जल्दी करने की कोई जरूरत नही है। जब तुम्हारी खुशी हो आना।"

गाड़ी के जंगले और दरवाजा बन्दकर आदिनाथ ने पूछा, "कमला दी शायद नाराज हैं तुम्हारे ऊपर ?"

सुकुमारी जरा गम्भीर थी। बोली, "हा, शायद नाराज ही है।"

"क्यो, बात क्या हुई ? तुमने ऐसा क्या कर दिया ?"

"मेरे अच्छे के लिए ही तो कहती है।"

लेकिन आदिनाथ की समझ मे कुछ नही आया।

कुछ ही देर बाद सुकुमारी खुद ही बोल उठी, "तुम्हारे साथ यह जो शनिवार की शनिवार घूमने जाती हूं, यह कमला दी को पसन्द नही है। कहती है, इस तरह से मिलना-जुलना अच्छी बात नही है।"

"अच्छा नही है ! तो तुमने क्या कहा ?"

मेरी मा होती तो शायद वह भी इसी तरह मना करती। वास्तव मे कमला दी ने ठीक ही तो कहा है। हालांकि हमारी जान-पहचान दस साल से है, लेकिन कमला दी कैसे समझ पाएगी ! उनका मन तो कहीं अटका नही है। जीवन में एक सिनेमा तक नही देखा। स्कूल को छोड़कर उनका और कोई स्वप्न भी नही है। और तो और, यही बैडिल मे उन्हे कितने

साल हो गए ! सुना है, यहां कई देखने और घूमने की जगहें है । गंगा के किनारे पोर्तुगीज चर्च, जुबली ब्रिज । हम लोग तो अभी हाल मे नये आए है, लेकिन कमला दी ने इनमें से कुछ भी नहीं देखा है । सिर्फ काम और काम, बन्द गाड़ी में फाइल लेकर सेक्रेटरी के यहा जाना, फिर स्कूल आकर दफ्तर में बैठकर काम करना, सच अजीब हैं !"

रेस्टोरेंट मे चाय पीते-पीते सुकुमारी ने कहा, "इस समय कमला दी शायद पूजा करने बैठी होंगी।"

"तुम क्या अभी तक कमला दी के बारे मे ही सोच रही थी ?"

"नही, तुम्हे मालूम नही है, कमला दी मुझे कितना चाहती है ! किस बात मे मेरी अच्छाई है, सिर्फ यही सोचती है । मेरी तरह उनकी भी मां नही है न, दूसरे के यहां जो पली है ।"

फिर चाय की एक चुस्की लेकर बोली, "कमला दी तुम्हारे बारे मे भी पूछती हैं । तुम्हारे चेहरे की खूब तारीफ करती है ।"

"ऐसा !"

"तुमने कितनी पढ़ाई की है, क्या करते हो, तुम्हें क्या खाना पसन्द है । मैं जब तुम्हारे बारे मे कहती हूं तो कमला दी ध्यान से सुनती है, लेकिन कहती है—तुम काम ठीक नही कर रही हो सुकुमारी ! इस तरह मिलना-जुलना बन्द कर दो । इसमें मगल नही है, कल्याण नही है ।"

लौटते समय बैंडिल स्टेशन पहुचकर आदिनाथ ने पूछा, "तब अगले शनिवार नही आऊगा ।"

"ओ मा, क्यो ?"

"तुम्हारी कमला दी जो पसन्द नही करती है ।"

"नही-नही, मेरे सिर की कसम, तुम जरूर आओगे । नही तो मैं माथा कूटकर मर जाऊंगी ।"

उस दिन भी बरामदे में रोशनी किए कमला दी एक किताब पढ़ रही थी, शेष सभी सो चुके थे ।

सुकुमारी झटपट पहुंचकर बोली, "कमला दी, नाराज तो नही हो गईं ? आज भी ट्रेन के कारण देरी हो गई । मेरी जरा भी गलती नही है ।"

कमला दी ने पूछा, "आज भी खाकर आई हो न ?"

"नही, आज सिर्फ चाय पी । उन्होंने खिलाना चाहा, लेकिन तुम नाराज होगी, सोचकर मैंने कुछ नही खाया।"

"और क्या किया ? कहा-कहा गई ?"

जाऊंगी कहां, सिनेमा गई, हमेशा की तरह और बातचीत।"

"तुम लोगों में ऐसी क्या बातें होती हैं, जिनके बिना तुमसे रहा नहीं जाता ?"

जरा रुककर खाते-खाते कमला दी ने कहा, "तुम्हें सावधान करना मेरा काम है सुकुमारी ! मैं स्कूल की हेड मिस्ट्रेस हूं । तुम लोगों की अच्छाई-बुराई का भार मेरे ही ऊपर है । तुम लोगों के बीमार होने पर जिस तरह मुझे देखना पड़ता है—इस बारे मे भी ठीक उसी तरह । इस स्कूल को अगर आश्रम मानती हो, तो यहा कोई भी अनाचार मत करो। तुम्हें भी मैं सावधान किए देती हू । यह अच्छी बात नहीं है, इससे तुम्हारा भला नही होगा । तुम इतना जरा-सा सयम भी नहीं कर सकती हो ! तब बड़े-बड़े काम करने की शक्ति तुम लोगो मे कहां से आएगी ?"

लेकिन अगले शनिवार को सुकुमारी भी अवाक् हो गई।

मनीषा सेन ने पूछा, "आज शायद आप कही जाएगी कमला दी !"

माधुरी ने कहा, "इस साड़ी को पहन कर सचमुच कितनी अच्छी लगती है आप !"

ललिता दी ने कहा, "इसी तरह रोज क्यों नही पहनती ? यही तो अच्छा लगता है।"

लेकिन कमला दी कुछ भी नहीं समझ पाई, बोली, "क्यों, ऐसी कौन-सी बहुत अच्छी साड़ी पहने हूं ? किनारा ही तो जरा चौड़ा है । अगर तुम लोगो को यही पसन्द है, तो ठीक है, यही पहना करूंगी । "

ठीक समय पर आदिनाथ आया । कमला दत्त उस दिन भी हमेशा की तरह काम कर रही थी। पिछले दिन का कुछ बाकी भी पड़ा था। सेक्रेटरी ने डाटा भी था खूब । काफी दिन से प्रश्न पत्रों के लिए तकादा कर रहे थे । कल बरस पड़े । जो मन में आया, सो कहा । कहा, "दिन पर दिन आखिर यह हो क्या रहा है ? पहले तो इस तरह काम नहीं पड़ा रहता था।"

कमला भी हमेशा जिस तरह सिर नीचा किए बैठी रहती, उस दिन भी बैठी रही।

"नहीं तो कुछ दिन छुट्टी ही ले लो।"

कमला दत्त को लगा कि शायद चाबुक मारने से भी उसे इतना आघात नहीं पहुंचता।

सेक्रेटरी ने कहा, "छुट्टी भी नहीं लोगी, काम भी पड़ा छोड़ोगी, इस तरह कैसे चलेगा? तुम्हारा तो चारों ओर काफी नाम है। दूसरे स्कूल में तुम्हें लोग सिर-आखों पर लेकर रखेंगे। जाओ, वहीं जाओ। मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है।"

सिर्फ चाबुक ही नहीं, इस बार तो लगा, जैसे सेक्रेटरी उसे चारों ओर से साप की तरह जकड़कर डस रहे हैं, लेकिन कमला दत्त को जैसे ये डंक नहीं, आशीर्वाद लग रहे थे। विष भी जैसे उसके लिए अमृत हो गया था। सेक्रेटरी से डांट खाना भी उसे इतना अच्छा नहीं लगता···

"अच्छी है?"

अचानक सामने आदिनाथ को देखकर जैसे कमला दत्त के चेहरे पर लाली दौड़ गई। पूछा, "ओह, आप! बैठिए, बुलवाए देती हूं।"

पता नहीं क्यों, उस दिन सुकुमारी को हमेशा से जरा अधिक देर लगी। कमला दत्त ने काम करते-करते कहा, "आज आप लोग किस ओर घूमने जाएंगे?"

इस प्रश्न के लिए आदिनाथ तैयार नहीं था। सुनकर एक क्षण को अवाक् हो गया। फिर अपने को संभालकर बोला, "ट्रेन में चढ़कर साधारणतः हम लोग कलकत्ता ही तो जाते हैं।"

"और सिनेमा नहीं जाते न?"

आदिनाथ मुस्कराया, "शायद सुकुमारी ने कहा है सब!"

तभी आदिनाथ को जैसे कुछ याद आया। अचानक बोला, "लेकिन आपने तो उसे मेरे साथ घूमने को मना किया है!"

कमला दत्त की आंख-कान-चेहरा जैसे फिर लाल हो उठा। शायद कुछ कहने भी जा रही थी कि सुकुमारी फटफट करती आ गई और बात मुंह में ही रह गई।

आते ही बोली, "अच्छा तो कमला दी चलूं !"

कितने दिन पहले आदिनाथ से यह कहानी सुनी थी और अब कितने दिन बाद मैं इसे लिख रहा हूं। उस दिन आदिनाथ सारी घटनाएं ठीक से कह भी नहीं पाया था।

उसने कहा भी था—आज मुझे सारी घटनाएं क्रम से याद भी नहीं हैं। इसके अलावा अब उम्र भी काफी हो गई है। उस दिन जो सोचा, अनुभव किया, वह भावना और···और अनुभूति सब खत्म हो चुकी है।

फिर भी उल्लेख-योग्य घटना इसके बाद ही की है।

स्कूल में ग्रीष्मावकाश हुआ। लम्बी छुट्टी। सुकुमारी ने लिखा था—"आने वाले शनिवार को ज़रूर आना। मैं सूटकेस और बिस्तर के साथ तैयार रहूंगी।"

हर साल इस समय सारी व्यस्तता जैसे समाप्त हो जाती है। मनीषा सेन अपने घर जाएंगी, शिखा दी नागपुर, माधुरी दी अपनी काकी के पास जाएंगी, उनके पिता नहीं हैं, और ललिता मान्याल जाएगी तेजपुर। वहां उसका अपना घर है।

कमला दी ने कहा, "तुम सब जा रही हो, अगर समय मिले तो चिट्ठी लिखना।"

सुकुमारी ने पूछा, "तुम कहीं क्यों नहीं जाती कमला दी !"

"मेरे जाने पर स्कूल की देख-रेख कौन करेगा ?"

"क्यों ? दरबान, नौकर सभी तो हैं। इसके अलावा सेक्रेटरी का घर भी तो पास ही है। वही देखेंगे कुछ दिन। चलोगी मेरे मामा के यहां ?"

"चल पगली, मुझे यह स्कूल छोड़कर स्वर्ग में भी सुख नहीं मिलेगा। तुम लोग चाहे जो कहो, सेक्रेटरी अगर निकाल भी दें तो भी मुझे यहीं रहना होगा। यहीं मरने में मुझे सुख है।"

हर एक कक्षा में जाकर कमला दत्त लड़कियों को विदा कर आई। कहा, "छुट्टी के दिनों को तुम लोग खराब मत करना। छुट्टी है, इसलिए आलस्य में नष्ट मत करना। स्वामी विवेकानन्द की बात याद करना। उन्होंने कहा है—'शिक्षा के मतलब केवल कुछ शब्द ही नहीं

हैं। हृदय और मानसिक शक्तियों का प्रकृत विकास ही वास्तविक शिक्षा है।' इस तरह की शिक्षा पाकर एक दिन तुम में से ही सघमित्रा, लीलावती, अहल्याबाई, मीराबाई के समान महान रमणियों का आविर्भाव होगा, तभी देश का कल्याण होगा और होगा भारतवर्ष का नाम उज्ज्वल।"

सुकुमारी भी एक दिन आदिनाथ के साथ चली गई।

कमला दत्त ने पूछा, "अब तो आपकी भी कुछ दिन छुट्टी। काफी दिन इस ओर आना नही होगा।" सामान दरवाजे के पास रखा था। सुकुमारी अभी भी नही आई थी।

आदिनाथ ने सिर्फ इतना ही पूछा, "आप कही नही जाएंगी ?"

कमला दत्त ने सिर नीचा किए कहा, "मैं स्कूल छोड़कर कही नही जाऊंगी। मेरी छुट्टी नही है।"

इसके बाद एक-एक कर सभी चले गए। रह गई चारों ओर फैली चिलचिलाती धूप और लम्बी दुपहर। कभी-कभी गगा की ओर से हवा शान्ति को भग करने आती। जंगले-दरवाजों में लगे पर्दों से होती वह हवा कमरों में जरा देर हू-हू करके जैसे किसी को खोजती, फिर न पाकर लौट जाती। कमला दत्त शायद उस समय या तो अपना ब्लाऊज सी रही होती अथवा भीगे कपड़े धूप में सूखने डालती होतीं। कभी-कभी बगीचे में यों ही आ खड़ी होतीं। एक कौआ मुह-पैर मे गन्दगी लिए बरांडे की रेलिंग पर बैठने जा रहा था कि हाथ उठाकर कमला दत्त ने उड़ा दिया। मन ही मन कहा—'केवल गन्दगी फैलाना, इस बार वर्षा के बाद पूजा की छुट्टियों मे रंगाई करानी होगी।' इसी तरह कितने ही विचार, कितनी ही कल्पनाएं कमला दत्त के मन मे आतीं। शाम को फिर एक बार अपने दफ्तर में आकर बैठती। सुबह-शाम एक बार दफ्तर में बैठे बिना जैसे दिन बेकार लगता। मन मे होता, जैसे वह सेक्रेटरी के विश्वास का अपमान कर रही है।

इसके बाद किसी न किसी काम के बहाने सेक्रेटरी के घर जाती। सेक्रेटरी कहते, "बैठो।" फिर हाथ का काम समाप्त कर कहते, "यह देखो यूनिवर्सिटी से चिट्ठी आई है।" कमला दत्त मनोयोग से चिट्ठी की

हर पक्ति पढ़ती।

"पढ़ी ?"

"हा।"

"इसलिए छुट्टी के बाद ही ए० आर० पी० की कक्षा प्रारम्भ करनी होगी। सप्ताह में एक दिन। शनिवार ठीक रहेगा। सबसे कह देना, शनिवार को जिससे कोई भी अध्यापिका बाहर न जाए। ए० आर० पी० कक्षा अनिवार्य है।"

अन्दर जाने पर अह्लादी मासी मां पूछती, "आज तुम लोगों के यहा क्या खाना बना।"

इसके बाद गाड़ी में बैठकर फिर स्कूल, पूजा, फिर पढ़ाई। एक विषय में तो एम० ए० कर लिया है। इतिहास में दे या नही, सोचती। इसके बाद सारे दरवाजे-खिड़किया और ताले बन्द हुए या नही, देखकर धीरे-धीरे अपने कमरे में चली जाती।

रोज इसी तरह चलता।

लेकिन पहले शनिवार यो ही गडबड़ हो गई।

दफ्तर में बैठी जरा काम-काज देख रही थी कि अचानक सामने जैसे भूत देख लिया।

"नमस्कार!"

"यह क्या आप!" कमला दत्त वास्तव में हैरान हो गई। फिर बोली, "लेकिन सुकुमारी तो कलकत्ते में ही है।"

"इस ओर जा रहा था, अचानक ध्यान आया कि ··" आदिनाथ ने जैसे कैफियत देते हुए कहा।

"हम लोगों का ग्रीष्मावकाश चल रहा है, शायद ध्यान नही था?"

"ध्यान आया कि आप यही रहेंगी।"

"हा, मैं तो हमेशा छुट्टियो में यही रहती हू।"

"एकदम खाली-खाली लग रहा है न?"

"अब तो आदत पड़ गई है। इसके अलावा मेरे लिए जाने को भी तो और कोई जगह नहीं है।"

आदिनाथ समझ नही पा रहा था कि इसके बाद क्या कहे।

कमला दत्त ने ही निस्तब्धता भंग की, "सुकुमारी कैसी है ?"

"ठीक ही है। अब तो उनके साथ ज्यादा मुलाकात हो नही पाती।"

"क्यों ?"

आदिनाथ ने कहा, "हम लोगो का मिलना-जुलना खुलकर तो है नही। इसके अलावा मामा के यहा उसे गृहस्थी के काम में लगा रहना पड़ता है। फुरसत ही नही मिलती। स्कूल खुलने पर ही फिर हर शनिवार को मिलना होगा।"

इसके बाद फिर कोई बात नहीं हुई। काफी देर तक चुप बैठे-बैठे कमला दत्त अस्थिर हो उठी। आदिनाथ को भी ऐसा ही लग रहा था। अन्त में बोला, "अब मैं चलूगा।"

"यह कैसे ! इतनी दूर से आए···" फिर ज़रा देर रुक कर कहा, "थोड़ी देर ठहरिए। कालो की मा से कहकर आपके लिए कुछ जलपान मंगवाऊ।"

"नही-नही, मेरी गाडी खड़ी है। डेढ बजे की ट्रेन से ही मुझे लौटना है।"

कहकर सचमुच उसने दरवाजे की ओर पाव बढा दिए, लेकिन मन मे हो रहा था—जाते समय कम से कम एक बार फिर से आने को कहती तो शायद अच्छा होता।

कमला दत्त ने कहा, "जब आए ही है तो ज़रा देर बैठकर जाइए।"

"यहां आऊंगा, यह सोचकर तो चला नही था। अचानक आपकी बात याद आ गई, इसी से···"

कमला दत्त क्या कहे, कुछ ठीक नही कर पा रही थी।

आदिनाथ बाहर निकलकर खड़ा हो गया। लेकिन यह क्या ! कमला दत्त एक बार फिर से आने को भी नही कह रही है ! गाडी में चढ़ने की जैसे इच्छा नही हो रही थी। दरवाज़ा खोलने मे बेकार ही देर लगाई। धीरे-धीरे गाड़ी के पायदान पर एक पांव रखा। तब भी कमला दत्त वैसे ही दरवाजे पर खड़ी थी। चेहरे पर या आंखो मे, कही भी निमत्रण के अनुरोध का ज़रा भी भाव नहीं।

गाड़ी चलने को थी। साईस ने लगाम में झटका लगा दिया था।

तभी अचानक कमला दत्त ने क्षीण कंठ से कहा, "मुझसे काफी अन्याय हुआ···"

आदिनाथ ने इशारे से गाड़ी रोकने को कहा। फिर पूछा, "किस अन्याय की बात कर रही हैं?"

"आप इतनी दूर से आए, पानी तक को नहीं पूछा। मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई।"

आदिनाथ ने कहा, "उसमें क्या हुआ! यह तो आपका अपना घर नहीं है। आपके घर आकर पेट-भर मिठाई खाऊंगा।"

इसके बाद आदिनाथ साईस को चलने के लिए कह ही रहा था कि कमला दत्त ने एक अजीब सवाल कर डाला, "सुकुमारी जानती है कि आप यहां आएंगे?"

"कौन···सुकुमारी?" आदिनाथ ने हंसकर कहा, "मैं क्या खुद ही जानता था कि यहां आऊंगा? न यही सोचा था कि आप मेरे साथ इतना मधुर व्यवहार करेंगी।"

"मधुर व्यवहार!" बात जैसे खट से कमला दत्त के कान में बज उठी, लेकिन उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला।

तभी आदिनाथ ने जैसे मरे मुर्दे पर तलवार चलाई, "आप ही ने तो एक दिन सुकुमारी को मेरे साथ मिलने के लिए मना किया था ना, इसी से कहा।" कमला दत्त के पास इस बात का भी कोई जवाब नहीं था। आदिनाथ की ओर देखती वह वैसे ही खड़ी रही।

"अच्छा, तो अब चलूं मैं, ट्रेन का समय हो गया है।" कहकर साईस को चलने का इशारा किया।

कमला दत्त लेकिन अभी वैसे ही निःशब्द खड़ी थी।

गाड़ी में से सिर बाहर निकालकर आदिनाथ ने जोर से कहा, "फिर किसी दिन आऊंगा, नमस्कार!"

एक दिन अगले शनिवार को ही होगा, यह तो कमला दत्त ने कभी सोचा भी न था।

कमरे में आकर हठात् कालो की मां ने कहा, "बड़ी दीदीमनि, वही

अचानक थोड़ी दूर जाकर ट्रेन जो रुकी, बस चलने का नाम ही नहीं। पता लगा, रास्ते में कहीं एक मालगाड़ी के इंजन के पटरी से उतर जाने से रास्ता बन्द हो गया है। गाड़ी और आगे नहीं बढ़ेगी, त्रिशंकु की तरह वहीं लटका रहा।"

कमला दत्त ने आखें चढ़ाकर पूछा, "फिर ?"

"फिर क्या, न एक कप चाय, न एक सिगरेट—पक्के साढ़े सात घंटे वहां पड़े रहने के बाद जब घर पहुंचा तो बारह बज चुके थे—घड़ी और शरीर दोनों के ही।"

कमला दत्त सहानुभूति से जैसे भर उठी, "राम-राम, आपको कितनी तकलीफ उठानी पड़ी !"

आदिनाथ ने कहा, "लेकिन आज यहां से बिना मुंह मीठा किए उठने वाला नहीं हूं। आज भी अगर कहीं ट्रेन अटक गई, तो बड़ी गड़बड़ होगी। सन्ध्या से पहले मुझे कलकत्ते पहुंचना ही होगा।"

"फिर आते ही जाने की बात पहले जरा आराम तो कीजिए।"

"आपकी क्या है। आपकी तो छुट्टियां हैं, लेकिन काम पड़ा रहने पर मैं अड्डेबाजी नहीं कर पाता।"

"सुकुमारी कहती थी, आप बड़े कर्मठ आदमी हैं। काम होने पर उससे मिलना भूल जाते हैं।"

तभी कालों की मां मिठाई ले आई।

"आप क्या कम कर्मठ हैं !" आदिनाथ ने एक पूरी मिठाई मुंह में भरते हुए कहा, "आपके बारे में भी सब बतलाया है सुकुमारी ने।"

कमला दत्त ने कहा, "कर्मठ न धूल ! सुकुमारी मुझसे स्नेह करती है, इसीलिए बढ़ा-चढ़ाकर कहती होगी।"

आदिनाथ ने कहा, "सच कहता हूं, सुकुमारी आपकी बड़ी तारीफ करती है, कमला दी और कमला दी। उसके मुंह से मैंने इतनी बड़ाई और किसी की भी नहीं सुनी।"

"वह तो इसी तरह मुझसे आपकी भी तारीफ करती है।"

आदिनाथ ठहाका लगाकर हंस पड़ा बोला, "वह तो मैं पुरुष हूं, इसलिए, लेकिन एक महिला दूसरी महिला की प्रशंसा करे, ऐसी बात

तो ससार में बहुत कम देखने में आती हैं। असल में उससे इतनी तारीफ सुनकर ही तो मैं आज आपसे मिलने आया हूं।"

कमला दत्त लज्जा से जैसे लाल हो गई। अचानक उसने सिर नीचे झुका लिया। भाल पर दो-एक पसीने की बूदें भी आ रही थीं।

फिर जैसे अपने से ही कह रही हो, "न-न, मैं जरा भी काम की औरत नही हू। काम जरूर करती हूं लेकिन फिर भी मैं कर्मशील नही हो पाती। काम ही कर पाऊं तो डाट क्यों खाऊं ?"

"डाट खाती हैं ? वाह, खूब ! किससे डाट खाती हैं ?"

सेक्रेटरी से। आप तो उन्हे पहचानते नही है, अद्भुत काम के आदी हैं वह। उनकी काम करने की क्षमता देख दातों-तले उगली दबानी पड़ती है। अकेला आदमी भी क्या इतना काम कर पाता है ?"

सेक्रेटरी की बात उठते ही जैसे कमला दत्त एक मिनट में और ही आदमी हो गई। चेहरे का भाव बदल गया। अचानक साप देखकर चेहरे पर जो भाव आता है, ठीक वैसा ही। आदिनाथ ने हठात् स्कूल के वातावरण को जैसे हलका कर दिया था। एक क्षण मे ही फिर सब बदल गया। कमला दत्त फिर प्रधानाचर्या हो गई।

आदिनाथ ने कहा, "तो फिर उठू ?"

कमला दत्त ने नजर उठाकर कहा, "क्यों, अचानक क्या हुआ ?"

"आपके काम का हर्ज कर रहा हूं। सेक्रेटरी महाशय को अगर पता लगेगा तो शायद···"

"वह तो यहां है नही।"

"नही है !"

"कलकत्ते गए है, कल शाम को लौटेंगे।" फिर रुककर बोली, "कलकत्ते में स्कूल का थोडा काम है। कुछ फर्नीचर चाहिए। इसके अलावा यूनिवर्सिटी में भी थोड़ा काम है, सब समाप्त कर कल लौटेंगे।"

आदिनाथ ने कहा, "चलो, आफत मिटी। तो फिर डर की कोई बात नही है—क्यों ?"

"हमारे सेक्रेटरी से लगता है, आप काफी डरते हैं ?"

"हा। यहां अगर किसी से डरता हूं, तो वह आपके से-

कमला दत्त ने पूछा, "और सुकुमारी से ? उससे नही डरते ?"

आदिनाथ जैसे कुछ समझ नहीं पाया, "क्यो, सुकुमारी से क्यो डरने लगा ?"

कमला दत्त जैसे अचानक गम्भीर हो गई। बोली, "अगर सुकुमारी से डरते नही हैं तो उसे बताया क्यो नही कि आप उस दिन यहा आए थे।"

आदिनाथ जैसे और भी हैरान रह गया। पूछा, "लेकिन आपको कैसे पता चला कि मैंने बतलाया है या नही ?"

कमला दत्त ने कहा, "मुझे पता है—और आज भी आपके आने के बारे मे सुकुमारी कुछ नही जानती—है न ?"

आदिनाथ ने कहा मै मानता हू कि सुकुमारी को मैंने नहीं बतलाया, लेकिन क्या उसे बताने पर ही आपको खुशी होती ?"

"उसे न बतलाने पर मैं खुश होऊगी, यह विचार आपके मन मे कैसे आया ? पहले उसका जवाब दीजिए। अपनी बात मैं फिर कहूंगी।"

आदिनाथ ने जैसे हतप्रभ होकर कहा, "मैंने सोचा था कि आप उस तरह की नही है।"

"किस तरह की ?"

"अर्थात् औरतें साधारणत. जिस तरह की होती हैं। मतलब, आप अन्य नारियो की तरह नही है।"

"मतलब ?"

इस बार आदिनाथ कोई जवाब नहीं दे पाया।

इस बार कमला दत्त हस पड़ी, "बोली मैं किस तरह की औरत हूं, न हो तो सोचकर बतलाइएगा। आपको मैंने सोचने का समय दिया, बैठे-बैठे सोचिए, फिर कहिएगा।"

लेकिन आदिनाथ को सोचना नहीं पड़ा। कमला दत्त के चेहरे पर हंसी देखकर जैसे अपने-आप उसे जवाब सूझ गया, बोला, "आपको साधारण औरत की तरह समझना सच में मुझे खराब लगता है। लगता है, जैसे आप काफी ऊपर हैं। घर-गृहस्थी, नोन-तेल-लकड़ी के बारे में सोचना जैसे आपको शोभा नहीं देता। अभी तो यह स्कूल छोटा है।

यह संस्था अगर और भी बड़ी हो, यूनिवर्सिटी हो, उसके ऊपर ही रहना आपको शोभा देता है।"

तभी कमरे में प्रवेश कर कालो की मा ने कहा, "बड़ी दीदी मनि, नल मे पानी आ गया है।"

काफी देर बाद जैसे कमला दत्त होश मे आई।

आदिनाथ ने भी स्थिति भापकर कहा, "तब मैं भी चलूगा अब।"

"न-न, बैठिए। आपके साथ बात करते-करते कब दुपहर ढल गई, पता ही नही चला।"

आदिनाथ ने कहा, "बेकार मे आपका इतना समय नष्ट किया!"

"छिः, ऐसा मत कहिए। काम करना अच्छा लगता है, इसलिए, क्या सारे दिन काम ही करती रहू? आप आए तो थोड़ी देर इधर-उधर की बात कर ली। पता नहीं, कितने साल बाद आज इस तरह बातचीत की है।"

"सच, आपको देखकर मुझे ईर्ष्या होती है। अगर मैं भी आपकी तरह इतना काम कर पाता?"

"अधिक प्रशंसा का नाम ही निन्दा है, जानते हैं न?"

"आपके सामने ही कर रहा हूं, वह बात नहीं है; पीछे भी मैं और सुकुमारी दोनों आपकी प्रशंसा करते हैं।"

कमला दत्त ने हंसकर कहा, "तारीफ सुनते-सुनते मेरे कान पक गए आदिनाथ बाबू, अब तो निन्दा ही अच्छी लगती है—तभी तो रोज फटकार खाने सेक्रेटरी के पास जाती हूं।"

"आपकी जो निन्दा करे, उसे धिक्कार है!"

"वास्तव में वह मेरे अच्छे के लिए ही कहते हैं। कहते है, घर गृहस्थी तो सभी करते हैं, उसके लिए लोगों की कमी नहीं है। देश की सेवा करने वाले कितने लोग हैं? सोचती हू—मैं ही हूं क्या? क्या मेरी सामर्थ्य है? मैं कर ही क्या सकती हूं, फिर भी कोशिश करती हू—अपनी क्षुद्र बुद्धि से जो कुछ भी कर पाऊं···"

फिर जरा रुककर बोली, "यह तीस बीघे जमीन—सभी तो सेक्रेटरी

की दी हुई है। अभी भी काफी ज़मीन खाली है। आपने अन्दर देखा है?"

"ना।"

"आइए न, आपको सब दिखलाऊं।" कह कर कमला दत्त कुर्सी छोड़कर उठी, "आइए, आजकल तो स्कूल बन्द है। नहीं तो बाहरी आदमी का प्रवेश इस ओर वर्जित है।"

फिर दूसरे दरवाजे से कमला दत्त अपनी सुडौल-सुन्दर देह को अन्दर की ओर ले गई। पीछे-पीछे आदिनाथ भी आकर खड़ा हो गया।

कमला दत्त हाथ की उंगली से दिखलाने लगी, "वह जो एकतल्ला मकान देख रहे है, वही है हम लोगों की पुरानी इमारत। वहीं था पहले प्राइमरी स्कूल। वह बहुत पुरानी बात है। मैं वहीं पढ़ी थी। इसके बाद पास में जूनियर स्कूल की वह इमारत बनी। इसके बाद यह नई तीनतल्ला इमारत बनी हाई स्कूल के लिए।"

आदिनाथ आश्चर्य से चारों ओर देखा था, अन्दर इतनी जगह पड़ी है, इतना अच्छा बगीचा! कमला दत्त के अपने शरीर की ही तरह सभी कुछ सुघड़, सुडौल, साफ-सुथरा।

कमला दत्त ने कहा, "वह जो तालाब के पास खाली जगह देख रहे हैं, वहां पर लड़कियों के लिए फिज़िकल कल्चर की इमारत बनाने की योजना है—और उसी के पास कॉलेज की नई इमारत होगी—फ़िजिक्स, केमिस्ट्री की प्रयोगशाला और संग्रहालय जो कुछ भी कहें।"

इसके बाद और एक तरफ दिखलाकर बतलाया, "उधर बीच में जो खाली मैदान देख रहे हैं, वहां एक हाल होगा। वहीं मीटिंग वगैरह होगी। कोई विद्वान आएगा तो वहीं उसका व्याख्यान होगा।"

"और इस ओर पूर्व के कोने में होगा 'अस्पताल', जिसके समीप ही डॉक्टर के रहने की जगह होगी।"

लेकिन आदिनाथ का ध्यान उस ओर नहीं था। यह सब वह सुकुमारी से कितनी ही बार सुन चुका था। वह कहती, "कमला दी सारे दिन केवल यही सोचती हैं। जो भी आता है, उसे दिखलाती हैं कि कहां अस्पताल होगा और कहां होगी प्रयोगशाला।"

आदिनाथ को और भी एक बात याद आई। सुकुमारी ने कहा था,

"जिस दिन कॉलरा से कालो की मां का लड़का मर गया था, उस दिन क्या आफत मची थी ! हम सभी हाय-हाय कर रहे थे। कालो की मां पछाड़ खाकर फूट-फूटकर रो रही थी, मगर कमला दी ?"

मनी ने कहा, "कैसा पत्थर का दिल है कमला दी का !"

माधुरी ने कहा, "अपने भाई-बहन तो देखे नहीं भाई, इसी से इतनी कठोर हैं।"

सेक्रेटरी आए। साथ में कमला दी भी गई। स्कूल से लगी ही कालो की मा की कोठरी थी। लोगों से लाश को बाहर लाया गया, लेकिन वह क्या छोड़ना चाहती थी ! मेरे लड़के को कालो की मा ने कसकर पकड रखा था। कहती थी, "अपने बच्चे को नहीं छोड़ूंगी रे !"

तभी कमला दी ने एक डांट लगाई।

औरत के शरीर पर कौन हाथ लगाता ? अन्त में कमला दी ने ही कालो की मा के दोनों हाथ पकड़े। तब जाकर वे लोग लड़के को उससे छीन पाए। फिर कोठरी से बिछौना-बिस्तर सब निकाल कर जलाया गया। कमला दी ने कहा था, "तुम लोगों की तरह नरम-दिल होने से तो स्कूल चल चुका !"

सुकुमारी ने कहा, "हम सब लोगों की आंखें उस समय छल-छल कर रही थीं। ओह, कालो की मा का इकलौता लड़का ! लेकिन कमला दी की आंखें एकदम सूखी थीं।"

अगले महीने कमला दी ने कालो की मा के वेतन से पांच रुपये काट लिए। कालो की मा ने रोते-रोते कहा, "बड़ी दीदीमनि, मेरे पांच रुपये काट लिए ?"

"उस महीने तुमने कई दिन नागा किया था, याद नहीं है ?"

"मैंने नागा कब किया बड़ी दीदीमनि ?"

"सुनो, लड़के के मरने पर तुमने काम किया था ?"

कालो की मां फूट-फूटकर रोती बोली, "दीदीमनि मैं क्या जानकर नागा किया था ? मां होती तो पता चलता नहीं दीदीमनि कि उसका लड़का क्या होता है !"

कमला दी ने जवाब दिया, "तुम्हें एक महीने का ही [illegible]

तो पांच सौ लडकियों के बारे मे सोचना पड़ता है। तुम्हे स्कूल तो चलाना नही पडता कालो की मा, तुम कैसे समझोगी ! अगर तुम्हारी छुट्टी बाकी होनी तो कोई बात नही थी। मुझे स्कूल के नियम-कानून मानकर चलना होता है। सेक्रेटरी के सामने हर बात की कैफियत देनी होती है। तब तुम तो आओगी नही मुझे बचाने।"

कमला दत्त अभी भी आदिनाथ को सब दिखला रही थी और बतला रही थी अपने सारे स्वप्न, सारी आशाएं और आकांक्षाओं के बारे मे। सेक्रेटरी ने उससे कहा, था, "तुम साधारण लड़की नही हो कमला, गृहस्थी तुम्हारे लिए नही है। याद रखो, भगवान ने तुम्हें सारे बन्धनो से मुक्त किया है, एक महत् उद्देश्य के लिए।"

बचपन मे एक दिन पढ़ाते-पढाते उन्होने कहा था, "अटलांटिक पार कर सभी तो अमेरीका पहुच सकते थे, लेकिन क्यों नही पहुंच पाए, जानती हो ? उनमे विश्वास नही था, स्थिर लक्ष्य नही था। वह था तो केवल एक कोलम्बस मे।"

राममोहन सेन और आह्लादी बहू में कभी कोई खास बात नही होती थी। बात का समय ही नही मिलता था। मिलने पर भी बात करने का साहस नही था। इनका मिजाज ही अलग था। पढाई-लिखाई और स्कूल का काम लिए ही सारे दिन व्यस्त रहते। आह्लादी बहू अपना काम ही खुद देखती रहती तो सब ठीक-ठाक चलता रहता। हालांकि हर साल बच्चे होते रहे है, लेकिन एक को भी उन्हें पालना नही पडा। सिर्फ पैदा करके ही उनकी छुट्टी थी। इसके अलावा घर में न जाने कौन-कौन-से रिश्तेदार भरे थे—भाभी, बुआ, चाची, ताई—वे लोग भी जैसे इस गृहस्थी से बध-सी गई थीं। इस घर की बहू के बच्चों, नाती-पोतों की देखरेख करना ही उन लोगों का काम था। कोई दाल साफ करती, तो कोई रसोई की देखरेख करती, तो कोई जच्चाघर की व्यवस्था संभालती। इसी तरह के अनेक काम लगे ही रहते। बहू को बच्चा होता, लडकी के बच्चा, फिर नतिनी के। इस घर मे जच्चाघर कभी खाली नही पडा रहता। इसीलिए काम भी कम नही था। हर एक सन्तान के प्रसव होने समय आह्लादी बहू को जीवन-मरण का संघर्ष करना पडता; प्राणान्तक

कष्ट होता, मगर उससे गृहस्थी की व्यवस्था में कहीं कोई अन्तर नहीं आता। बाहर कचहरी में किसीको कानोकान भी खबर नहीं पड़ती। बच्चों को ठीक समय पर खाना मिल जाता। जमाइयों को घड़ी के कांटे के साथ समय पर चाय मिलती। खुद सेन मोशाई के खाने के समय में भी एक मिनट का अन्तर नहीं पड़ता। सात कटोरियों में चर्व-चोष्य सभी कुछ उसी तरह। वह इस सबसे अलग निर्विकार भाव से अपने स्वर्ग में रहे आते।

कमला दत्त ने जब से होश सभाला, इसी गृहस्थी में पलकर बड़ी हुई। इसी वातावरण में कितने ही साल गुजार दिए। एक-एक करके हमउम्र सभीकी शादी हुई, जमाई आए, फिर जच्चाघर में जाकर वे लोग समय से प्रसव भी कर आईं।

लेकिन पता नहीं क्यों, इस घर के गले पड़े रिश्तेदारों के साथ कमला का कभी कोई साम्य नहीं रहा। कमला दत्त की उम्र बढ़ने के साथ ही आह्लादी बहू ने बुलाया, पहनने को साड़ी दी, गहना दिया। घर के और बच्चों ने भी उसे स्नेह दिया, श्रद्धा दी।

एकाध बार आह्लादी बहू ने कहा, "हां, अब तो कमला सयानी हो गई है। उसके भी शादी-ब्याह की कुछ व्यवस्था करो।"

सेन मोशाई ने कहा, "कमला इस घर की लड़की नहीं है; अतः उसके लिऐ तुम लोगों को कुछ सोचना नहीं है।"

वह स्वयं अपने पास बैठाकर उसे पढ़ाते। साथ ही कभी-कभी कहते, "तुम इस घर की कोई नहीं हो, इसलिए तुम इस घर की कोई भी चीज मत अपनाओ। तुम्हारे लिए सारे रास्ते खुले हैं। अपनी इच्छा के अनुसार ही तुम्हें अपना जीवन गढ़ना है, यही है मेरी इच्छा।"

कमला ने उस समय प्राइमरी परीक्षा पास की थी।

बोली, "मैं और पढ़ूंगी।"

सेक्रेटरी ने कहा, "ठीक है, पढ़ाई-लिखाई लिए ही रहोगी, तब इस स्कूल को मैं जूनियर स्कूल कर दूंगा।"

इसी तरह कमला भी बड़ी हुई और साथ ही स्कूल भी। कमला दत्त के साथ-साथ स्कूल भी आज इस अवस्था को आ पहुंचा है। अब कमला दत्त

कहां जाए ? इसलिए स्कूल को और बढ़ाओ। कॉलेज कर दो।

आदिनाथ ने पूछा, "इसके बाद ?"

"इसके बाद उनका कहना है कि इसे यूनिवर्सिटी कर देंगे।"

आदिनाथ, "फिर ?"

कमला दत्त ने उसके चेहरे की ओर ताका। फिर कहा, "फिर क्या, मैंने तो शुरू कर दिया। एक दिन और कोई आकर इसका भार लेगा, मैं हूं ही कितने दिन ! मेरा काम अच्छी तरह से चलेगा, यही सोचकर मुझे शान्ति मिलेगी। इसके अलावा आप तो जानते ही होंगे, बैंडिल काफी पुरानी जगह है। एक समय और भी अच्छी जगह थी, जब कलकत्ते मे ईस्ट इंडिया का राज्य था। वहां से अंग्रेज लोग छुट्टी बिताने और स्वास्थ्य-लाभ करने यहां आते थे। यहां पोर्तुगीज़ लोगों का अड्डा था। अभी भी कितनी ही देखने लायक चीज़ें हैं—आपने देखा है ?"

"न, मैंने कुछ भी नही देखा है।"

"यह क्या, इतने दिन से हर शनिवार को आ रहे हैं, किराया खर्च कर रहे हैं, और बैंडिल ही नही देखा ?"

आदिनाथ ने कहा, "देखने का समय ही कब मिला, यहा तो मैं दो ही चीज़ें पहचानता हू—बैंडिल स्टेशन और आप लोगों का यह स्कूल। इसके अलावा और सब मेरे लिए अनजान है।"

"सुकुमारी के साथ किसी भी दिन तो देख सकते है ?"

"तब तो हुआ, सुकुमारी भी तो मेरी ही तरह यहां नई है, दिखला सकती है तो सिर्फ एक आप। सच, मेरी देखने की बड़ी इच्छा है। दिखलाएंगी ?"

कमला दत्त चुप रहीं।

आदिनाथ ने कहा, "ओह, समझा, शायद सेक्रेटरी नाराज़ होंगे।" फिर ज़रा रुककर कहा, "आज ही चलिए न, आज तो सेक्रेटरी भी यहां नहीं हैं।"

कमला दत्त ने कहा, "इससे तो आप अगले शनिवार को आएं तो अच्छा है।"

"उस दिन भी शायद सेक्रेटरी नही रहेंगे ?"

"नही, उस दिन भी उन्हें कलकत्ते जाना है।"

"ऐसी बात है क्या ?"

"हां।"

"तब ठीक है, उसी दिन आऊंगा।"

आदिनाथ धीरे-धीरे कमरे के बाहर आकर खड़ा हुआ। कमला दत्त भी दरवाजे के पास आकर खड़ी हो गई।

हठात् घूमकर आदिनाथ ने कहा, "लेकिन आपने मेरी उस बात का जवाब दिया ही नहीं !"

"कौन-सी बात ?"

"वही कि मैं सुकुमारी से छिपाकर यहां आता हूं, यह आपने कैसे जाना ?"

इसपर कमला दत्त हंस पडी, बोली, "सुकुमारी ने मुझे चिट्ठी जो लिखी है।"

"आपको चिट्ठी लिखी है ?"

"हां, उसमे आपके बारे में भी लिखा है कि आप बड़े व्यस्त हैं। उससे मिलने तक का समय नही निकाल पाते।" फिर जरा रुककर बोली, "व्यस्त आप कितने हैं, यह तो दीख ही रहा है। एक के बाद एक, दो शनिवार को मेरे पास आने का समय आपको मिल गया।"

"लेकिन आप सुकुमारी को यह सब न लिख दीजिएगा।"

"लेकिन मैंने तो चिट्ठी का जवाब कभी का दे दिया।"

"ओफ, तब तो सर्वनाश हो गया।"

"क्यो, इस बात के लिखने से क्या वह खूब नाराज होगी ?"

"नाराज नही होगी ?"

"लेकिन इसमें नाराज होने की क्या बात है ? आपने क्या कोई अन्याय किया है ?"

आदिनाथ ने कहा, "अन्याय करूं या न करूं, सुकुमारी ठहरी औरत, गलत समझेगी, रोएगी-धोएगी। देखिए तो, आपने क्या आफत खड़ी कर दी !"

"गलती का फल तो आपको भोगना ही होगा; लेकिन लगता है,

आप ट्रेन फेल करेंगे।"

आदिनाथ पावदान पर पांव रख रहा था, लेकिन फिर लौटा, कहा, "तब अगले शनिवार को आ रहा हूं न?"

"बात तो यही तय हुई है।"

"लेकिन सुकुमारी को बिना बतलाए ही आऊं···"

"क्यों, आप कोई बुरा काम तो कर नहीं रहे हैं न? कहकर ही आइएगा।"

आदिनाथ ने कहा, "यदि न कहूं तो आपत्ति है?"

इस बार कमला दत्त सचमुच गम्भीर हो गई। बोली, "हां, आपत्ति है। बिना कहे आपको भी यहां आने की जरूरत नहीं है। अच्छा होगा, अगर आप सुकुमारी को भी साथ लेकर आए।"

कमला दत्त ने दरवाजा बन्द कर लिया।

अगले शनिवार को कमला दत्त तैयार ही थी। सब काम खत्म करके बैठी थी। बाहर गाड़ी की आवाज हुई, वह उसने सुना। उसके बाद हर क्षण वह आदिनाथ की प्रतीक्षा कर रही थी।

कमला दत्त नजर नीचे किए थी। पांवों की आवाज सुनकर नजर उठाकर देखा, आदिनाथ—हंसी से भरा चेहरा, दोनों हाथ जोड़े।

कमला दत्त ने कहा, "आप तो अकेले हैं? सुकुमारी कहां है?"

आदिनाथ ने कहा, "सुकुमारी नहीं आई।"

"आप सुकुमरी से कहकर तो आए हैं?"

आदिनाथ चुप रहा। एक बार तो डर भी लगा। अगर सच-मुच ही गुस्सा होने लगे—इस औरत का विश्वास नहीं है।

कमला दत्त ने कहा, "नहीं न, लगता है, आपके कारण सुकुमारी काफी परेशान रहती होगी।"

आदिनाथ ने जैसे छुटकारे की सांस ली अब जाकर वह निश्चिन्त होकर कुर्सी पर बैठा। बोला, "जिसकी परेशानी, वह परेशान होगी, आपको किस बात का डर है?"

कमला दत्त ने उसी तरह हंसकर कहा, "डर नहीं, किन्तु भरोसा भी

नहीं है। आप लोग लड़कियों के साथ इस प्रकार आंख-मिचौनी खेलेंगे, उससे समाज का क्या कल्याण होगा? औरतों को इस प्रकार हीन मानने से देश का कोई भी उपकार नहीं होगा। नहीं तो क्या मैं अपनी इच्छा से यहां स्कूल में पढ़ी हूं! बिना औरतों के कोई आशा नहीं है। तभी परमहंस देव ने स्त्री-गुण का समर्थन किया था। नारी भाव से साधना की, मातृ-भाव का प्रचार किया। स्वामी विवेकानन्द ने भी लड़कियों के लिए मठ की व्यवस्था की है।"

आदिनाथ थोड़ी देर तक चुपचाप कमला दत्त की बातें ध्यान से सुनता रहा। फिर बोला, "मैंने सोचा था कि आप शायद मुझे क्षमा कर देंगी।"

"यह आशा आप कैसे कर पाए? शायद मुझे भी और चार लड़कियों की तरह समझा था?"

"वह जानता हूं, लेकिन फिर भी सुकुमारी को लिखी चिट्ठी देखकर मेरी यह धारणा हुई।"

कमला दत्त ज़रा नर्म हो गई। हंसकर कहा, "शायद सुकुमारी ने वह चिट्ठी आपको पढ़ा दी?"

"हां," आदिनाथ ने कहा, "सुकुमारी मुझसे कुछ भी नहीं छिपाती। खैर, वह सब जाने दीजिए, लेकिन मेरे यहां आने के विषय में आपने उसे कुछ नहीं बताया, उसके लिए असंख्य धन्यवाद।"

"लेकिन इस बार बताना ही होगा। आपको बार-बार क्षमा करना ठीक नहीं।"

आदिनाथ ने जैसे घबराकर कहा, "दुहाई आपकी, कुछ दिन का समय दीजिए, कम से कम तीन महीने का।"

"तीन महीने?"

"तीन महीने के अन्दर कुछ न कुछ ठीक करना ही है।"

"क्या ठीक करना है?"

"देखूं, अभी इस बारे में कुछ नहीं कह पाऊंगा, [illegible] शनिवार सुकुमारी को लेकर ही आऊंगा। कम से कम तीन [illegible] का समय तो दीजिए ही।"

"लेकिन [illegible]

आता होगा नहीं।"

"तब और किसी दिन।"

"इतनी जल्दी किस बात की है? और दो दिन बाद तो स्कूल भी खुल जाएगा, तब तो आपको सुकुमारी के लिए आना ही होगा।"

"लेकिन आपने मुझे वचन दिया था, आज यहां की दो एक जगह दिखलाएगी।"

कमला दत्तने थोड़ी देर कुछ सोचा। जरा आनाकानी की। फिर बोली, "बेकार की बात करते-करते काफी देर हो रही है, लेकिन जब आपसे कहा है तो चलिए, और देरी करने से क्या फायदा!"

कमला दत्त उस दिन पहली बार आदिनाथ के साथ बाहर निकली। बोली, "चलिए, कपड़े अब नहीं बदलूंगी। यह तो मेरा अपना ही शहर है। इसी तरह ही जाऊंगी, लेकिन अधिक देर बाहर नहीं रुक पाऊंगी।"

आदिनाथ की लाई किराये की गाड़ी खड़ी ही थी। कमला दत्त ने अन्दर जाकर हाथ-मुह धो सज लिया। इसी बीच जूड़ा भी जरा संभाल लिया था।

"चलिए, जब छोड़ नहीं रहे हैं तो हो आए।"

कालो की मा ने आकर पीछे से दरवाजा बन्द कर दिया। गाड़ी का दरवाजा खोलकर कमला दत्त ने एक पाव उठाया, दूसरा अभी भी जमीन पर ही था। दाहिने पैर के खिचाव से साड़ी जरा हट गई थी। अचानक आदिनाथ बायें पैर के नीचे का भाग देख पाया। हलकी-हलकी अलता की रेखा अभी भी दिखलाई दे रही थी। देखकर आदिनाथ ने कहा, मुझे वह श्लोक याद आया :

> दीर्घा सुदीर्घनयना वरसुन्दरी जा
> कामोपभोगरसिका गुणशीलयुक्त।
> रेखात्रयेण विभूषिता कण्ठदेश।
> सम्भोग केलिरसिका किल शंखिनी-सा॥"

रतिमजरी की शंखिनी नायिका से हूबहू मिल रही थी। लग रहा था कि यह औरत पत्नी के रूप में, मां के रूप मे, बहन के रूप मे दृष्टि से

योग्य ठहरेगी। किसी भी पुरुष का घर वह उज्ज्वल कर सकती है। गृहस्थी बसाने पर एक कुशल गृहिणी होगी। लेकिन लगा कि यह सब होने का नहीं है। साथ ही सारी बातें भी न जाने कहां घुल-मिल गईं।

गाड़ी में बैठकर कमला दत्त ने ठीक से जंगले-दरवाजे बन्द कर लिए। फिर पूछा, "कहिए, पहले किधर जाएंगे?

आदिनाथ ने कहा, "जहां आप पहले ले जाएं। आज तो अपने को मैंने आप पर ही छोड़ दिया है।

"चलिए, पहले जुबली ब्रिज की ओर चलें। इसके बाद आपको वही पोर्तगीज गिर्जा दिखलाऊंगी।"

आदिनाथ ने कहा—सोचो कि एक गाड़ी में दो जने बैठे हैं। मुझे तो जानते ही हो तुम। तरह-तरह की लड़कियों के साथ मेरा घनिष्ट परिचय रहा है। रतिमंजरी के अनुसार पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी सभी तरह की लडकियों के साथ लक्षण मिलाकर बातचीत भी की है। एकसाथ, एक कमरे में, एक टैक्सी में दिन रात, दुपहर, सध्या बिताई है। ऐसी बात नहीं है कि शंखिनी नारी मैंने पहले देखी नहीं थी, लेकिन जो मिली, वह पूरी शंखिनी नहीं थी। थोड़ी पद्मनी, तो थोड़ी शखिनी, अथवा चित्रिणी के लक्षण—मतलब के मिक्सचर। लेकिन यह कमला दत्त ही एक ऐसी थी, जिसे पूरी तरह से शखिनी कहा जा सके।

कितने दिन, कितने साल पहले की बात कह रहा हूं। आज कमला दत्त को वे सब बातें याद नहीं हैं, लेकिन मुझे एक-एक घटना साफ याद है।

आमने-सामने बैठे चुपचापजा रहे थे। कमला दत्त को वास्तव में ऊबना चाहिए था, लेकिन हुआ ठीक उलटा। मैं ही जैसे ऊब रहा था।

कुछ बोलना चाहिए, इसीसे बोला, "अगर आपके सेक्रेटरी वहां होते तो शायद आप इस तरह मेरे साथ घूमने नहीं आ पातीं, है न?"

कमला दत्त ने वैसे ही बैठे-बैठे कहा, "वह तो मेरे अच्छे के लिए ही कहते हैं, जिस तरह सुकुमारी को आपके साथ मिलने को मना करती हूं। उसके भले के लिए ही तो।"

आदिनाथ ने कहा, "सुकुमारी की बात जाने दीजिए। अपनी ही कहिए।"

कमला दत्त गाडी में चढ़कर जैसे फंस-सी गई थी। बोली, "मेरी बात! मेरे बारे में क्या सुनना चाहते है—बाघ-निसुन्दिपुर में जन्म हुआ। जब काफी छोटी ही थी, बाबा एक दिन घर छोड़कर चले गए। पाच वर्ष की होकर सेन मोशाई के यहा आई। तब से बराबर उन्ही के पास पड़ी हुई हू। उन्होने जिस तरह चलाया, उसीको ठीक मानकर चलना सीखा। मन जो चाहता है, वह पाप है और मन जो नही करना चाहता, वही सही रास्ता है, यही समझती आई हूं। केवल काम और अध्यन मे मन को लगाए रखा। किसी भी ओर ध्यान देने का अवसर भी नही मिला। यही है सक्षेप मे मेरी कहानी, और क्या सुनना चाहते हैं?"

"लेकिन इस इतने बड़े ससार में आपने यह स्कूल-मास्टरी का ही रास्ता क्यों चुना?"

"क्यों? बहुत-सी औरतें स्कूल-मास्टरी करती हैं, सुकुमारी भी तो कर रही है?"

"सुकुमारी तो रुपये के लिए कर रही है। दूसरे के आसरे है। शादी होने पर छोड देगी। लेकिन आपके बारे में तो ऐसा नही है"।

कमला दत्त ने कहा, "मेरी भी तो एक तरह से वही स्थिति है।"

"क्या सच में वही बात है? आपके लिए तो सेक्रेटरी हजारों रुपये खर्च कर रहे है।"

"मेरे लिए, ऐसा क्यों कहते है? स्कूल के लिए कहिए।"

"लेकिन यह तो सभी जानते है कि स्कूल तो मात्र नाम को है। वास्तव मे आपको रखने केलिए ही सब कर रहे है। आपके लिए ही स्कूल को बड़ा किया। अब आपको और भी अधिक दिन पास मे रखने के लिए उसे कॉलिज बनाए दे रहे है।"

"उन जैसे आदमी का और जितने भी दिन साहचर्य मिले, मेरे लिए अच्छा है। उसीमें मेरा लाभ है।"

आदिनाथ ने कहा, "बुरा न मानें तो एक बात कहू।"

"कहिए।"

"लाभ आपका कुछ भी नही है, बल्कि सोलहो आना नुकसान ही है।"

कमला दत्त हसी, फिर बोली, "और लाभ शायद सिर्फ राममोहन

सेन मोशाई का है ? मेरे लिए हजारों रुपये खर्च करने में, मुझे खिला-पिलाकर आदमी बनाने मे, अपने खर्च से पढ़ाने-लिखाने में सारा लाभ सिर्फ उन्हींका है, मेरा कुछ नही ? यही है न आपका कहना"?

"ठीक ही समझी है।"

"लेकिन क्या मैं उनकी लड़की हूं या कोई रिश्तेदार ?"

आदिनाथ ने कहा, "आप उनकी अपनी लड़की नहीं हैं, यही तो लाभ है। उनकी रिश्तेदार भी नही है। यही तो खास बात है। अपनी लड़की अथवा रिश्तेदार होने पर वह इतना नही करते।"

"इसका मतलब ?"

"सेन मोशाई की अपनी भी लड़कियां हैं। नाते-रिश्तेदारों का तो कहना ही क्या ! उनमें से कितनों को उन्होंने लिखाया-पढ़ाया ? उनमें से कितनों के पीछे इतना रुपया खर्च किया है ? उन लोगों का तो समय से विवाह कर दिया, सभी अपने पति' बाल-बच्चो के साथ मजे से गृहस्थी चला रही है।"

कमला दत्त ने जैसे आज एक नई बात सुनी। उसने आदिनाथ की ओर इस तरह देखा, जैसे उसने कोई महान आविष्कार कर डाला हो। जरा देर बाद बोली, "सच ही तो, लेकिन क्यों ? आपको क्या लगता है ? मेरे ही नाम पर यह स्कूल, कॉलेज, यह आश्रम, यह त्याग—मैं क्या सचमुच ही उनकी लडकियो से बिलकुल अलग हू ? नही तो मेरे लिए इतना क्यो कर रहे है ?"

"क्यों कर रहे है, बतलाऊ ? नही, रहने दीजिए।"

कहकर आदिनाथ चुप हो गया। फिर बोला, "आपके साथ मेरा परिचय है ही कितने दिन का ! इतने कम परिचय में [illegible] जा सकती है। वैसे यही कहने को मैं आज आपसे [illegible] हूं। आप जो भी सन्देह करें, लेकिन विश्वास कीजिए [illegible] और कोई भी कारण नहीं है।"

कमला दत्त ने कहा, "नहीं, आप [illegible] क्यो करते है ?"

"वन के आजाद पंछी को [illegible]

है जिस लिए उसे दूध और दाना खाने को देता है, यह भी ठीक उसी लिए करते है ?"

इसीपर कमला दत्त ने कहा' "लेकिन मेरा स्कूल···उससे मुझे जो प्रेम है शायद आपको पता नहीं। मेरी कितनी साध की चीज़ है यह स्कूल ! इसे छोडकर मैं और कुछ सोच भी नही सकती।"

"ठीक ही कह रही हैं। पिंजरे का पक्षी भी तो सोचता है कि सोने का पिंजरा उसीका है।"

कमला दत्त काफी देर तक न जाने किन विचारो में खोई रही।

गाडी फट-फट करती हिचकोले खाती चल रही थी। गाड़ी के साथ कमला दत्त का मासल किन्तु सुडौल शरीर भी हिल रहा था, लेकिन जैसे उसका ध्यान किसी ओर भी नही था।

अचानक ऊपर से गाडीवान की आवाज आई, "बाबूजी जुबली ब्रिज आ गया है।"

आदिनाथ ने कहा, "उतरिए अब।"

बाहर दुपहर ढल चुकी थी। सामने विस्तृत गगा और उस पर था लम्बा-चौड़ा जुबली ब्रिज। सर-सर करती हवा बह रही थी, जो कमला दत्त की करीने से पहनी साड़ी को भी जैसे उड़ाना चाहती थी। गंगा के किनारे काफी चहल-पहल थी। युद्ध के कारण कलकत्ते से यहा काफी तादाद मे लोग आ गए थे। गाड़ी से उतरकर भी कमला जैसे खोई-खोई-सी हो रही थी।

आदिनाथ ने कहा, "चलिए उधर घास पर बैठें।"

कमला दत्त चुपचाप वहा जाकर बैठ गई।

पास ही बैठकर आदिनाथ ने कहा, "सुना है इस ब्रिज की लम्बाई बारह सौ फिट है। रेल-कम्पनी ने शायद इस पर नौ लाख रुपये खर्च किए हैं; लेकिन इतना बड़ा तो लग नहीं रहा है।"

कमला दत्त ने इसपर भी कुछ नही कहा।

आदिनाथ ने ज़रा देर के बाद फिर कहा, "यहा इतनी बार आया हूं, लेकिन आश्चर्य ! गंगा किनारे घूमने की इतनी अच्छी जगह है, यह तो पता ही नहीं था।"

लेकिन कमला दत्त ने इस बार भी कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर बाद बोली, "चलिए कही और चलें। यहां मुझे अच्छा नही लग रहा है।"

आदिनाथ ने हैरानी के साथ पूछा, "क्यो ?"

"यहा बहुत लोग है। स्कूल की कई लडकियों के अभिभावक यहां घूमने आते है। अगर किसीकी नजर पड गई तो ?"

"देख ही लेंगे तो क्या हुआ ?"

"नही," कमला दत्त ने कहा, "वह आप नहीं समझ पाएंगे। चलिए, और किसी जगह चलें।"

फिर वही गाडी, मगर इस बार दिशा दूसरी थी। थोड़ी दूर चलने के बाद कमला दत्त ने कहा, "यहीं पर गाड़ी रुकवाइए।"

गाडी रुकी। पहले आदिनाथ, फिर कमला दत्त दोनों उतरे।

सामने देखकर आदिनाथ ने कहा, "यह है शायद वह पोर्तुगीज गिर्जा जिसके बारे मे सुना है कि यह बगाल का सबसे पुराना गिर्जा है।"

वास्तव मे गिर्जा काफी पुराना था। काई लगी दीवारें। बड़े-बड़े पेड़। धूप-छाह की आंखमिचौनी-सी खेलता विस्तृत कम्पाउंड। हुगली के रास्ते आक्रमण कर मुगलों ने इसकी पुरानी इमारत नष्ट कर दी थी। यह बात सन् १६३० की है। फिर पता नही दिल्ली के बादशाह को क्या दया आई—उन्होंने ही खुद फादर डी-क्रूज को ७७१ बीघे जमीन का पट्टा लिख दिया। इसके बाद सन् १६६१ मे फादर डी-सेटी ने यह चर्च बनवाया। यहा कोई नही रहता। एकदम निर्जन जगह है।

गिर्जे में घुसते समय दरवाजे के पास एक जहाज का विशाल मस्तूल रखा था।

कमला दत्त ने कहा, "इस मस्तूल की भी एक कहानी है पता है आपको ?"

"कैसी कहानी ?"

"चलिए पहले किसी जगह बैठूं—फिर आपको वह कहानी सुनाउगी।"

आदिनाथ ने कहा, "कहां बैठेंगी ?"

"कही भी चलिए। पांव मे बड़ा दर्द हो रहा है। उस ओर ही आइए।"

उस ओर कई बडे-बडे पेड़ एक दूसरे मे लगे चुपचाप खड़े थे। उसके नीचे दोनों ओर सीढ़ियां थीं। सीढ़ियों के दोनों ओर ऊंची दीवाल थी, जिसपर काई की काफी मोटी परतें जम गई थीं। सीढ़ियों के ऊपर चबूतरा जैसा था, जहा पर थोड़ी बैठने की जगह थी। आगे-पीछे दीवाल होने के कारण वहां बैठकर किसी भी ओर कुछ भी देखना मुश्किल था। सिर के ऊपर था सब कुछ देखने वाला, गूगा साक्षी आसमान। बस और कुछ नही।

"जगह तो बडी अच्छी है, शायद आप पहले से जानती हैं ?" आदिनाथ ने कहा।

कमला दत्त ने कहा, "मैं कैसे जानूगी ! पहले क्या मैं कभी आई हूं यहां ?"

"कभी नही आई ? जबकि आप यहा इतने दिनों से हैं !"

"स्कूल के कामो मे ही फसे रहना पड़ता है। समय ही कहा मिलता है !"

आदिनाथ ने कहा, "कुछ अन्यथा न समझिएगा, एक बात पूछू ?"

"कहिए क्या है ?"

आदिनाथ ने कहा, "सारे दिन ही तो आपको स्कूल मे व्यस्त रहना पड़ता है लेकिन क्या आपकी एकान्तमे बैठने की कभी इच्छा नही होती ?"

कमला दत्त काफी आश्चर्य में पड गई। बोली, "क्यों निर्जनता मुझे जरा भी अच्छी नही लगती। चारों ओर सब लोग खूब हल्ला-गुल्ला करें, यही अच्छा लगता है।"

"फिर भी क्या आपने मन को लेकर कभी खेलने की तबीयत नहीं करती ? जिस समय खूब रिमझिम करती वर्षा हो रही हो, हृदय खाली-खाली नही लगता ? अथवा अर्ध-रात्रि को नींद टूटने पर अतीत, वर्तमान और भविष्य को लेकर जाल नही बुनने लगती ?"

कमला दत्त ने कहा, "वह सब क्यों करने लगी ? मेरा क्या सिर फिर गया है ?"

"तब छुट्टी के दिन खूब तेज बारिश होने पर क्या करती हैं ?"

"कमरे से बाहर जाकर देखती हूं । सूखे कपड़े अन्दर लाकर रखती हूं और…"

"और आधी रात को नींद टूटने पर ?"

"नींद टूटने पर चेहरे और आंखों पर पानी के छींटे लगाकर फिर सोने की कोशिश करती हूं ।"

"अगर फिर भी नींद न आए ?"

"तो चिराग गुल कर आंखें बन्द किए पड़ी रहती हूं ।"

"उस समय मन में कुछ नहीं आता ? कोई चेहरा पुरानी स्मृतियों के धुंधले चित्र अथवा बचपन की कोई घटना माता-पिता की याद अथवा जवानी के पहले दिनों के स्वप्न ?

"कभी-कभी मन मे आता भी है तो क्या याद करके रखती हूं ?"

आदिनाथ ने कहा, "शायद मन में रखने लायक कभी कुछ घटा ही नहीं, नहीं तो जरूर याद रहता, लेकिन याद रखने लायक क्या सचमुच आपके जीवन में कुछ घटा ही नहीं ? अच्छी तरह से याद कीजिए ।"

थोड़ी देर सोचकर कमला दत्त ने कहा, "नहीं सच में कुछ भी नहीं घटा ।"

आदिनाथ ने कहा, "आश्चर्य की बात है !"

"इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? सभी के जीवन में क्या उल्लेख योग्य घटना घटती है ?"

"सभी के जीवन में घटती है आपको छोड़कर सभीके जीवन में ।"

"आपके जीवन मे ऐसी कौन-सी घटना घटी है जो आपको हमेशा से याद है और अन्त तक याद रहेगी ?"

आदिनाथ और भी पास खिसक आया । बोला, "मेरे जीवन मे ? तो सुनिए आज जो बैंडिल के गिर्जा की सीढ़ियों पर बैठकर आपके साथ बात कर रहा हूं—यह घटना मैं कभी भी नहीं भुला पाऊंगा । यह घटना हमेशा मेरे मन में बसी रहेगी कमलादेवी !"

कमला दत्त का सारा शरीर जैसे सिहर उठा । अचानक उसने … नीचे झुका ली ।

आदिनाथ जैसे अपने से ही कहने लगा, 'हम लोगों का परिचय है ही कितने दिनों का ! देखा जाय तो आज का दिन लेकर मात्र दो दिन का ही परिचय है, लेकिन लगता है, जैसे आपसे बहुत पुराना परिचय है। पता नहीं यह सब कहना उचित है या नहीं—फिर भी आज के बाद मिलने पर भी इतनी घनिष्ठता से बात करने का अवसर शायद और नहीं मिलेगा। जब बूढ़ा हो जाऊंगा, आंखों मे जाली पड़ जाएगी, तब सिर्फ इतना ही सोचकर शान्ति पाऊंगा कि कमला दत्त नाम की नारी के साथ एक दिन बैंडिल के इस गिर्जा की सीढ़ियों पर बैठकर सन्ध्या के प्रकाश में थोड़ी देर जो आनन्द मिला वह और कहीं भी नहीं मिला।

कमला दत्त चुप ही रही।

आदिनाथ ने फिर कहा, "आपका यह स्कूल एक दिन बड़ा होगा। आपका यश और भी फैलेगा। उस समय शायद मैं यहां से काफी दूर बंगाल के बाहर किसी प्रान्त में अज्ञात और बुरी अवस्था में होऊं। कोई मुझे पहचानेगा नहीं, जानेगा नहीं। फिर भी मैं यही सान्त्वना लेकर बचा रहूंगा, मैं कमला दत्त को पहचानता हूं। उनके साथ बैठकर मैंने एक दिन अकेले में बातें की है। अपने काम का नुकसान करके वह एक दिन मेरे साथ यहां आईं, चाहे कुछ ही क्षणों के लिए ही। यही स्मृति मेरे हृदय मे हमेशा बनी रहेगी।"

कमला दत्त ने नजर नहीं उठाई। नाखून से दीवाल की काई खुरचती रही।

सिर्फ इतना ही कहा, "यही सब कहने के लिए क्या आप आज यहां आए हैं ?

आदिनाथ ने कहा, "क्या कहने आया था वह मैं उस समय नहीं जानता था। जानने पर भी मुझे इस समय याद नहीं है।"

कमला दत्त ने काई खुरचते-खुरचते ही कहा, "मुझ से मिल कर किसी को इतना आनन्द मिल सकता है मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी सच !"

आदिनाथ ने कहा, "और कोई पता है या नहीं, नहीं जानता; लेकिन मैंने पाया है, मेरी इच्छा पूरी हो गई है। मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

"कभी-कभी सोचती हू, घर-गृहस्थी तो सभी चलाती हैं, लेकिन मैं शायद चाहकर भी नहीं चला पाऊंगी। बचपन में लड़कियां गुड्डे-गुड़ियों का खेल करती हैं। गुड़िया की शादी करती हैं। गृहस्थी का खेल खेलती हैं। मुझे सेन मोशाई ने कभी वह भी नहीं करने दिया। कहते थे—मेरे लिये यह सब नहीं है—मैं अन्य लड़कियों से अलग हू।"

आदिनाथ ने कहा, "जरा भी अलग नही हैं—कसम आपकी, आप बहिन, पत्नी, मां जो भी हो—आप पर सब अच्छा लगेगा।"

कमला दत्त उस समय भी नाखून से चुपचाप काई खुरच रही थी। थोड़ी देर बाद कहा, "लेकिन मुझे तो बड़ा डर लगता है।"

"डर की क्या बात है! बहन बनने की कोशिश कीजिए, भाई पाएंगी; पत्नी होने की चेष्टा कीजिए, जरूर पति पाएगी, मा बनने की चेष्टा कीजिए, सन्तान भी मिलेगी। असल में उसके लिए आपको औरत होना पड़ेगा।"

कमला दत्त जरा मुस्कराई, फिर बोली, "मैं औरत नहीं तो क्या हूं?"

"आप हैं पिंजरे की चिड़िया," आदिनाथ ने कहा, "आप फिर से जंगल की आजाद चिड़िया होने की कोशिश कीजिए, ठीक हो पाएगी। आपका वह स्वरूप बहुत ही अच्छा होगा। सच, विश्वास मानिए।"

कहकर काई लगी दीवाल पर नजर जाते ही आदिनाथ अवाक् रह गया। इतनी देर से काई खुरचते-खुरचते न जाने कब कमला दत्त ने उसका नाम लिख डाला था। कमला दत्त को खुद ही खयाल नहीं था कि उसने क्या किया। लिखा था—आदिनाथ।

हठात् आदिनाथ एक काम कर बैठा। घप्प से उसने कमला दत्त का हाथ पकड़ लिया। बोला, "दीवाल पर आपने जो कुछ लिखा है, उसे आप मिटा नहीं पाएगी, किसी भी तरह नहीं।"

कमला दत्त भी अचानक नाम देखकर लज्जा से लाल हो गई। छीः-छीः, बात करते-करते न जाने कब उसने यह कर डाला! उसे खुद ही ख्याल नहीं था। वह आदिनाथ के हाथों से अपने दोनों हाथ ' नाम मिटाने के लिए बढ़ी।

बोली, "न-न छी-छीः, पता नही आपने क्या सोचा होगा—छीः !"

लेकिन आदिनाथ भी छोड़ने वाला नही था। कमला दत्त के दोनों हाथ पकड़कर बोला, "न कमलादेवी, वह आप किसी भी तरह नहीं मिटा पाएगी। वह मैं आपको किसी भी तरह नही मिटाने दूंगा।"

लज्जा से जैसे कमला दत्त की जान निकली जा रही थी। बोली, "छीः-छीः, कितनी शर्म की बात है !"

फिर जरा रुककर बोली, "न-न, वह मुझे मिटाने दीजिए। आदिनाथ—किसी भी तरह नही !"

कमला दत्त ने अचानक अपना हाथ खींचकर चेहरा ढंक लिया।

फिर बोली, "अगर मुझे नही मिटाने देते तो आप स्वयं ही मिटा डालिए।"

"नही कमलादेवी, किसी भी तरह नही।"

कमला दत्त अभी भी अपना चेहरा ढके थी। बोली, "लेकिन यह तो बतलाइए कि क्यों नही मिटाने देते ? सच, मुझे इस तरह लज्जित कर आपको क्या फायदा होगा ?"

"नही, वह नाम वहा उसी तरह रहेगा। यह जो एक मिनट के लिए आप 'नारी' बनी हैं, उसी बात की साक्षी रहेगा।"

"लेकिन आप जो है साक्षी।"

"बहुत दिनों बाद जब आपसे भेंट होगी, और जब आपको आज की बातें याद नही रहेंगी, उस समय मैं इस दीवाल को ही साक्षी मानूंगा।"

अचानक तभी कमला दत्त उठ खड़ी हुई। बोली, "चलिए, अब चला जाए।"

आदिनाथ ने भी कहा, "चलिए।"

गाड़ी मे बैठने के बाद सारे रास्ते में दोनों में कोई बात नही हुई। चलते-चलते थोड़ी देर में गाड़ी जाकर स्कूल के फाटक पर रुकी।

पहले आदिनाथ दरवाजा खोलकर खड़ा हो गया। फिर हाथ का सहारा देकर कमला दत्त को उतारा।

आदिनाथ ने पूछा, "अगले शनिवार को क्या मुझसे आने को कहती

है ?"

कमला दत्त न जाने क्या सोचने लगी। फिर धीरे से बोली, "अगले शनिवार को ?"

लेकिन उसी समय दोनों की एक-साथ नजर पड़ी—सेक्रेटरी राममोहन सेन दफ्तर के दरवाजे के पास खड़े थे। वह खड़े-खड़े उन्हीं लोगों की ओर देख रहे थे।

कमला दत्त उन्हें देखते ही फौरन नजर झुकाकर अन्दर की ओर चल दी।

और आदिनाथ! उसने उसी दिन पहली बार सेक्रेटरी को आंखों से देखा। अच्छी तरह से देखा। शास्त्रों में नायक के जो-जो गुण लिखे हैं, सब जैसे चेहरे पर स्पष्ट दीख रहे थे—दानशील, कृति, सुश्री, रूपवान, कार्यकुशल, लोकरंजक, तेजस्वी, पंडित और सुशील। चेहरे या दृष्टि में कहीं भी ईर्ष्या-भर्त्सना नहीं। आत्म-श्लाघारहित, क्षमाशील, गम्भीर स्वभाव, बलशाली, स्थिर और विनयी। सेन मोशाई के साथ शास्त्र में लिखे धीरोदात्त नायक के सभी गुण मिल रहे थे। बाहर से तो जैसे कोई भी फर्क नहीं था।

इसके बाद उसी गाड़ी से वह स्टेशन आया और कलकत्ते लौट गया।

लेकिन सेक्रेटरी कुछ भी नहीं बोले। एक बार यह भी नहीं पूछा कि कमला दत्त के साथ जो आए थे, वह सज्जन कौन थे।

कमला दत्त ने पूछा, "आपको आए क्या काफी देर हो गई?"

सेन मोशाई ने कहा, "नहीं तो, काम हो गया था, इसलिए चार बजे की ट्रेन से ही लौट आया।"

"नये साल के लिए अनुदान स्वीकृत हुआ ?"

"अनुदान तो स्वीकृत हो ही चुका था, विभाग से सिर्फ आदेश भेजने में देर हो रही थी। वही खुद कराके ले आया।"

इतना कहकर सेक्रेटरी अपने घर जाने को मुड़े।

कमला दत्त कुछ क्षण उस ओर ताकती खड़ी रही। फिर वहीं खड़े-खड़े बोली, "मुझसे कुछ कहेंगे क्या ?"

"नहीं।" कहकर सेक्रेटरी जैसे जा रहे थे, उसी तरह चलते गए।

लेकिन सिर्फ उसी दिन नहीं, फिर किसी भी दिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। उसके बाद कमला दत्त कितनी बार उनके पास हमेशा की तरह गई है। काम के प्रसंग मे तरह-तरह की बातें हुईं।

वह पूछते, "कुछ बेंचों के लिए ऑर्डर दिया गया था, क्या वे आ गईं?"

कमला कहती, "नही तो, कब देने की बात थी?"

इसी तरह के बहुत-से प्रसंग, लेकिन वह बात फिर कभी नही उठी।

घर के अन्दर जाते समय दरवाजे पर सेन मोशाई की छोटी लड़की मिण्टू मिल गई।

कमला दत्त ने पूछा, "क्यो री, तेरी मा क्या कह रही है?"

"मा तो सो रही है।" फिर हसकर कहती, "कमला दी, पता है, मा के बच्चा होगा?"

"हट किसने कहा?" कहकर उसे गोद में उठा लेती।

"सच कमला दी, मझली काकी ने कहा है।"

कमला दत्त कहती, "चल, तेरी मझली काकी के पास ही हो आऊं।"

आह्लादी मासी मा अभी भी उसी तरह सो रही थी। कमला दत्त को देखकर बोली, "ओ मा, यह क्या, उसे गोद में क्यों ले लिया? तेरे कपड़े खराब कर देगी।"

"करे न, कपड़े गन्दे होने से कौन-सी महाभारत अशुद्ध हुई जा रही है!"

आह्लादी मासी मा ने कहा, "ओ मां, आज तेरे मुंह से यह नई बात सुन रही हू। पहले तो तू कभी बच्चों को हाथ लगाती नही थी। और, ये कान की बाली क्या नई बनवाई हैं?"

"नई क्यो बनवाने लगी बेकार मे! ये बालियां तुम्हीने तो मुझे दी थी, याद नही है? बक्स मे पड़ी थी, उस दिन दीख गईं, सो पहन ली।"

आह्लादी मासी मां ने कहा, "अच्छा ही तो है, पहनना ही चाहिए। औरत की जात बिना गहने के सूनी-सूनी लगती है।"

उस प्रसंग को बदलने के लिए कमला दत्त ने कहा, "मासी मां, कैसी हो आजकल?"

आह्लादी मासी मा चित लेटी थी। यह सुनकर तकिए पर हाथ-पैर जरा और फैला दिए। बोलीं, "क्या बतलाऊ, न जाने कैसी अरुचि-सी हो गई है। पेट में कुछ भी नही जा पाता। पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था। मुंह में कुछ रखते ही कै हो जाती है। केवल चाय पर बची हू। लेकिन देख, घर मे इतने लोग है, चार बजने को हैं, अभी तक एक प्याली चाय मुझे नही मिली है। जरा तू इन लोगों का हाल देख।"

कमला दत्त कभी-कभी रसोई की ओर जाती। कहती, "मझली नानी! कहिए कैसी हो? क्या खबर है?"

मझली नानी उसकी ओर पटरा खिसकाकर कहतीं, "आओ बेटी! तुम लोग मजे मे हो अपनी पढ़ाई-लिखाई लिए। यहां तो आठ वर्ष की उम्र मे शादी हो गई। शख बजे, गीत गाए गए और जब दस साल की उम्र हुई, मा तालाब के किनारे ले गईं। हाथ की चूड़ियां तोड़ डालीं और सिर का सिन्दूर पोछकर रोने लगी। कहा—'अभागी के भाग्य फूटे' बेटी, पैंसठ की हो आयी, ससुराल क्या होता है, कभी जाना ही नही। पति किसको कहते है, मैं जान ही न पाई। उस समय लड़की होकर जन्म लेना ही पाप था बेटी!"

आजकल कमला दत्त सारे घर मे चक्कर काटती फिरती। छुटपन से वह इसी घर मे बड़ी हुई है, फिर भी जैसे आज हरेक चीज नई लग रही थी।

वह पूछती, "अरे मानू! तुम कब आई?"

सैक्रेटरी की बडी लडकी थी मानू। वह कहती, "ओ मां, कितने भाग्य की बात! कमला दी के दर्शन मिले। तभी तो मा को कहती हूं, कमला दी मजे मे है, न किसी के लेने में न देने मे। यहां तो उसकी तबीयत ठीक हुई, तो इसकी खराब, कुछ न कुछ लगा ही रहता है!"

"इस बार पूजा पर नही आई?"

मानू ने मुस्कराकर कहा, "तुम्हारे जीजा छोड़ें, तब तो। कहा—

'हर साल तो मां के पास जाती हो, इस बार मेरे साथ दार्जिलिंग चलो।' "

"ओह, तो दार्जिलिंग गई थी घूमने !"

चिलचिलाती धूप। दरवाजे-खिड़की बन्द कर कमला दत्त अपने कमरे में सो रही थी। अचानक घोर मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। कब मेघ छाए, कब टप-टप करके पानी गिरने लगा, उसे कुछ भी पता नहीं। फिर वह भयानक बारिश जो शुरू हुई, तो बन्द होने का नाम ही नहीं।

कमला दत्त को न जाने क्या हुआ, उसने खिड़की के दोनों पल्ले खोल दिए। बाहर जितनी दूर नजर जाती, सिर्फ पानी और पानी। बाहर आकाश, मैदान, पेड़-पत्ते सब कुछ पानी में सराबोर थे। धीरे-धीरे जैसे किसी ने कमला दत्त के चारों ओर एक भारी पर्दा डाल दिया हो। एक क्षण में ही उसे लगने लगा, जैसे वह अकेली है, एकदम अकेली। बड़ा अजीब लग रहा था। और आश्चर्य, उसी समय आंखों के सामने जैसे नाच उठी एक तस्वीर, एक चेहरा।

चेहरे के बारे में सोचने पर कमला दत्त ने दोनों हाथों से अपनी आंखों को अच्छी तरह से पोंछ डाला।

इसी तरह एक दिन फिर !

आधी रात को अचानक नींद टूट गई। वैसे ऐसा कम ही होता है। बिस्तर से उठकर कमला दत्त बाहर बाथरूम में जाकर हाथ-मुंह धो आई। तकिए में सिर घुसाकर फिर से सोने की कोशिश करने लगी, लेकिन बेकार। फिर चेहरे और सिर पर पानी के छींटे लगाए और आकर तकिए में सिर छुपाया, लेकिन नींद थी कि आने का नाम ही नहीं। बाहर अंधेरी घुप्प रात। सब कुछ निस्तब्ध। ऊपर, काफी ऊपर आसमान में शायद एक पक्षी उड़ा जा रहा था। अजीब-सा एक सांय-सांय शब्द कानों में आ रहा था। झींगुरों की तान अलग चल रही थी। कमला दत्त खिड़की के पास खड़ी-खड़ी यही सब देखने लगी। यही सब सुन रही थी। उसी समय—

ठीक उसी समय, आश्चर्य, अचानक एक चेहरा जैसे चुपचाप आंखों के आगे आकर खड़ा हो गया।

उस दिन भी कमला दत्त ने अपने दोनो हाथो से झट आखें पोंछने की कोशिश की।

लेकिन अगले शनिवार को उसे न जाने क्यो, डर-सा लगने लगा। आज अगर आदिनाथ न आए, तो ही अच्छा है। सिर्फ दो दिन आकर आदिनाथ ने उसे जैसे एकदम बदल दिया है। अब जैसे वह एक और ही कमला दत्त हो गई है। इन कुछ दिनों में उसने स्कूल के बारे में कम ही सोचा। स्वय बक्स मे निकालकर बालियां पहनी, फिर उतारकर बक्स में रख दीं। और अगर आदिनाथ आए ही तो सुकुमारी को साथ लेकर। सुकुमारी के रहने पर उसे कुछ साहस मिलेगा, नही तो आदिनाथ के साथ अकेले होने पर उसका हृदय धुक-धुक करने लगेगा। सारा शरीर जैसे सिहर उठेगा।

शनिवार की दुपहर जैसे खत्म ही नही होना चाहती थी। बारह बजे, एक बजा, दो, तीन, चार भी बज गए। आता तो अब तक आ जाता। इसके माने आज नही आएगा।

लेकिन आई एक और वस्तु—वह थी सुकुमारी की चिट्ठी।

सुकुमारी ने लिखा था—'कमला दी, आपकी चिट्ठी पाकर कितना आनन्द हुआ, कह नहीं सकती। आप अच्छी हैं, पढ़कर खुशी हुई। उन्हें आपकी चिट्ठी दिखलाई। जानती हैं, उन्होंने आपकी लिखावट की खूब प्रशंसा की। हम लोग खूब सिनेमा देख रहे हैं, लेकिन फिर भी कुछ अच्छा नहीं लगता। शनिवार के दिन वह काफी व्यस्त रहते हैं। उस दिन मुझसे मिल भी नही पाते। पिछले दिनों शनिवारों को सोचा था कि उन्हें लेकर आपसे मिलने आऊंगी, लेकिन उन्हें कोई बड़ा जरूरी काम था। बोले—बैंडिल नहीं जा पाऊंगा। मामा के यहां कामकाज से जरा भी छुट्टी नही मिलती। मैं नहीं थी, तब तक किसी को कोई तकलीफ नही थी। अब सभी को कुछ न कुछ हो गया है। पतीली चढ़ाने से जूतों की सिलाई तक सभी काम करना पड़ता है। पता नहीं इन सबसे कब छुट्टी मिलेगी! बारह तारीख को ही तो अपना स्कूल खुल रहा है न! ग्यारह

तारीख को तीन बजे की ट्रेन से उनके साथ पहुंचूंगी। मनीषा दी, माधुरी दी, लीला दी और सबकी क्या खबर है ? वे सब कब आ रही हैं ? कलकत्ते में रोज ही ब्लैक-आउट होता है। रात को बाहर निकलते डर लगता है। रास्ते की सभी बत्तियों पर काली टोपी लगा दी गई है। हर तरफ'' । जो भी हो, आशा है, अच्छी तरह होंगी। जल्दी ही मिलूंगी। इति।'

बारह तारीख को स्कूल खुला। फिर जैसे जीवन आया। झाड़ाई-पुंछाई होने लगी। चारों ओर फिर से शोर-शराबा शुरू हो गया। कुछ दिन के लिए नारी बनी कमला दत्त फिर प्रधानाचार्या थी।

सेक्रेटरी ने कहा, "छुट्टी के बाद ए० आर० पी० की कक्षा शुरू करनी होगी। शिक्षक आएगा। याद है न ?"

"कक्षा किस-किस दिन होगी ?"

"सप्ताह में एक दिन, शनिवार को, स्कूल की छुट्टी के बाद।"

ग्यारह तारीख को हड़बड़ करते सभी आ पहुंचे। वे सब काफी दूर-दूर से आए, लेकिन हाजिर सभी थे। यात्रा से थके होने के कारण सभी जल्दी-जल्दी खा-पीकर आराम करने लगे।

मनीषा सेन ने कहा, "कमला दी, मैं तो आपको पहचान ही नहीं पाई।"

कमला दत्त मुस्कराने लगी, बोली, "क्यों, क्या एक महीने में ही इतनी मोटी हो गई हू ?"

"मोटी क्यों, लेकिन आप पहले से काफी सुन्दर लग रही हैं।"

लीला, माधुरी—सभीने कहा, "सच कमला दी, आपका चेहरा बिलकुल बदल गया है।"

"लेकिन मुझमें ऐसा क्या बदला है, यह तो बतलाओ ?"

मनीषा सेन ने कहा, "वह तो नहीं कह सकती, लेकिन आप अब काफी सुन्दर दीख रही हैं।"

"पहले शायद बुरी दीखती थी ?"

"वह सब मुझे नहीं मालूम, अच्छी दीख रही हैं, इसीसे कहा।"

कमला दत्त ने तब हंसकर कहा, "शायद तुम लोगों की आंखें ही बदल गई हैं। जो कुछ देखती हो, सुन्दर ही दिखलाई देता है।"

सुकुमारी भी तीन बजे की गाडी से आ गई। मामा के यहा जाकर उसका शरीर अच्छा हो गया था। उसने नई चप्पल खरीदी है। नई मुर्शिदाबादी सिल्क की साडी खरीदी है और खरीदा है चमड़े का नया सूटकेस।

बिस्तर-बक्सा ऑफिस मे ही एक ओर रख दिया।

सुकुमारी आते ही उसे देखकर खुश-खुश बोली, "कमला दी, आप कितनी अच्छी लग रही है ! एक महीने से देखा नही, सच, क्या बतलाऊं, आप बहुत ही सुन्दर लग रही हैं !"

कमला दत्त ने कहा, "अच्छी तरह से तो थी ?"

ठीक उसी समय आदिनाथ कमरे मे आया। बोला, "नमस्कार !"

कमला दत्त ने भी दोनों हाथ जोडकर कहा, "नमस्कार !"

आदिनाथ की ओर देखकर सुकुमारी ने कहा, "अच्छा, तो तुम अब जाओ। तुम्हे काम है न, ट्रेन का समय हो रहा है।"

आदिनाथ चला गया।

सुकुमारी ने कहा, "मैं भी चलूं अब। उफ, ट्रेन मे कितनी भीड़ थी ! क्या बतलाऊं—बैठे-बैठे पीठ-पेट सब अकड़ गए हैं।"

कमला दत्त तब तक अपने काम में लग गई थी। फिर वही सब। फिर कक्षाओं में जाकर पढ़ाना, कौन झांसा दे रहा है, कौन पढ़ाई-लिखाई मे मन नहीं लगा रहा है, कौन बगीचे से फूल तोड रहा है, बगीचे की सफाई ठीक से हुई है कि नहीं, पीने का ताजा पानी भरा गया है या नही। फिर से वही अभिभावकों से मिलना। प्रकाशकों से सिर खपाना। फिर परीक्षा के पर्चे तैयार कराना। अध्यापिकाओं को वेतन बढ़ाने की दरख्वास्त। फिर रोज शाम को रिपोर्ट देने सेक्रेटरी के घर जाना। काम का कोई अन्त है ! सभी कुछ की जिम्मेदारी उसीके ऊपर जो है।

आह्लादी मासी मां कहती, "गर्मियो की छुट्टियों में तो फिर भी कभी-कभी चक्कर लगा जाती थी, आजकल तो दीखती ही नही है।"

मानू कहती, "आज जा रही हूं कमला दी !"

"यह क्या, अभी से चल दी ? उसी दिन तो आई थी !"

मानू कहती, "आपका तो पता ही नहीं रहता । फिर अपने जीजाजी को तो जानती हो···"

"शायद वह नाराज हो जाएंगे ?"

स्कूल में काम करते-करते भी सेक्रेटरी के घर की बातें याद आ जाती । मझली नानी खाना बनाते-बनाते कहतीं, "अरे, तुम लोग खूब मजे में हो, मेरा आठ वर्ष की उम्र में विवाह हो गया और दस साल की थी, तब विधवा हो गई । पैंसठ साल की उम्र हो गई । ससुराल और पति क्या होता है, कभी नहीं जाना !"

सुकुमारी काम के बीच ही दौड़ी आई । हाथ में थी एक अर्जी ।

बोली, "कमला दी ! एक दिन की छुट्टी की अर्जी दे रही हूं । दस्तखत कर दीजिए । देखिए, ना मत कीजिएगा कहीं !"

कमला दत्त ने हंसकर पूछा, "कहां जाओगी ?"

"उनके साथ एक जगह जाना है ।"

"कहां, सुनूं न !" कमला दत्त ने हंसते-हंसते पूछा, "शायद सिनेमा देखने ?"

"ओ मां, सिनेमा देखने के लिए छुट्टी क्यों लेने लगी ? एक जगह निमन्त्रण में जाना है ।"

"दोनों का एक साथ निमंत्रण ! शादी के निमंत्रण तो रात में होते हैं, दिन के समय किस चीज का निमंत्रण है ?"

"रात को तो कलकत्ते में ब्लैक-आउट रहता है । आजकल तो खाना-पीना सब दिन में ही होता है ।"

"तो रात को तो यहीं खाओगी न ?"

दरख्वास्त मंजूर कराके ही छोड़ी सुकुमारी ने । दोतल्ले पर कमला की कक्षा थी । फट-फट करती चली गई ।

हमेशा की तरह शनिवार को आदिनाथ के आने की बात है । सुकुमारी ने खास तौर से लिख दिया था—'शनिवार को छुट्टी ली है, तुम सुबह दस बजे की ट्रेन से आना । मैं तैयार रहूंगी ।'

लेकिन शुक्रवार की दुपहर को अचानक सब बदल गया ।

कमला दत्त ने सुकुमारी को बुलवाया। कालो की मा को बुलाकर कहा, "कालो की मां, जरा सुकुमारी दीदीमनि को बुला लाओ तो।"

सुकुमारी के आते ही कमला दत्त ने कहा, "इस शनिवार को तुम्हारा जाना नही होगा।"

सुकुमारी जैसे आसमान से गिर पडी, बोली, "वाह, खूब ! खुद ही तो कल मुझे छुट्टी दी ?"

"छुट्टी देने से क्या होगा ! आज सेक्रेटरी का नया आदेश आया है।"

"कैसा आदेश ?"

"ए० आर० पी० की कक्षाए होंगी। तुम सभी को उपस्थित रहना आवश्यक होगा। यह देखो !"

सुकुमारी जैसे क्षण-भर मे एकदम निराश हो गई। बोली, "वाह, मैंने उन्हें आने के लिए चिट्ठी लिख दी है। सब कुछ तैयार है। वे लोग हम लोगो की राह देखेंगे और आप कह रही है कि जाना नही होगा !"

"लेकिन मेरे पास रोने से क्या होगा, मैं कर ही क्या सकती हू !"

"कमला दी, आप जरा समझाकर कह दीजिए न ! आपके कहने से सब ठीक हो जाएगा…मेरी स्थिति जरा सोचकर तो देखिए !"

"वह मैंने सोच ली है।"

और कमला दत्त अपने काम में लग गई। थोडी देर बाद नजर उठाकर देखा, सुकुमारी अभी भी खड़ी थी। उसकी आंखें छलछला आई थी, जैसे अभी रो ही पडेगी।

कमला दत्त ने कहा, "तुम्हारा काम हो गया सुकुमारी ! तुम अब कक्षा में जाओ। लड़किया शोर मचा रही है।"

सुकुमारी को लगा—कमला दी का स्वर जैसे काफी गम्भीर है, उसी समय जैसे अचानक काम का भारी बोझा आ पड़ा हो। उसने कहा, "तब आप छुट्टी नही देंगी ?"

कमला दत्त ने काम करते-करते कहा, "एक बात बार-बार मत दोहराओ सुकुमारी ! मुझे और भी काम है।"

"पता है कि आपको काम है। यह भी तो आपका ही काम है। कह दीजिए नही है !"

"छोटी-सी बात के लिए इतना समय नष्ट करने को मेरे पास समय नही है। सेक्रेटरी की आज्ञा तुम्हे माननी ही होगी। सिर्फ सेक्रेटरी का ही नही, यूनिवर्सिटी का, सरकार का आदेश!"

सुकुमारी चुप रही। जरा रुककर कमला दत्त ने कहा, "सभी रहेंगे, मैं रहूगी, सेक्रेटरी खुद भी रहेगे, तुम ऐसी कौन-सी लाट साहब हो कि नहीं रह पाओगी? दो दिन नही घूमने से क्या हो जाएगा? नौकरी पहले है या घूमना? मैंने तो कितनी बार कह दिया है, यह सब ठीक नही है। यदि अपना भला चाहती हो तो यह आदत छोड़ो। उसमे कुशल नहीं है।"

सुकुमारी ने रोनी होकर कहा, "आज दस साल से मिल रही हू। अब क्या छोड़ी जा सकती है?"

"नौकरी अगर करना चाहती हो तो छोडना ही होगा। और अगर ऐसा नही करना चाहती तो जहा इच्छा हो, जाओ। मैं न देखने जाऊगी, न कुछ कहने।"

जोर की आवाज सुनकर मनीषा दी, मीरा दी तथा और कई अध्यापिकाएं भी आ गई। सभी खड़ी-खडी सुन रही थी। कुछ लड़किया भी लुक-छिपकर झाक रही थी।

सुकुमारी और कुछ न कहकर नजर झुकाए चली गई।

कमला दत्त ने सभी को सम्बोधित करके कहा, "मैंने तो सभी से कहा है—यह स्कूल सिर्फ एक सामान्य स्कूल ही नहीं है। इसे तुम लोग आश्रम मानो। यहां तुम, मैं, सेक्रेटरी सभी सेवा करने आए है। लड़कियों की सेवा, देश की सेवा, मनुष्यत्व-लाभ की दु साध्य साधना करनी है हम लोगों को। पहले सेवा, फिर स्वार्थ! यह अगर न हो सके तो स्कूल बन्द कर देना ही अच्छा है। कुछ शब्द रटाकर, उनके मतलब सिखलाकर परीक्षा में पास करा देने से न छात्राओं का मंगल होगा, न देश का हो। यह बात मैंने तुम लोगों को कई बार बताई है। आज फिर बता रही हू।"

शाम को कमला दत्त सुकुमारी के कमरे मे पहुची। सुकुमारी उस समय भी चेहरा फुलाए बैठी थी।

कमला दत्त ने हंसते-हंसते कहा, "शायद नाराज हो?"

सुकुमारी की आंखें अभी तक सूखी थीं, लेकिन इस बार बांध और नहीं रुका। बोली, 'आप सबके सामने मुझे इस तरह ज़लील करेंगी?"

कमला दत्त ने अपने आंचल के छोर से सुकुमारी के आंसू पोंछे। बोली, "मेरी तरह प्रधानाध्यापिका होतीं तो पता लगता कि मेरी ज़िम्मेदारी कितनी है।"

रोते-रोते सुकुमारी ने कहा, "उनके आने पर क्या कहूंगी?"

कमला दत्त ने हंसते हुए कहा, "और मैं ही सेक्रेटरी को क्या जवाब दूंगी? वह जब पूछेंगे, सुकुमारी वसु कहां है, वह क्यों नहीं आई, तो मैं क्या कहकर उन्हें चुप कराऊंगी?"

सुकुमारी जैसे अपने-आपसे कहने लगी, "मेरे मां-बाप नहीं हैं, इसीसे नौकरी करने आना पड़ा है। मां-बाप होने पर क्या मुझे इतनी दूर नौकरी करने आना पड़ता?"

कमला दत्त ने फिर से सुकुमारी के आंसू पोंछकर कहा, "नौकरी कर रही हूं, सोचने से तो खराब लगेगा ही। इसे तुम नौकरी क्यों सोचती हो? मैं क्या तुम लोगों के साथ उसी तरह का व्यवहार करती हूं? या और ही किसी के साथ करते देखा है? बाप-मां हमेशा तो किसीके भी नहीं रहते, मेरे ही हैं क्या?"

सुकुमारी को जैसे काफी सहारा मिला।

कमला दत्त ने कहा, "चलो उठो, खाने चलो। तुम नहीं खाओगी तो मैं भी नहीं खाऊंगी।"

उस दिन सुबह भी सेक्रेटरी ने कमला दत्त से पूछा था, "ए० आर० पी० की कक्षा में सभी रुक रहे हैं न?"

कमला दत्त ने सिर हिलाकर कहा, "हां, सभी रहेंगे।"

"हर एक कक्षा में खबर भेज दी थी न?"

कमला दत्त ने मौन स्वीकृति दी।

"सूचना पर सभी के हस्ताक्षर करा लिए थे न?"

इस बार भी कमला दत्त ने सिर हिलाकर ही कहा, "हां, हस्ताक्षर करा लिए हैं।"

लेकिन आदिनाथ तो यह सब कुछ जानता नहीं था। सुकुमारी की चिट्ठी के अनुसार शनिवार की सुबह वह दस बजे की ट्रेन से ही आ गया। हमेशा की तरह वह घोड़ागाड़ी साथ ही लाया था। प्रधानाध्यापिका के कमरे में जिस समय घुसा, वह मनोयोग से काम कर रही थी।

आदिनाथ ने खुद ही एक कुर्सी खींचकर बैठते हुए कहा, "नमस्कार मिस दत्त !"

"ओह, इतनी सुबह !"

"क्यों, सुकुमारी ने आपसे छुट्टी नहीं ली ! मुझे तो लिखा था कि उसने छुट्टी ले ली है !"

कमला दत्त ने उसी तरह गम्भीरता से कहा, "छुट्टी मिल गई थी, लेकिन बाद में अस्वीकृत हो गई।"

"यह तो मैं जानता नहीं था, लेकिन अचानक ऐसा क्यों हो गया ?"

"आज छुट्टी के बाद हम लोगों की नई ए० आर० पी० कक्षा प्रारम्भ हो रही है, इसीसे। हर शनिवार को होगी, सभी को रहना होगा। सरकारी आदेश है।"

आदिनाथ ने इसके बाद फिर अधिक कुछ नहीं कहा। सिर्फ कहा, "अगर पहले से जानता तो बेकार इतनी दूर नहीं आता।"

"वह तो है ही, सुकुमारी को चिट्ठी लिखनी चाहिए थी···"

"एक बार, ज़रा एक मिनट के लिए सुकुमारी को बुला सकेंगी क्या ?"

"ज़रूर !" कहकर कमला दत्त ने आवाज़ दी, "काली की मां ?"

वह शायद कहीं आस-पास थी नहीं। दो-तीन बार आवाज़ देने पर भी उसका कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला।

कमला दत्त बोली, "ज़रा देर बैठिए, अभी बुलवाए देती हूं।"

कुछ क्षण चुपचाप गुज़रे। उस दिन एकसाथ पोर्तुगीज़ गिर्जा देखकर लौटते समय सेक्रेटरी से आमना-सामना होने के बाद क्या हुआ, कुछ भी पता नहीं चला था। कमला दत्त को छोड़कर और किसीसे वह बात जानी भी नहीं जा सकती थी। सुकुमारी तो उस बारे में कुछ भी नहीं जानती थी।

अचानक आदिनाथ ने ही निस्तब्धता भंग की, "उस दिन आपने

इतना समय खराब कर पुराना गिर्जा, जुबली ब्रिज सब कुछ दिखलाया, उसके लिए आपको धन्यवाद भी नही दे पाया।"

कमला दत्त ने जरा आहिस्ते से कहा, "नही तो, उसमें धन्यवाद की क्या बात है! मैंने भी तो नही देखे थे, उस दिन देख आई।"

"उसके बाद भी क्या फिर कभी वहां गई हैं?"

"नही, फिर समय नही मिला।"

"मैं तो एक बार फिर जाऊगा।"

"फिर जाएगे?"

"हा, इस बार अकेला ही जाऊगा।"

"क्यो?"

"फिर कभी शायद जाने का सुयोग ही न मिले – इसके अलावा···"

जरा रुककर फिर कहा, "इसके अलावा मेरे लिए वह जगह स्मरणीय जो हो गई है।"

इस समय अचानक सुकुमारी आधी की तरह कमरे मे आई। बोली, "आ गए? ठीक ही हुआ, मैं जल्दी से जरा साड़ी बदल आऊं।"

कहकर फिर उसी तरह अन्दर चली गई।

इसी घटना से जितना आश्चर्य कमला दत्त को नही हुआ, उतना आश्चर्य आदिनाथ को हुआ, "आपने तो कहा था कि सुकुमारी आज जा नही पाएगी?"

कमला दत्त ने मन ही मन कुछ सोचा, फिर कहा, "हां, मैंने ठीक ही कहा है। उसका जाना आज नही होगा।"

"लेकिन वह तो तैयार होने गई है?"

तभी साडी बदलकर सुकुमारी फिर हाफते-हाफते आ गई, बोली, "कमला दी मैं जा रही हू।"

कमला दत्त ने स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखा, फिर कहा, "नही सुकुमारी, तुम नहीं जाओगी।"

"लेकिन आपने मेरी अर्जी मंजूर की है। मैं कोई गैरकानूनी काम तो कर नही रही हूं।"

"हा, गैरकानूनी काम ही कर रही हो।"

"न, मैं गैरकानूनी कुछ भी नही कर रही हूं।"

सुकुमारी की इतनी दृढ़ता देखकर कमला दत्त को जैसे आश्चर्य हुआ। उसने जरा नर्म होकर कहा, "सुकुमारी, अपना भला चाहती हो, तो मेरी बात सुनो। इसके बदले सोमवार या मगलवार को छुट्टी लेकर हो आना।"

सुकुमारी फिर भी जिद करने लगी, "नही कमला दी, मैंने जब एक बार इन्हे आने को लिख दिया तो मैं जाऊगी ही।"

कमला दत्त ने इस पर आदिनाथ की ओर घूमकर कहा, "आप क्या इसे सचमुच ही ले जाएगे ?"

आदिनाथ कुछ ठीक नही कर पा रहा था कि उसे क्या जवाब देना चाहिए।

कमला दत्त ने फिर कहा, "यह तो समझती नही है कि जिम्मेदारी क्या है ; लेकिन मुझ तो स्कूल चलाना पड़ता है। सेक्रेटरी का सख्त हुक्म है, सभीको उपस्थित रहना ही होगा। इसपर भी आप इसे ले जाएगे तो इसकी नौकरी जाएगी।"

सुकुमारी ने कहा, "लेकिन मेरी छुट्टी तो मजूर हो चुकी है।"

कमला दत्त ने आदिनाथ की ओर ही देखते हुए कहा, "छुट्टी स्वीकृत हो जाने पर भी आवश्यक कारण से उसे रद्द कर दिया गया है। इसपर भी अगर यह जाती है, तो फिर मेरी कोई जिम्मेदारी नही है।"

आदिनाथ चुपचाप खड़ा था।

सुकुमारी ने कहा, "चलो, ट्रेन का समय हो रहा है।"

कमला दत्त ने फिर कहा, "यह सब सुनकर भी क्या आप इसे ले जाएगे ?"

जरा सोचकर आदिनाथ ने कहा, "सुकुमारी अगर जाना चाहती है तो मुझे ले जाने मे कोई आपत्ति नही है।"

सुकुमारी ने कहा, "तब चलो न, देर हो रही है।"

अब तक आसपास काफी भीड जमा हो गई थी, लेकिन किसीकी परवाह किए बिना सुकुमारी फट-फट करती चली गई।

आदिनाथ को भी पीछे-पीछे जाना पड़ा। जाते समय कहता गया, "अच्छा, तो नमस्कार।"

मैंने पूछा—फिर ?

आदिनाथ ने कहा—फिर सुकुमारी को लेकर कलकत्ते आया, फिर हमेशा की तरह आखिरी ट्रेन से जाकर किराये की घोड़ागाड़ी से उसे स्कूल के दरवाज़े तक छोड़ आया।

लेकिन इतना समझ गया कि उस दिन जो कमला दत्त के साथ जुबली ब्रिज और पुराना गिर्जा देखने गया, पास बैठकर सध्या तक इतनी बातें कीं, उन सब बातों के बारे में उसने एक शब्द भी सुकुमारी को नहीं बतलाया। और गर्मी की छुट्टियों में मेरा बैंडिल जाना—उस बारे में भी सुकुमारी कुछ नहीं जानती।

लेकिन सुकुमारी से वे सारी बातें अधिक समय तक छिपी भी न रह पाईं।

कमला दत्त ने नहीं कहा। कहा एक और ही आदमी ने। लेकिन इस समय वह बात छोड़ो।

रात को लौटने पर कमला दत्त ने कहा, "तुम, देख रही हूं, मेरा नाम भी डुबाओगी और स्कूल का भी। आज ए० आर० पी० कक्षा में तुम्हें न देख सेक्रेटरी बुरी तरह से नाराज हुए। मुझे जो मन में आया, सो कहा।"

सुकुमारी ने कहा, "सेक्रेटरी के नाराज होने से क्या आता-जाता है ? आप नाराज नहीं हैं, यही काफी है।"

"लेकिन कह सकती हो, आखिर इतना आकर्षण किस बात का है ?" कमला दत्त ने पूछा।

सुकुमारी ने हंसकर कहा, "आप वह सब नहीं समझेंगी।"

कमला दत्त भी हंस पड़ी, "क्यों, मैं क्यों नहीं समझ पाऊंगी ?"

"आप अगर किसी को प्यार करती, तो जरूर समझ पाती..."

कमला दत्त खिलखिलाकर हंस पड़ी, लेकिन हठात् जैसे एक बात याद आ गई। पोर्तुगीज चर्च के बगीचे में आदिनाथ ने उस दिन कहा

था—'आप बहन, मा, पत्नी सब कुछ हो सकती हैं। आप पूरी तरह से नारी है।'

बात जैसे तीर-सी उसके हृदय मे लगी। कहा, " मैं भी तो तुम लोगों को चाहती हू। स्कूल की ये पांच सौ लड़कियां, सभी के अच्छे-बुरे का खयाल रखती हूं। वह भी तो एक तरह का प्रेम ही है। और भी महान, और भी उदार !"

सुकुमारी ने कहा, "मैं आपके साथ तर्क नही करूंगी कमला दी ! मुझे आप चाहे जितना समझाइए, कहां यह और कहां वह ?"

और वह ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी।

दूसरे दिन स्कूल की छुट्टी के बाद हमेशा की तरह गाड़ी आई। कालो की मा ने कहा, "चाय नही पी बडी दीदी ? चाय तो बन गई है।"

कमला दत्त ने कहा, "रहने दे, सेक्रेटरी के यहा जाकर ही पी लूंगी। अभी देर हो रही है।"

गाड़ी मे चढ़ने पर कोचवान ने यथारीति खिड़किया बन्द कर दी। रोज की पहचान वाला गाड़ीवान प्रधानाध्यापिका को रोज ही सेक्रेटरी के घर पहुंचाया करता था। कोच-बक्स पर चढ़कर उसने गाड़ी हाकना शुरू कर दिया, लेकिन मोड पर आते ही कमला दत्त ने हुक्म दिया, "उधर नही, दाईं ओर की सड़क से चलो।"

हुक्म की तामील करना ही गाड़ीवान का काम है। आपत्ति का कोई प्रश्न ही न था। चलते-चलते गाड़ी जब पोर्तुगीज़ चर्च के पास पहुंची, कमला दत्त ने हुक्म दिया, "रुको।"

दरवाजा खोलकर वह उतरी। गेट के पास वही जहाज का विशाल मस्तूल। उसके पास बगीचा। फिर काफी दूर गिर्जा का बड़ा हॉल। उस ओर न जाकर कमला दत्त बाईं ओर घूमी। चारों ओर उसी दिन की तरह नीरवता का साम्राज्य था। फिर भी कमला दत्त ने एक बार चारो ओर देख लिया—कोई देख रहा है या नहीं। धीरे-धीरे उसके बाद उन्ही सीढ़ियों के पास पहुंची। दोनों ओर वही काई लगी बिना छत की दीवालें और ऊपर चबूतरा।

चबूतरे के सामने दीवाल की ओर कुछ देर कमला दत्त देखती रही।

काई की मोटी पर्त पर उसके हाथ का लिखा वह नाम अभी भी स्पष्ट, उतना ही उज्ज्वल। उस दिन कमला दत्त ने अनजाने में वह नाम लिख डाला था; लेकिन आज अनजाने मे नहीं, पूरे होश मे ही उस दिन के लिखे नाम पर ही एक बार अपनी उंगली घुमाई। और भी स्पष्ट होकर चमक रहे थे चार अक्षर—'आदिनाथ।'

फिर उसी तरह निःशब्द सीढ़ी से उतर आई कमला दत्त और गाड़ी में चढ़कर दरवाजा बन्द कर हुक्म दिया, "चलो।"

सेक्रेटरी तैयार ही थे। कमेटी के और सदस्य भी आ चुके थे।

कमला दत्त भी एक ओर जाकर बैठ गई।

ब्रह्म सरल बाबू ने कहा, "कमलादेवी को जरा देर हो गई आज।"

तारक बाबू उस समय भी अपनी पुरानी बात को समझाने की कोशिश कर रहे थे, "विद्यासागर मोशाई ने देश की नारियों के लिए जो कुछ किया है, केशव सेन ने उसका एक भाग भी नही किया।"

इसपर सरल बाबू ने कहा, "तारक बाबू, आपने ब्रह्मानन्द की जीवनी ही नही पढ़ी है। सिंदूरपट्टी में गोपाल मल्लिक के घर जब ब्रह्मानन्द ने प्रवचन दिया, तब बड़े लाट और छोटे लाट दोनों उसे सुनने आए थे, यह क्या कम है?"

तारक बाबू ने कहा, "बात हो रही है नारी-शिक्षा की और आप ले आए बड़े लाट, छोटे लाट को!"

सरल बाबू बोले, "यदि ऐसा ही है तो जिस समय ब्रह्मानन्द विलायत से आए और 'इंडियन रिफॉर्म कमेटी' बनाई, उसमे प्रथम विषय तो स्त्री विद्यालय ही था।"

तारक बाबू ने कहा, "इधर भी तो देखिए, विद्यासागर महाशय के स्कूल की लड़कियों को लाने ले जाने वाली गाड़ी के दोनो ओर पता है, क्या लिखा रहता था। लिखा रहता था—कन्याप्येवं पालनीया शिक्षणीयति यत्नतः।"

तभी सेक्रेटरी ने कहा, "अच्छा, अब आप लोग जरा शान्त होइए। अपने असली विषय को उठाया जाए। आप लोग जानते हैं, हर संस्था की

सफलता के लिए सबसे आवश्यक वस्तु है अनुशासन। निष्ठा और नियमानुकूलता के बिना किसी भी संस्था, संस्था ही क्यों, किसी भी चीज़ की सफलता असम्भव है। चाहे विद्यासागर मोशाई हों, चाहे आप लोगों के ब्रह्मानन्द केशवचन्द्र—इस बारे में शायद सभी एकमत होंगे।"

सरल बाबू ने कहा, "वह तो है ही।"

सेक्रेटरी ने फिर कहना शुरू किया, "आज हम लोगों के इस प्रतिष्ठान मे नियमभगता का एक उदाहरण देखने मे आया। सुकुमारी बसु नाम की हमारी एक अध्यापिका ने मेरी आज्ञा का उल्लघन किया है।"

कमला दत्त चुपचाप सुन रही थी। सेक्रेटरी की बात सुन नही पा रही हो, ऐसा नही था; लेकिन चुपचाप सुनने के अलावा उसके लिए और कोई रास्ता ही नही था। कमला दत्त ने लक्ष्य किया था—हर शनिवार के दिन सुकुमारी को जैसे नशा चढ़ जाता। उस दिन वह ठीक से पढा भी नहीं पाती थी। आदिनाथ आता था। आकर सामने बैठता। नशे की खुमारी मे सारा दिन गुज़ारकर सुकुमारी जिस समय अकेली ही लौटती, तब भी जैसे वह खुशी और उत्साह से भरी होती थी। आदिनाथ की बात कर पाने पर सुकुमारी को और कुछ नही चाहिए।

आह्लादी मासी मां को भी तो देख रही है। शरीर इतना कमजोर है, हमेशा बीमार रही आती हैं, फिर भी जच्चाघर में जैसे चेहरा एकदम बदल जाता है।

जच्चाघर में आह्लादी मासी मां चित पड़ी रहती। दस दाइयां सेवा को लगी रहती। इस बार लडका हुआ है। सभी खुश हैं।

कमला दत्त पूछती, "क्या हाल है मासी मा?"

आह्लादी मासी मां चीं-चीं करती कहती, "देख बेटी, सौवड़ मे पड़ी हूं, कोई कुछ समझता ही नही है।"

"क्यों, हुआ क्या मासी मा?"

"सुबह से पड़ी-पड़ी चिल्ला रही हूं, लेकिन अभी तक बासी मुंह ही पड़ी हू। एक घूंट चाय तक नहीं उतरी है गले में। तू आई है। मेरे मुख देखना बेटी—इतना पैसा फूककर मुझे क्या आराम मिल रहा है?"

लेकिन कमला दत्त को लगता—लड़का होने के गर्व से आह्लादी

मासी मां की आंखें जैसे चमक रही हों।

इस बार मानू मायके से आई है। कमला दत्त से उम्र में काफी छोटी है। अभी उसी दिन तो शादी हुई थी।

"कमला दी, मजे मे तो हो ?"

"अरे मानू, कब आई ?"

मानू हंसते-हंसते कहती, "यही कल ही तो आई हूं।"

कमला दत्त पूछती, "अचानक आई ?"

फिर उसी तरह हंसते-हसते मानू ने कहा, "मेरे भी होगा।"

अचानक सेक्रेटरी ने पूछा, "कमला, तुम्हारी क्या राय है ?"

जीवन मे कभी कमला दत्त ने सेक्रेटरी राममोहन सेन की मर्जी के खिलाफ अपनी राय नही दी। आज भी सिर्फ सिर हिला दिया।

धीरे-धीरे फिर कमला दत्त गाड़ी से बोर्डिंग लौट आई। मनीषा, मीरा, माया सभी गप्प लगाने मे मशगूल थी। तरकारी बन रही थी। कमला दत्त को रखकर मीरा ने कहा, "काशीफल में क्या चने पड़ेंगे कमला दी ?"

बिना कुछ कहे कमला दत्त अपने कमरे मे चली गई।

साथ-साथ सुकुमारी भी आई। बोली, "आपकी क्या तबीयत खराब है कमला दी ?"

अचानक कमला दत्त जैसे गुस्से से फट पड़ी, "मेरे कमरे से निकल जाओ तुम ! जाओ, मेरे सामने से जाओ !"

कमला दी को अचानक क्या हो गया, सुकुमारी कुछ भी नहीं समझ पाई। बोली, "आपका सिर दबाऊं कमला दी ?"

कमला दत्त इस बार सीधी होकर बैठ गई। बोली, "मैं कह रही हूं, जाओ। सुनाई नही दे रहा है क्या ? हट जाओ मेरे सामने से ! गई या नही ?"

आदिनाथ ने कहा—मैं उस समय इस बारे में कुछ भी नहीं जानता था। शनिवार को कमला दत्त की इच्छा के विरुद्ध सुकुमारी को निकला था। फिर हमेशा की तरह घूमने जाता। इसके बाद के दो

बार मैं काफी व्यस्त रहा, कई काम थे। अपना व्यापार तो था ही, इसके अलावा रमा थी, रमला थी, सुतपा थी, सुप्रीति···कितनी ही थी। कहीं जाकर गाना सुनता, किसी के गहने की प्रशंसा करता और किसी के रूप की प्रशंसा करनी पडती। इसके अलावा किसी के पास जाकर पैसे की बात सुननी होती। समय मेरा खराब नहीं कट रहा था।

हठात् एक दिन सुकुमारी का तार आया। लिखा था—'तार देखते ही चले आओ। मैं कलकत्ते जाऊगी। मेरी नौकरी चली गई है।'

मुझे पता था कि ऐसा ही कुछ होगा। और यह भी कि इसके लिए जिम्मेदार सुकुमारी नही, कमला दत्त नही, बल्कि मैं ही था। उस दिन कमला दत्त के साथ घोड़ागाड़ी मे घूमने जाना ही मेरा अपराध था। मन ही मन जरा हसी भी आई।

मीरा ने कहा, "तू जाकर क्षमा माग ले न सुकुमारी! इसमें दोष क्या है? कमला दी तो हमारी मा की तरह हैं।"

सुकुमारी भी बच्ची नही थी। बोली, "क्यो, आखिर मैं क्षमा मागने किसलिए जाऊ?"

मनीषा दी ने कहा, "इस समय नौकरी जाना क्या अच्छी बात होगी? युद्ध के कारण सभी स्कूल तो बन्द हुए जा रहे हैं।"

माया दी ने कहा, "इसके अलावा हम लोगो को बैठाकर खिलाएगा कौन? एक महीना बीतने पर एक सौ तीस रुपये, हम लोगों के ही कौन··"

सरला दी ने कहा, "सो तो है ही। पूजा आ रही है। वहा सभी लोग आस लगाए बैठे हैं। अगर किसी को भी कुछ न दे पाऊ तो सभी के मुह चढ जाएगे, और देने से सब खुश।"

मनीषा दी ने कहा, "गृहस्थी के तो यही सब झमेले हैं। इसी वेतन मे से रुपये घर जाएगे, तब ग्वाला, धोबी, बनिया सब लोगो का बाकी चुकता होगा। नही तो नौकरी क्या कोई शौक से करता है!"

कालो की मा कमरे में चुपचाप आकर बोली, "दीदीमनि, क्या हुआ है?"

सुकुमारी बाल खोले बैठी थी। बोली, "किसका क्या हुआ कालो की मा ?"

कालो की मां ने कहा, "लगता है, कुछ हुआ है।"

"नही तो, कुछ भी तो नही हुआ है।"

"तब बड़ी दीदीमनि रो क्यों रही हैं?"

आह्लादी मासी मां लडकियों से पूछती, "हा री, कई दिन से कमला बेटी को नही देखा। शायद आजकल आती नही है?"

जच्चाघर से मासी मा अपने कमरे में आई है। छठी हो गई है। उसी तरह ही पड़ी रहती हैं। शरीर पर साड़ी भी ठीक से नही रह पाती। कहती, "पैसा खर्च करके खूब सुख मिल रहा है! अभी तक गले में चाय तक नही पड़ी है सब भूत हैं, भूत!"

उस दिन कमला दत्त आई। बोली, "मुझे बुलाया था मासी मां?"

आह्लादी मासी मा हमेशा की तरह चित पडी थीं। नौकरानी ने उनकी साड़ी ठीक कर दी।

मासी मां ने जरा मुस्कराकर कहा, "अच्छी लड़की है, मुन्ने को एक बार देखने भी तो नही आई! पता है, मुन्ना तुझसे खूब नाराज है। कैसे आंख फाड़-फाडकर देख रहा है! अभी से ही उसमें खूब बुद्धि है..."

इतने-से लडके की बुद्धि की कहानी और नही सुना पाईं।

बीच में ही बात काटकर कमला दत्त के चेहरे को देखकर अचानक आह्लादी मासी मां ने कहा, "ओ मां, तेरा चेहरा इतना भारी क्यों हो रहा है? क्या हुआ है?"

कमला दत्त ने कहा, "होगा क्या मासी मां, स्कूल के झझटों के मारे जान आफत में है।"

मासी मा ने गाल पर हाथ रखा। बोलीं, "ओ मां, कहती क्या है! सुन-सुनकर मुझे जलन होती है। सच, मेरी तरह हर साल एक होता तो पता लगता। मुझे दे दे न अपना स्कूल, मुझे छुट्टी मिले। देख न, कितना दिन निकल आया, अभी तक एक बार चाय भी नही मिली है!"

आह्लादी मासी मा के बाद जच्चाघर में मानू गई। रसोई में मझली

नानी कहने लगी, "देख न बेटी, क्या दुर्भाग्य है! अपना तो एक भी नहीं हुआ, दूसरों के बच्चे पैदा कराते-कराते जिन्दगी बीत गई।"

उस दिन भी कमला दत्त अपने दफ्तर में बैठी थी। अचानक आदिनाथ दरवाज़े से अन्दर आया।

नज़र उठाकर कमला दत्त ने कहा, "सुकुमारी को लेने आए हैं?"

आदिनाथ ने कहा, "हां, अचानक उसका तार पाकर मैं तो अवाक् रह गया।"

कमला दत्त ने कहा, "लेकिन क्या आज ही जाना जरूरी है? मेरा तो कहना है कि वह और भी कुछ दिन यहां रहती तो अच्छा था। सेक्रेटरी को मैं खुद समझाने की कोशिश करती।"

आदिनाथ ने ज़रा चुप रहकर कहा, "मैं कैसे कहूं! आप जो ठीक समझें, करें।"

"देखिए, उस दिन मैंने इतना कहा था, ए० आर० पी० कक्षा में हाज़िर रहना जरूरी है, लेकिन मेरी बात नहीं सुनी। सेक्रेटरी ने इस पर सख्त कदम उठाया। बोले—'इस तरह होने से तो कोई भी नियम-अनुशासन नहीं मानेगा।'"

आदिनाथ ने इस बार कमला दत्त की ओर सीधे होकर देखा। बोला, "यह तो बहाना है, असली कारण तो दूसरा है।"

कमला दत्त जैसे चकित हो गई, "वह क्या? असली कारण और क्या है?"

आदिनाथ ने कहा, "असली कारण तो आपको लेकर उस दिन घूमने जाना और फिर सेक्रेटरी का देखना था। यह आप भी अच्छी तरह से जानती है।"

कमला दत्त ने फौरन नज़र झुका ली। फिर बोली, "न-न, यह आपकी गलत धारणा है।"

आदिनाथ ने कहा, "नहीं, धारणा मेरी ठीक है। इसके लिए उत्तरदायी सुकुमारी नहीं है, आप भी नहीं है, सेक्रेटरी नहीं है—असल में गलती मेरी है, यह भी मालूम है। लेकिन उस दिन क्या मैंने सच में कोई गलत काम किया था, जिसके कारण एक तीसरे व्यक्ति को दण्ड मिल रहा है?"

कमला दत्त ने नजर झुकाए हीं कहा, "नहीं-नहीं, आप गलत मत सोचिए। और इसीलिए मैं आपसे कह रही हू कि आप उसे आज मत ले जाइए। दो-एक दिन छोड़ दीजिए। देखूगी, क्या कर सकती हूं।"

"कोशिश कर सकती हैं, लेकिन मुझे नही लगता कि कुछ फल निकलेगा।"

"ऐसा क्यों सोच रहे है, सुफल भी तो हो सकता है।"

"अगर हो तो अच्छा ही है। सुकुमारी पराये घर मे गले पड़ी आफत की तरह है। यहां तब भी आराम मे थी। आपका स्नेह मिला, वह आपका नाम लेते पागल है; लेकिन बीच मे मैंने आकर सब गोलमाल कर दिया·"

फिर जरा रुककर कहा, "उस दिन शायद आपको भी मेरी वजह से लाछना सहनी पड़ी।"

कमला दत्त ने कहा, "ऐसा मत कहिए। छीः, लांछना तो मुझे वैसे भी रोज सहनी पडती है। आज तक किसी भी दिन सेक्रेटरी ने प्रशंसा नही की। उनसे अपनी निन्दा के सिवाय और कुछ भी नही सुना।"

आदिनाथ हंसा। कहा, "वह आशा भी मत कीजिए, प्यार दिखलाने का हर एक का एक ही ढग तो नही है न !"

कमला दत्त चुप रही। कुछ भी नही कहा।

आदिनाथ ने जरा देर बाद धीमे स्वर मे कहा, "सुकुमारी के साथ-साथ शायद हुगली जिले से मेरा सम्पर्क खत्म हो गया। और आऊ भी तो किसलिए? यहां की सारी जगह तो देख ही चुका, अब तो कोई ऐसा कारण रहा ही नही।"

कमला दत्त ने इस बार भी कुछ नही कहा। थोड़ी देर बाद कहा, "लेकिन मैं आपको वचन देती हू, मैं वही करूगी, जिससे उसकी नौकरी रहे। सुकुमारी के यहां से चले जाने पर क्या मुझे ही अच्छा लगेगा ! लेकिन एक बात···" कहकर कमला दत्त रुकी।

"क्या बात? कहिए !"

"वह शायद गुस्से की वजह से मेरे साथ कोई भी सम्पर्क नही रखना चाहेगी, लेकिन बाद मे जरूरत होगी तो शायद एक अपील करनी होगी।

उसकी तरफ से आप अपील कर पाएंगे क्या ?"

आदिनाथ ने कहा, "जरूर कर पाऊंगा ।"

कमला दत्त ने कहा, "तब आप यदि अपना पता छोड जाए तो बडी दया होगी ।"

आदिनाथ ने कहा—उस दिन कमला दत्त के चेहरे की ओर देखकर मुझे लगा, पता लेने का यह कारण तो जैसे बहाना-मात्र था । असल में मैं जो हर शनिवार को वहां जाता था, उसे अच्छा ही लगता था ।

कमला दत्त ने तब तक सुकुमारी को बुलावा भेजा ।

आदिनाथ ने पॉकेट से कार्ड निकालकर कहा, "घर का नहीं, दफ्तर का पता यह है ।"

कमला दत्त ने कार्ड पर एक नजर डालकर उसे रख लिया ।

अभी भी सुकुमारी आई नही थी ।

अचानक कौन जाने आदिनाथ को क्या याद आया, उसने जंगले के बाहर देखकर कहा, "उस पुराने गिर्जे की ओर जाने का शायद आपको फिर समय नही मिला !"

कमला दत्त ने कोई जवाब नहीं दिया ।

आदिनाथ ने कहा, "एक दिन जाकर ही इतनी मुसीबत उठानी पड़ी, इसके बाद शायद उस ओर जाने की सोचेंगी भी नही ।"

लेकिन कमला दत्त चुप थी ।

आदिनाथ और भी कुछ कहने जा रहा था, तभी अचानक आंधी की तरह सुकुमारी कमरे में आई । रोनी-रोनी सूरत । कमला दत्त की ओर एक बार देखा भी नही । आदिनाथ के पास जाकर कहा, "जरा बैठो, मैंने सब ठीक करके ही रखा है—बस, जाऊंगी और आऊंगी ।"

कमला दत्त ने जरा गम्भीर गले से कहा, "सुकुमारी, आज न जाने से क्या तुम्हारा कोई हर्ज है ?"

सुकुमारी जाते-जाते थमकर खड़ी हो गई । फिर कमला दत्त की ओर घूमकर बोली, "लेकिन कमला दी, नौकरी तो मेरी चली ही गई है, अब मैं यहा किस मुंह से रहू ?"

कमला दत्त ने आदिनाथ की ओर देखकर कहा, "जरा आप कहिए

न, शायद आपकी बात मान जाए।"

लेकिन आदिनाथ को और कुछ नहीं कहना हुआ। सुकुमारी ने ही कहा, "मैं किसी की भी बात नही सुनूगी। कमला दी, यहा अब एक क्षण रुकना भी मेरे लिए अपमान की बात है।"

कहकर दफ्तर से फिर आंधी की तरह ही चली गई।

कमला दत्त ने आदिनाथ से कहा, "आप उसे जरा समझाइएगा। उसका मन काफी खराब हो गया है। आपका पता तो मेरे पास रहा ही, मैं आपको चिट्ठी लिखूगी।"

आदिनाथ ने कहा, "अगर ऐसा है तो मैं खुद ही आकर आपसे मिल जाऊगा।"

कमला दत्त ने कहा, "शायद उसकी आवश्यकता नहीं होगी।"

आदिनाथ ने जरा रुककर कहा—इसके बाद सुकुमारी को लाकर उसके मामा के यहा छोड़ दिया। मैं भी अपने धन्धे तथा दूसरे कामों में व्यस्त था। बीच-बीच मे सुकुमारी के लिए दो-एक नई जगह दरख्वास्त भेजता; लेकिन मनपसन्द जगह कोई नही मिल पाई।

रोज दफ्तर में पहुंचकर सबसे पहले देखता कि दफ्तर में कोई चिट्ठी आई है या नही। इधर युद्ध धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। सारे कलकत्ते मे ब्लैक-आउट था। शहर के ऊपर जापानी कई बार बम भी डाल गए थे। काफी लोग शहर छोड़कर बाहर भाग रहे थे।

हठात् एक दिन कमला दत्त की चिट्ठी मिली।

सुकुमारी ने कहा, "इस चिट्ठी का जवाब देने की कोई जरूरत नहीं है।"

मानने होंगे, उससे मैं इसके लिए लिखित स्वीकृति चाहता हूं।"

कमला दत्त ने कहा, "वह तो एपॉयण्टमेंट के समय हम लोग सभी से हस्ताक्षर करा लेते हैं।"

"तब उसका भार तुम ले रही हो?"

कमला दत्त ने कहा, "दूसरे के घर भार बनकर रहती है, दूर-सम्पर्क के एक मामा के घर। काफी लोगों की ऐसी ही हालत होती है। अचानक नौकरी छूटने पर बड़ी कठिनाई होती है।"

"तो ठीक है।" तब सेक्रेटरी ने कहा, "अगले शनिवार को मीटिंग बुलाओ। देखें, मीटिंग में क्या तय होता है!"

शनिवार को मनीषा सेन ने कहा, "यह सिर्फ आपकी वजह से ही हुआ।"

मीरा ने भी कहा, "सेक्रेटरी को अचानक इतनी दया? आपने शायद सुकुमारी के लिए काफी कहा है।"

इतने दिन तक सभी खूब भयभीत थे। सुकुमारी की तरह ही क्या दूसरी किसी का, और कोई नहीं तो, आदिनाथ तो है। एक पोस्टकार्ड लिखा और चला आया; लेकिन उनका कौन है?

इसके अलावा कलकत्ता दूर ही कितना है! लेकिन क्या दिनाजपुर यहीं है? पावना क्या यहीं है? खुलना क्या यहीं है? उन सभी के घर कितनी दूर हैं! आएंगे कहकर न आया ही जा सकता है और न जाओ कहकर जाया ही जा सकता है!

लेकिन सुकुमारी को फिर बुलाया जाएगा, सुनकर जैसे सभी को आश्वासन मिला।

लीला ने पूछा, "कमला दी, चिट्ठी चली गई?"

यहां तक कि कालो की मां को भी पता लग गया। पूछ रही थी, सुकुमारी दीदीमनि फिर आएंगी! क्यों दीदीमनि?"

रात को, करीब आधी रात के समय किसी-किसी दिन कमला दत्त की नींद खुल जाती। होस्टल में सब सो रहे होते। बगीचे की रात-रानी से सारा वातावरण महक रहा होता। दूर किसी के घर के पीछे झड-झुड बांस के पेड़, जैसे घर की छत का सहारा लिए आराम कर

रहे थे। तभी कोई पक्षी छत के ऊपर से कं-कं करता उड़ जाता। कमला दत्त भी तकिये को पलटकर फिर से सोने की कोशिश करती।

आह्लादी मासी मा मुंह से थू-थू करके चाय उगल रही थी, "थू, चाय है न क्या ! इतना पैसा खर्च करके खूब आराम मिल रहा है मुझे।"

भानू भी जच्चाघर से निकल आई है। इस बार आई है भानू। भानू ने कहा, "दार्जिलिंग से आई हूं कमला दी ! आते ही यह आफत ! एक के बाद एक तीन बार हो चुका ! और नहीं चलता इस शरीर से।"

आह्लादी मासी मां कहती, "तुम लोग तीन से ही घबरा गईं, मेरे जो…"

मझली नानी खाना पकाते-पकाते बात भी करती। कहती, "राधाकृष्ण हम लोगों के कुलदेव हैं न, उन्हीं राधा की कहानी कहती हूं, सुन ! भगवान तो काशीपुर जाकर तपस्या करने लगे—महामाया की तपस्या। क्या कठोर तपस्या थी वह भी ! भूख नहीं, प्यास नहीं, तपस्या करते-करते हजारों साल कब निकल गए, वासुदेव को खबर भी नहीं लगी। फिर…"

"हजार वर्ष क्या कोई रह सकता है ?" कमला टोकती।

"रहते हैं री, रहते हैं ! वह कोई तुझ जैसे मनुष्यों की बात है ? नहीं, यह देवताओं की बात है। हां, तो अन्त में महामाया ने आकर दर्शन दिए। कहा—'क्या चाहते हो वत्स ?'

"वासुदेव ने कहा—'मुझे सिद्धि चाहिए।'"

"महामाया ने कहा—'सिद्धि तो ऐसे नहीं होती वत्स, कुलाचार के बिना सिद्धि असम्भव है।'"

कमला दत्त बोली, "कुलाचार ! कुलाचार क्या मां ?"

"कौन जाने बेटी, कुलाचार माने क्या, कथावाचक पंडितजी से सुना था, सो याद है। हां, तो महामाया ने कहा—'वासुदेव, तुम लक्ष्मी को छोड़कर तपस्या कर रहे हो, उस तरह से सिद्धि नहीं मिलने की।'"

"तब वासुदेव ने पूछा 'लेकिन लक्ष्मी मिलेगी कहां ?'"

" महामाया ने कहा—'मेरे वक्ष पर ये जो माला है, ये माला ही मेरी दूती हैं। इनके नाम हैं—पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और हस्तिनी। इनमें से पद्मिनी नाम की माला लेकर व्रज में जाओ और राधा-राधा नाम लो। हां, तुम मथुरा जाओ वासुदेव, वहां तुम्हें पद्मिनी मिलेगी और सिद्धि भी। वह वासुदेव ही तो कृष्ण हैं !' "

कहते-कहते मझली नानी देगची से दाल चलाने लगीं।

कमला दत्त ने कहा, "रुक क्यों गईं, फिर वासुदेव को सिद्धि मिली ?"

"मिलेगी नहीं, राधा के साथ कुलाचार क्या मजाक है ! राधाकृष्ण ही क्यों, तूने इतना पढ़ा-लिखा है, लेकिन क्या सिद्धि मिलेगी तुझे ? नहीं, तेरा कुलाचार जो नहीं हुआ है।"

हां, तो चिट्ठी पाते ही बोरी-बिस्तर लेकर सुकुमारी फिर हाजिर हो गई। साथ हमेशा की तरह था आदिनाथ। कमला दत्त ने कहा, "मुझसे गुस्सा थी न ? बाबा, क्या गुस्सैल लड़की है !"

गाड़ी की थकी सुकुमारी झटपट अन्दर चली गई।

आदिनाथ भी जा रहा था। जाते-जाते एक बार रुका। बोला, "आपके कारण ही सुकुमारी की नौकरी बची है। मैं उसकी ओर से धन्यवाद देता हूं।"

हंसकर कमला दत्त ने कहा, "अब तो आपको फिर हर शनिवार को यहां आना होगा। अब तो और टाल नहीं पाएंगे।"

"लेकिन शनिवार को तो आप लोगों की ए० आर० पी० कक्षा होती है ?"

"वह कक्षा खत्म हो गई है, लड़कियों ने सीख लिया।"

"चलो, आफत टली ! लेकिन आपने यह क्या कहा ? शनिवार को, शनिवार आने में क्या मुझे कष्ट होता है ?"

कमला दत्त ने नजर झुकाकर कहा, "कष्ट आपको नहीं होता, यह मुझे मालूम है।"

वह क्या जानती और क्या नहीं जानती, यह प्रश्न मैंने फिर उस दिन नहीं उठाया। लेकिन धीरोदात्त नायक और शंखिनी नायिका के

विचित्र सम्पर्क के बीच जब मैं राहु की तरह आ गया और मुझे वहां से हटाना परम आवश्यक हो गया है—इसका प्रमाण दो दिन बाद ही मिल गया।

जो सूर्य रोज उदय और अस्त होता है, उसे हम देखकर भी नहीं देखते। उसे जैसे ऐसा करना ही चाहिए, क्योंकि वह हमारे लिए आवश्यक है और हमारा अधिकार है। हम लोगों के लिए हमारी आवश्यकता ही मुख्य है। सूर्य का उदय-अस्त होना जैसे गौण है।"

लेकिन एक होता है सूर्य-ग्रहण, क्योंकि वह व्यतिक्रम है और इसलिए वह हम लोगों को खटकता है।

कमला दत्त के जीवन में भी जिस दिन पहला सूर्य-ग्रहण लगा, जिस दिन मिथुन लग्न आई—उस दिन राममोहन सेन के खटका लगा, बोले—यह ठीक नहीं है, बेकायदे बात है। उनकी योजना पर आंच आए, यह बर्दाश्त के बाहर है, असम्भव है, राहु का विनाश करना ही होगा।

लेकिन राममोहन ठहरे धीरोदात्त नायक, इसलिए उन्होंने धीर और उदात्त रास्ता ही अपनाया।

इसके बाद गुजरे ही कितने दिन थे। अच्छी तरह से ठीक-ठीक भी नहीं हुआ था। एक दिन सेक्रेटरी ने खुद ही बुला भेजा।

सभी अवाक् थे। सेक्रेटरी के यहां की नौकरानी बुलाने आई थी। सुकुमारी बसु बंगला की शिक्षिका—उसे बुलाया है।

मीरा ने कहा, "अरे, सुनने में भूल हुई होगी, सुकुमारी नहीं, कमला दी को बुलाया होगा।"

मनीषा सेन ने कहा, "हां-हां, कमला दी को ही। सेक्रेटरी सुकुमारी को क्यों बुलाने लगे?"

फिर भी सुकुमारी ने पूछा, "ठीक से सुना है, मेरा ही नाम लिया था?"

नौकरानी ने कहा, "हां दीदीमनि, आपको ही। बड़ी दीदीमनि क्या मैं पहचानती नहीं हूं? दत्तबाड़ी के सात-आठ बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा किया है। मैं क्या आदमी नहीं पहचानती!"

कमला दी बाथरूम गई थी। आते ही सुकुमारी ने पूछा, "सेक्रेटरी मुझे क्यों बुला रहे हैं कमला दी?"

सब सुनकर कमला दी ने कहा, "बुलाया है तो जाओ, जरूर कोई काम होगा।"

सुकुमारी ने कहा, "आप साथ चलिए न !"

"न, यह अच्छा नही लगेगा। तुम्हें बुलाया है, तुम्ही जाओ। डर की कोई बात नही है, खूब अच्छे आदमी हैं। लगता है, शायद उसी मामले को लेकर बुलाया है, और क्या !"

सेक्रेटरी ने उस दिन कमला दत्त से कहा था, "इस बार उसे सावधान कर दिया है न ?"

कमला दत्त ने कहा, "मैंने तो कह ही दिया है। आप भी तो एक दिन बुलाकर कह दीजिएगा। आपकी बात जरा अच्छी तरह से सुनेगी।"

सेक्रेटरी ने सिर्फ कहा, "ठीक है, मैं ही कह दूंगा। किसी दिन मेरे पास ही भेज देना।"

आदिनाथ ने कहा—मनुष्य बाहर से कितना झूठा होता है, उसी दिन पता लगा। इस पर भी हम लोग बाहर से देखकर ही तो मनुष्यो के बारे में अपनी राय बनाते है। बाहर जो सम्पन्न दीखता है, अन्दर शायद उससे दरिद्र कोई नही होता। बाहर से जिसको सच्चा मानते हैं, वास्तव में उसके मिथ्याचार की कोई तुलना नही की जा सकती।

लेकिन इस पर भी दुनिया इसी तरह चल रही है—और भी न जाने कितने दिनो तक चलती रहेगी।

मैंने कहा—यह तो काफी पुरानी बात है।

—हां पुरानी बात। पुरानी है, क्या इसीलिए उसे एकदम भूल जाना चाहिए—ऐसा तो कोई नियम है नहीं शायद। इसके अलावा मेरे जीवन मे, सुकुमारी के जीवन में और कमला दत्त के जीवन मे इसी पुराने सत्य ने एक नया संकट खडा किया था !

आदिनाथ ने फिर कहा—तुम तो काफी दिन पहले कलकत्ता छोड कर चले गए थे और मैं भी व्यापार के लिए आसाम के जगलो मे काफी दिन खाक छानता फिरा हूं। यह मैं आज दृढ़ता के साथ कह सकता हू कि मनुष्य के बारे में मेरी जानकारी तुमसे कही ज्यादा है। औरतों के

पोर्तुगीजों पर नाराज हो गए थे। सालाना खिराज नहीं देते थे, जनता को जोर-जबर्दस्ती करके ईसाई बनाते थे, किसानों को पकड़-पकड़कर उनसे गुलामी करवाते थे। और भी न जाने क्या-क्या। शाहजहां ने कासिम खां को भेजा। कासिम खा ने आकर साढ़े तीन महीने तक युद्ध किया। शहर को तोड़-फोड़कर एकदम नष्ट कर डाला और असख्य पोर्तुगीज लोगो को कैदी बनाकर आगरा ले गया।

लेकिन इतना सब होने पर भी पोर्तुगीज को फिर भी जमीन मिली, जमीदारी मिली और वह भी खुद सम्राट से—क्यों ? सिर्फ एक आदमी के कारण। वह थे—'फादर डी-क्रूज'।

लोग कहते—हम लोगो के पादरी साहब साक्षात् अवतार है।

इधर कासिम खां के हमले से गिर्जा-विर्जा सब टूट-फूटकर खडहर हो गये थे। गिर्जा के अन्दर थी वर्जिन मेरी की एक पाषाण-प्रतिमा। लोग वर्जिन मेरी को गुरु-मां कहते थे। उन्हीं गुरु-मा को गोद में लेकर पादरी साहब का एक सौदागर मित्र गंगा में कूद पड़ा था; लेकिन अंत में हठात् डी-क्रूज साहब पकड़े गये। उन्हें मैदान में लाया गया। हुक्म हुआ कि फिरंगी साहब को पागल हाथी के सामने हाथ-पांव बाधकर डाल दो। इसने बहुत-से लोगों को ईसाई बनाया है।

एक पागल हाथी भी लाया गया, लेकिन पादरी साहब को देखकर न जाने उसकी मति खराब हुई या ठीक—पादरी साहब का बाल भी बाका नहीं हुआ। सिर्फ घुटनों के बल बैठकर हाथी फादर के ऊपर से सिर्फ सूड फिराने लगा।

आश्चर्य सुना जरूर था, लेकिन देखा आज ही।

लोगों ने नारे लगाए—पादरी साहब साक्षात् अवतार हैं।

वास्तव में अवतार ही थे। भक्त प्रह्लाद के दूसरे अवतार। चारों ओर से 'हरि बोल, हरि बोल' की आवाजों से वातावरण जैसे गूजने लगा।

उधर बादशाह के आदमियों की आंखें भी जैसे फटी पड़ रही थी। उन लोगों ने साहब को छोड़ दिया। केवल इतना ही नहीं, गिर्जा की सारी जमीन भी लौटा दी। फिर गिर्जे की प्रतिष्ठा हुई। लेकिन गुरु-मां कहा है ?

गुरु-मां आईं दूसरे दिन। हठात् रात को आंधी-पानी शुरू हो गया था। हृदय कंपाती बिजली गिरी, गंगा में समुद्र जैसी ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगीं। उस आंधी-पानी में भी गंगा न जाने किस रोशनी से जगमगा रही थी। दांतों-तले उंगली दबाए सभी ने देखा, गंगा के बीच से पादरी साहब गुरु-मां को लिए आ रहे हैं।

तभी से गुरु-मां की ख्याति बढ़ गई। गुरु-मां की मानता मानने से निःसन्तान को सन्तान मिलती। कैसा भी रोग हो, गुरु-मां का नाम लेते ही साफ। किसी का लड़का खो गया है, गुरु-मां की मानता मानो; दूसरे ही दिन घर लौट आएगा।

इस घटना के काफी दिन बाद समुद्र में एक दिन बड़े जोर का तूफान आया। कई जहाज फंस गए थे। सभी ने जान की आशा छोड़ दी थी और जल-समाधि के लिए अपने को तैयार कर रहे थे। तभी एक जहाज के कप्तान ने मानता मानी, यदि जहाज बैंडिल घाट तक सकुशल पहुंच गया, तो अच्छी तरह से गुरु-मां की पूजा करेंगे।

और आश्चर्य! तूफान रुक गया। जहाज भी बैंडिल आ पहुंचा; लेकिन कप्तान साहब पूजा करें तो किसी चीज से! कुछ न पाकर जहाज का मस्तूल ही उठाकर ले आए।

यही है वह मस्तूल?

गाड़ी मस्तूल वाली जगह पीछे छोड़ दूसरी ओर जा रही थी।

सुकुमारी को काफी दिन पहले की बातें याद आने लगीं।

ग्रीष्मावकाश से पहले जिस दिन वह आदिनाथ के साथ कलकत्ता जा रही थी, आदिनाथ ने कहा था, "अब तो एक महीने बाद ही बैंडिल आना होगा।"

इस पर सुकुमारी ने कहा था, "पता है—कमला दी ने लेकिन छुट्टियों में भी एक दिन आने को कहा है। सभी तो चले जाएंगे, अकेली पड़ जाएगी बेचारी। आओगे न एक दिन?"

आदिनाथ ने कहा, "तुम तो रहोगी नहीं, फिर मैं क्यों इतनी तकलीफ उठाऊं?"

"लेकिन आते तो कमला दी खूब खुश होतीं।"

"सच !"

"नही तो क्या झूठ !"

"*तुम्हारी कमला दी की खुशी से मुझे क्या लेना-देना है !*"

इसके बाद एक दिन छुट्टियों में सुकुमारी ने पूछा, "तुम शनिवार की शनिवार कहा जाते हो ?"

आदिनाथ ने हंसकर कहा, "तुम्हारी कमला दी के पास।"

उस दिन सुकुमारी ने यह बात हंसकर ही उठाई थी। सोचा था, आदिनाथ मजाक कर रहा है। बोली, "कमला दी के पास तुम्हारी दाल नही गलने की। वह ऐसी-वैसी औरत नही है।"

"क्यों, तुम्हारी कमला दी क्या शेर-चीता है ?"

"शेर-चीते से भी ज्यादा, जाने पर बात भी नही करेंगी, बाहर से ही भगा देंगी।"

आदिनाथ ने कहा, "चलो, एक बार वह भी सही। अभी तक किसी औरत से नही हारा, एक बार देखूं, हार कर कैसा लगता है।"

सुकुमारी ने कहा, "*हराने की बडी इच्छा है न ! लेकिन तुम कमला* दी को शायद पहचानते नही हो। हम लोग इतने दिन साथ रहे हैं, फिर भी मैं उन्हें ठीक से नही जान पाई। एक साथ एक जगह रहकर भी कभी पैर की एडी से ऊपर की पिंड़ली तक नही देख पाई। कभी किसी बात मे भी दुर्बलता नही देखी। कमला दी का विचार छोड़ दो।"

और आज ? अकेली गाड़ी में बैठी सुकुमारी प्रायः रो ही पड़ी। कौन जानता था कि कमला दी इस तरह उसका सारा विश्वास, सारी श्रद्धा धूल में मिला देंगी। और कोई भी हो, लेकिन कमला दी के साथ वह प्रतियोगिता मे कैसे जीत सकती है !

सेक्रेटरी ने पूछा था, "हर शनिवार को क्या तुम घूमने कलकत्ते जाती हो ? शनिवार को कोई तुम्हे लेने आते हैं ? उन्हीके साथ तुम्हारी शादी होगी ?"

सेक्रेटरी के साथ बैठकर अकेले बात करने का उसके लिए आज पहला ही मौका था। हर प्रश्न के उत्तर में वह सिर्फ हां-हां करती जा रही थी।

तभी सेक्रेटरी ने कहा, "तुम क्या अपना भला चाहती हो ?"

सुकुमारी ने इस बार भी हां की ।

"तब क्या तुम्हें पता है, गर्मी की छुट्टियों में जब तुम नहीं थी, तब भी वह हर शनिवार को यहां आते थे और गाड़ी में चढ़कर कमला दत्त के साथ घूमने जाते थे ?"

डाक-घर के सामने गाड़ी पहुंचने पर सुकुमारी ने प्राय: चीखकर कहा, "रुको, रुको यहां ।"

गाड़ी रुकते ही सुकुमारी डाक-घर में गई ।

अन्दर जाकर बोली, "एक टेलीग्राम फॉर्म तो दीजिए ।"

आदिनाथ ने कहा—वह टेलीग्राम मुझे मिला शाम को । देखकर हैरान रह गया । फिर क्या आफत आई ! रात को तो कोई गाड़ी नहीं थी । होने पर भी लौटता कैसे ! दूसरे दिन सुबह की ट्रेन से गया । जाकर देखो, प्लेटफॉर्म पर सुकुमारी अकेली खड़ी प्रतीक्षा कर रही है ।

सुकुमारी बोली, "चलो, अभी चलो ।"

"कहां ?"

आदिनाथ को लगा, जैसे सुकुमारी जोर-जोर से सांस ले रही थी, जैसे सारी रात सोई नहीं हो ।

आदिनाथ ने एक बार पूछा, "आखिर कहां चल रही हो ?"

सुकुमारी ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया, सिर्फ कहा, "मैं अब एक दिन की भी देर नहीं करूंगी—एक क्षण भी नहीं ठहर सकती ।"

फिर गाड़ी करके उस पुराने गिर्जे के पास पहुंचे ।

सुकुमारी ने कहा, "उतरो यहां ।"

"यहां क्यों ?"

सुकुमारी ने इस बार भी कोई उत्तर नहीं दिया । सीधी उस मस्तूल के पास ही जाकर रुकी । फिर कहा, "इस मस्तूल पर हाथ रखो, और उस देवी की ओर देखकर कहो—सब साक्षी हैं कि···"

आदिनाथ ने कहा—उसके बाद भाई, हिन्दू होकर भी, ईसाई गिर्जे के उस मस्तूल को छूकर वर्जिन मेरी को साक्षी कर प्रतिज्ञा की कि

"सच !"

"नहीं तो क्या झूठ !"

"तुम्हारी कमला दी की खुशी से मुझे क्या लेना-देना है !"

इसके बाद एक दिन छुट्टियों में सुकुमारी ने पूछा, "तुम शनिवार को शनिवार कहा जाते हो ?"

आदिनाथ ने हसकर कहा, "तुम्हारी कमला दी के पास ।"

उस दिन सुकुमारी ने यह बात हसकर ही उठाई थी। सोचा था, आदिनाथ मजाक कर रहा है । बोली, "कमला दी के पास तुम्हारी दाल नही गलने की। वह ऐसी-वैसी औरत नहीं है।"

"क्यो, तुम्हारी कमला दी क्या शेर-चीता हैं ?"

"शेर-चीते से भी ज्यादा, जाने पर बात भी नही करेंगी, बाहर से ही भगा देंगी।"

आदिनाथ ने कहा, "चलो, एक बार वह भी सही । अभी तक किसी औरत से नही हारा, एक बार देखूं, हार कर कैसा लगता है।"

सुकुमारी ने कहा, "हराने की बड़ी इच्छा है न ! लेकिन तुम कमला दी को शायद पहचानते नही हो । हम लोग इतने दिन साथ रहे हैं, फिर भी मैं उन्हें ठीक से नही जान पाई । एक साथ एक जगह रहकर भी कभी पैर की एड़ी से ऊपर की पिंड़ली तक नही देख पाई। कभी किसी बात मे भी दुर्बलता नही देखी । कमला दी का विचार छोड़ दो।"

और आज ? अकेली गाडी में बैठी सुकुमारी प्रायः रो ही पड़ी। कौन जानता था कि कमला दी इस तरह उसका सारा विश्वास, सारी श्रद्धा धूल मे मिला देंगी। और कोई भी हो, लेकिन कमला दी के साथ वह प्रतियोगिता मे कैसे जीत सकती है !

सेक्रेटरी ने पूछा था, "हर शनिवार को क्या तुम घूमने कलकत्ते जाती हो ? शनिवार को कोई तुम्हें लेने आते हैं? उन्हींके साथ तुम्हारी शादी होगी ?"

सेक्रेटरी के साथ बैठकर अकेले बात करने का उसके लिए आज पहला ही मौका था। हर प्रश्न के उत्तर मे वह सिर्फ हा-हां करती जा रही थी।

तभी सेक्रेटरी ने कहा, "तुम क्या अपना भला चाहती हो ?"

सुकुमारी ने इस बार भी हां की।

"तब क्या तुम्हें पता है, गर्मी की छुट्टियों में जब तुम नहीं थी, तब भी वह हर शनिवार को यहां आते थे और गाड़ी में चढ़कर कमला दत्त के साथ घूमने जाते थे ?"

डाक-घर के सामने गाड़ी पहुंचने पर सुकुमारी ने प्रायः चीखकर कहा, "रुको, रुको यहां।"

गाड़ी रुकते ही सुकुमारी डाक-घर में गई।

अन्दर जाकर बोली, "एक टेलीग्राम फॉर्म तो दीजिए।"

आदिनाथ ने कहा—वह टेलीग्राम मुझे मिला शाम को। देखकर हैरान रह गया। फिर क्या आफत आई ! रात को तो कोई गाड़ी नहीं थी। होने पर भी लौटता कैसे ! दूसरे दिन सुबह की ट्रेन से गया। जाकर देखो, प्लेटफॉर्म पर सुकुमारी अकेली खड़ी प्रतीक्षा कर रही है।

सुकुमारी बोली, "चलो, अभी चलो।"

"कहां ?"

आदिनाथ को लगा, जैसे सुकुमारी जोर-जोर से सांस ले रही थी, जैसे सारी रात सोई नहीं हो।

आदिनाथ ने एक बार पूछा, "आखिर कहां चल रही हो ?"

सुकुमारी ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया, सिर्फ कहा, "मैं अब एक दिन की भी देर नहीं करूंगी—एक क्षण भी नहीं ठहर सकती।"

फिर गाड़ी करके उस पुराने गिर्जे के पास पहुंचे।

सुकुमारी ने कहा, "उतरो यहां।"

"यहां क्यों ?"

सुकुमारी ने इस बार भी कोई उत्तर नहीं दिया। सीधी उस मस्तूल के पास ही जाकर रुकी। फिर कहा, "इस मस्तूल पर हाथ रखो, और उस देवी की ओर देखकर कहो—सब साक्षी हैं कि…"

आदिनाथ ने कहा—उसके बाद भाई, हिन्दू होकर भी, ईसाई गिर्जे के उस मस्तूल को छूकर वर्जिन मेरी को साक्षी कर प्रतिज्ञा की कि

सुकुमारी से ही शादी करूंगा। उस प्रतिज्ञा को सुनकर कहीं सुकुमारी को जरा आश्वासन मिला। और उसके बाद ही फूट-फूटकर रोने लगी। कहा, "कमला दी का जीवन में सबसे अधिक विश्वास करती थी। सबसे अधिक श्रद्धा करती थी। उनसे मैंने कभी भी कोई बात छिपाई नहीं। वही कमला दी मेरे रास्ते का कांटा बनी।"

तब भी मैं कुछ नहीं समझ पा रहा था। बोला, "क्यों, कमला दी ने तुम्हारा क्या किया ?"

सुकुमारी ने और भी रोते-रोते कहा, "गर्मी की छुट्टियों में तुम यहां नहीं आए थे? कमला दी को लेकर घूमने नहीं गए थे ?"

यहां आदिनाथ थोड़ा रुका। फिर कहा—समझ गया कि वह बात खुल गयी है, लेकिन जिसके द्वारा भी हो, कम से कम कमला दी के द्वारा तो नहीं ही।

फिर बोला—जो भी हो, यह प्रसंग सुकुमारी का है। इसलिए संक्षेप में ही कहूंगा। सुकुमारी सिर्फ इतने से ही मानी हो, ऐसा नहीं। दक्षिणेश्वर जाकर एक दिन मां काली के सर पर हाथ रख प्रतिज्ञा कराके छोड़ा कि उसीसे शादी करूंगा। वैसे मेरे लिए इस प्रतिज्ञा का कोई विशेष मूल्य नहीं था कि इसे न मानकर मुझे बहुत बड़ा पाप लगेगा; लेकिन सुकुमारी ने इसके बाद जो कांड किया, वही भयानक था। और उसके लिए जिम्मेदार और कोई नहीं—सिर्फ कमला दत्त ही थी।

सुकुमारी ने कहा, "देख रही हूं, संसार में और किसी का भी विश्वास नहीं है।"

कमला दत्त इस सबके बारे में कुछ भी नहीं जानती थी। वह कहती, "सुकुमारी, तुम मेरे ऊपर क्यों नाराज होती हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

सुकुमारी कहती, "मैंने इतना विश्वास किसी पर नहीं किया, जितना तुम पर।"

कमला दत्त हंसती। कहती, "विश्वासघात का कौन-सा काम किया है, खोल कर कहो न ?"

केवल कमला दत्त ही नहीं, सुकुमारी का परिवर्तन देखकर सभी

अवाक् हो गए थे । ऐसी तो वह नहीं थी । हर बात में खिट-खिट । बिना बात जैसे कमला दी से लड़ने को तैयार रहती ।

कमला दत्त कहती, "तुम्हारी कक्षा की लड़कियां आज इतना शोर मचा रही थी सुकुमारी !"

सुकुमारी कहती, "छोटे बच्चे जरा शोर मचाते ही है ।"

"तो क्या तुम चुप नही करा सकती हो ? दूसरी लड़कियों का हर्ज होता है ।"

"हो न, सभी तुम्हारी तरह मनहूस तो हो नही जाएगे न !"

शनिवार को रात को होस्टल आते ही कमला दत्त ने पूछा, "आज कहां-कहां गए तुम लोग ?"

सुकुमारी आग होकर कहती, "आपकी तो ईर्ष्या से छाती फट रही होगी । आप किस मुंह से पूछ रही हैं ?"

कमला दत्त अवाक् हो जाती । कहती, "ईर्ष्या ! ईर्ष्या क्यों होगी मुझे ? मेरी तो कुछ समझ में नही आता सुकुमारी !"

केवल खिटखिट स्वभाव ही नही, चेहरा भी न जाने कैसा हो गया है । पेट भरकर खाती नही है । खा ही नहीं पाती । बैठती है और उठ जाती है । कहती है, "कुछ अच्छा नहीं लग रहा ।"

फिर हठात् बाथरूम से ओ-ओ की आवाज़ आती ।

कमला दी कहती, "बाथरूम मे इतना भात कहां से आया ?"

मनीषा सेन कहती, "कल सुकुमारी ने कै की थी । आपको नही पता कमला दी !"

कमला दत्त के लिए यह नई बात नही थी । सेक्रेटरी के यहां मानू, आह्लादी मासी मां सभी को तो देखा है । जच्चा वाला कमरा साल में एक दिन भी खाली नहीं रहता । कमला दत्त ने लक्ष्य किया, सुकुमारी की आंखो के नीचे कालिमा छा गई थी । उसे कैसा एक सन्देह हुआ ।

मझली नानी की बात याद आई—कुलाचार के बिना क्या सिद्धि मिलती है ? महामाया की दूती ने ब्रज मे आकर राधा नाम रखा और कृष्ण ने मथुरा जाकर उसके साथ कुलाचार किया—तभी तो उन्हें सिद्धि

मिली ! और मेरा भी क्या नसीब है बेटी, दूसरे के बच्चे जनाते-जनाते ही ज़िन्दगी गुज़र गई !

सेक्रेटरी उस दिन दरख्वास्त का नाम सुनते ही बिगड़ गए।

"नहीं-नहीं, इस समय किसी को छुट्टी नही दी जायगी। कुछ ही दिनों बाद वार्षिक परीक्षा है। इसके अलावा अभी कोर्स भी पूरा नहीं हुआ है।"

कमला दत्त ने सिफारिश की, "इसको तो छुट्टी बाकी है। इसके अलावा उसने वचन दिया है कि एक महीने के बाद चली आएगी।"

"छुट्टी बाकी हो या नही इस समय छुट्टी नहीं मिल सकती।"

"लेकिन उसकी तबीयत खराब है।"

इस बार सेक्रेटरी को कुतूहल हुआ, "किसकी तबीयत खराब है? किसकी ? नाम क्या है ?"

कमला दत्त ने कहा, "सुकुमारी बसु, बगला टीचर।"

नाम सुनते ही पता नही क्यों सेक्रेटरी अचानक दयालु हो उठे। बोले, "सुकुमारी बसु ! पहले क्यों नही कहा ? एक महीने मे अगर नही ठीक हो, तो दो महीने की छुट्टी दो न !"

कहकर झट से हस्ताक्षर कर दिए, ज़रा भी मुश्किल नही हुई। कमला दत्त को बड़ा आश्चर्य हुआ।

स्कूल में आजकल और भी काम बढ गया है। चारों ओर राज-मीर, मजदूर लगे हैं; ईंट, चूने और बालू के पहाड़। बांस की सीढ़ी से मजदूर सिर पर रख-रखकर ईंटें ढो रहे थे। गिट्टी तोडने की आवाज़ से जैसे कान फटे जा रहे थे। फिर भी कमला दत्त को कोई विरक्ति नहीं, क्लान्ति नहीं। मजदूरों के जाने पर जाकर खड़ी होती और इमारत पूरी होने पर कैसी लगेगी, इसी बात की कल्पना करती।

आह्लादी मासी मां के लड़का हुआ है और मानू के लड़की। मां-बेटी बैठी-बैठी चाय पीती और सामने आकाश की ओर पांव फेंकते-खेलते दो महीने के मामा-भांजी।

आह्लादी मासी मां कहती, "इस बार तो कमला बेटी को भी बच्चा होगा।"

कमला दत्त के दोनों कान लाल हो जाते। कहती, "छी : मासी मां, क्या कह रही हैं!"

मासी मा इस पर कहती, "हां, तेरा तो सब कुछ वह स्कूल ही है; आदमी, पूत जो कुछ है, वह स्कूल ही है।"

कभी-कभी कमला दत्त के मन में आता, पुराने गिर्जे की सीढ़ियां चढ़कर जरा उस चबूतरे को देख आए। वह नाम क्या अभी भी वैसे ही लिखा है, इतने पानी—धूप और ठंड के बाद भी? लेकिन समय नहीं मिलता। काम भी क्या कुछ कम है?

शनिवार को आदिनाथ फिर आया। ट्रेन लेट थी, आने में जरा देर हो गई।

कमला दत्त ने कहा, "इतनी देर से आए हैं, सुकुमारी कब से आपके लिए सजी-धजी बैठी है।" कहकर सुकुमारी को बुलवाया। और कुछ तो कहने को था नहीं।

फिर भी आदिनाथ ने कहा, "इस बार बैंडिल आने का कौन-सा बहाना बनाऊंगा, वही सोच रहा हूं।"

कमला दत्त ने नजर झुकाए, काम करते-करते कहा, "इस बार शायद बहाना खोजने पर भी नहीं मिलेगा। और इसके अलावा शायद आपको यहां आने की आवश्यकता भी नहीं होगी।"

आदिनाथ जाने क्या उत्तर देने जा रहा था कि हठात् सुकुमारी लाव-लश्कर लिए आ गई। आते ही आदिनाथ से बोली, "चलो।"

कमला दत्त ने आदिनाथ से कहा, "एक महीने बाद फिर सुकुमारी को पहुंचा रहे हैं न?"

उत्तर दिया सुकुमारी ने, कहा, "आशीर्वाद करो कमला दी, जिससे फिर कभी भी आपके पास न आना पड़े। इस तरह अपना चेहरा न झुलसवाना पड़े।"

आदिनाथ अचानक तमक उठा; लेकिन कमला दत्त ने कोई जवाब नहीं दिया। प्रशान्त हंसी में सब कुछ सहना ही जैसे उसका काम हो।

आदिनाथ बाहर जाकर फिर लौटा। हाथ जोड़कर बोला, "उसकी

ओर से मैं ही आपसे क्षमा मांग लेता हूं कमलादेवी, आप इसपर ध्यान न दीजिए।"

मैंने पूछा—फिर?

आदिनाथ ने कहा—इसके बाद हम दोनों कलकत्ते चले आए, और कुछ ही दिनों बाद हम लोगों को शादी की रस्म भी पूरी करनी पड़ी। शायद शादी इतनी जल्दी नहीं होती, लेकिन कमला दत्त के लिए ही सुकुमारी ने इतनी बड़ी जोखिम ली, यह भी जानता था। और मेरी एक मिनट की असावधानी से ही यह सम्भव हुआ, यह भी स्वीकार करता हूं। जो भी हो, हर परिस्थिति के लिए मैं तैयार ही था। अपने घरवालों से भी अलग हो गया, लेकिन वह अलग बात है। कमला दत्त को लेकर जो कहानी है, अब वही कहूं।

शादी पर निमन्त्रण भेजने के समय सुकुमारी ने कहा, "कमला दी को सबसे पहले निमन्त्रण भेजना होगा। उन्हें सबसे पहले चिट्ठी भेजो।"

नये घर में भी एक छोटे-से उत्सव का आयोजन किया गया।

मनीषा दी, मीरा दी, माधुरी दी, इला दी, शिखा दी—सभी आई थी उस दिन। नहीं आई सिर्फ कमला दत्त।

सुकुमारी ने पूछा, "कमला दी नहीं आईं?"

मनीषा दी ने कहा, "क्यों, कमला दी तो बीमार हैं, तुझे नहीं पता?"

बीमार! मैं हैरान था। कमला दत्त बीमार है, मैं तो जानता नहीं था। लौकिकता के नाम पर कमला दत्त ने बालियों की एक जोड़ी भेज दी थी। कभी-कभी इच्छा होने पर बॉक्स में से निकालकर सुकुमारी पहनती थी। कमला दी के नहीं आने से जैसे उसकी खुशी आधी ही रह गई। सुकुमारी ने पूछा, "स्कूल की और क्या खबर है?"

"खबर! खबर और क्या होगी, उसी तरह चल रही है। कॉलिज की इमारत तैयार हो रही है। चारों ओर ईंट, चूने, बालू के पहाड़ लगे हैं। मजदूर काम कर रहे हैं।

"कमला चुपचाप पड़ी रहती हैं। खुद उठ भी नहीं पाती। पड़े-पड़े इमारत की खबर पूछती है। डॉक्टर-नर्स आ रहे हैं। सेक्रेटरी आकर देख

जाते हैं। एक महीने से इलाज में उनका काफी रुपया खर्च हो गया है।"

"लेकिन कमला दत्त को आखिर हुआ क्या ?"

वह बात भी उन लोगों ने बतलाई। एक दिन स्कूल की छुट्टी के बाद कमला दत्त गाड़ी से बाहर गई, जैसे प्रायः जाती थी। सन्ध्या हो गई, रात हो गई, लेकिन कमला दत्त का पता नहीं। सब लोग सोच-सोचकर परेशान थे। सेक्रेटरी के घर कमला दत्त कभी-कभी जाती जरूर थी। किसी-किसी दिन वहीं से चाय भी पी आती थी। उसके बाद फिर मामी मां से बात करती और इसी तरह लौटते-लौटते कभी सात साढ़े सात भी बज जाते। कुछ भी ठीक नहीं रहता।

मनीषा दी ने कहा, "सेक्रेटरी के घर खबर भेजूं ? मुझे तो बड़ा डर लग रहा है।"

कालो की मां रात को आठ बजे दौड़ती-दौड़ती आई, बोली, "बड़ी दीदीमनि बेहोश हो गई हैं दीदीमनि, सुना ?"

"कहां ?"

"सेक्रेटरी के घर।"

"क्या हुआ था ?"

"क्या हुआ था, यह कोई नहीं जानता था। सेक्रेटरी भी नहीं।" कालो की मां ने कहा।

आह्लादी मासी मां के पास भी खबर पहुंची। सुनकर उनके हाथ-पांव जैसे छाती से चिपक गए। बोली, "है ! जीती-जागती लड़की इस तरह गिर पड़ी—कोई देख भी नहीं पाया ? किसीने मुंह में एक घूंट पानी भी नहीं डाला ? आंधी नहीं, पानी नहीं, जिससे फिसलन हो ! आखिर जवान लड़की गिरी कैसे ?"

मानू ने कहा, "लेकिन कमला दी गिर्जा के पास गई थी किसलिए ? वह तो गोरों की जगह है !"

"कमला बेटी का भी नहीं हुआ···कुलाचार बिना क्या सिद्धि मिलती है बेटी ! मैंने जिस तरह और लोगों को बच्चे पैदा कराए हैं—वह भी उसी तरह स्कूल लेकर ही गई···"

सेक्रेटरी के घर उस समय गिर्जा के बूढ़े पादरी साहब भी खड़े थे।

घोड़ागाड़ी का गाड़ीवान भी खड़ा था।

सेक्रेटरी ने पूछा, "फिर? ऐसा क्यों हुआ ?"

गाड़ीवान ने कहा, "बड़ी दीदीमनि गाड़ी में चढ़कर गिर्जा के बगीचे घूमने गई थी। एक घंटे तक जब नही लौटी तो मैंने पादरी साहब को खबर दी।"

बाकी पादरी साहब ने समझा दिया। बोला, "बहुत खोजा, लेकिन कहो नही दीख रही थी। अन्त मे गार्डेन पार कर सीढी से ऊपर लैंडिंग जाकर देखा—ग्राउण्ड के ऊपर पड़ी है एक लेडी। देखते ही पहचान गया—अपनी हेड मिस्ट्रेस मिस दत्त !"

सेक्रेटरी भी आश्चर्य में पड गए। उस जगह चढ़ी ही क्यों थी कमला दत्त? वहां उसे क्या काम था ?

लेकिन कौन देता उस समय इस बात का उत्तर ?

इसके बाद तीन दिन तक इसी प्रकार बेहोश पड़ी रही कमला दी। सेक्रेटरी के लड़के-लड़कियों ने दिन-रात एक कर उसकी सेवा की, भानू-मानू दोनों के दूल्हे भी आए। वे लोग भी उसके बिस्तर के पास दो मिनट खड़े रहकर कमला दी को देख गए।

मानू के पति ने कहा, "सचमुच, कमला दी स्कूल के बारे मे सोचते-सोचते अपने प्राण ही दे डालेंगी।"

भानू के आदमी ने कहा, "घर मे ऐसा उदाहरण होते हुए भी तुम लोगो मे से किसी ने पढाई-लिखाई नही की।"

मानू बोली, "बाबा ने क्या हम लोगों को पढाया था कभी, जिससे हम लोग पढ़ते ?"

पति ने कहा, "जो पढ सकेगा, उसे ही बाबा ने पढ़ाया। इसीलिए उन्होने इतना पैसा खर्च किया।"

भानू ने कहा, "हम लोग क्या पढ़ते नही थे, लेकिन बाबा ने इतनी कम उम्र में हम लोगों की शादी कर दी और शादी होते न होते ही बच्चे !"

मानू ने कहा, "बाबा हम लोगो से ज्यादा कमला दी को चाहते हैं।"

आह्लादी मासी मा ने कहा "तू ज्यादा बकबक मत कर ! याद नही

है, तेरी शादी में कितना खर्च हुआ था ? सिर्फ दहेज ही तो तेरह हजार का था। किस लड़की को कम दिया है, जरा सुनूं मैं भी !"

'कौन-सा जमाई कह सकता है कि उसे कम दिया है ? उसका स्कूल ही तुम लोगों की नजर में खटक रहा है !"

फिर कमला के कान के पास मुंह ले जाकर मासी मां ने कहा, "कमला बेटी, अब कैसी हो ?"

लेकिन कहकर ज्यादा देर नहीं रुक पाईं। बोली, "जाऊं, थोड़ी देर कमर सीधी कर लूं जाकर। क्या आफत आई है बेचारी पर !"

तीन दिन बाद कमला दत्त को जरा होश आया। फिर आंखें खोल उसने चारों ओर एक बार नजर घुमाकर देखा।

शाम को कमला दत्त ने कहा, "मैं स्कूल जाऊंगी मासी मां !"

आह्लादी मासी मां ने गाल पर हाथ रखा, "अभी स्कूल का नाम मत लो। शरीर में जरा जोर आने दो, फिर जाना।"

कमला दत्त ने मुंह से कुछ भी नहीं कहा; लेकिन स्कूल में अभी भी उसे काफी काम पड़ा था। धीरे-धीरे सारी घटना उसके दिमाग में चक्कर काटने लगी। सेक्रेटरी के छोटे लड़के ने बाद में एक दिन कहा, "कमला दी, उस दिन गिर्जा के पास कितने लोग जमा हो गए थे, ओफ् ! वैंडिल के करीब सभी लोग वहां जमा थे। सभी पूछ रहे थे—'क्या हुआ ? यह क्या हुआ है भाई ?' खबर सुनकर जब मैं पहुंचा तो इतनी भीड़ थी कि मुश्किल से अन्दर जा पाया।"

स्कूल आते समय आह्लादी मासी मां ने कहा, "अभी कुछ दिन अधिक काम मत करना, नहीं तो फिर किसी जगह सिर चकराकर गिर पड़ोगी; कोई देख भी नहीं पाएगा।"

इसके बाद फिर हमेशा की तरह ही स्कूल चलने लगा। कॉलेज हुआ। नई इमारत बनी। सेक्रेटरी ने और भी रुपया लगाया। स्कूल का नाम और भी बढ़ा। नई-नई अध्यापिकाएं आईं। सुकुमारी चली गई थी, लेकिन उसकी जगह आई वासन्ती। शिखा दी इस स्कूल को छोड़कर आसनसोल चली गई हैं। वहां उन्हें ज्यादा वेतन मिलता है। इला की मां मर गई। माधुरी के भाई की शादी हो गई। मानू के

लडकी हुई है, सानू की शादी हो गई है, कलकत्ते में भानू दी के आदमी की भी पटना बदली हो गई। आह्लादी मासी मा और मोटी हो गई हैं। उनके भी फिर बच्चा होने वाला है।

इसी तरह की कितनी ही बातें।

स्कूल लौट आने पर मनीषा सेन ने पूछा, "कमला दी, सच-सच बतलाओ, वहां क्यों गई थीं, उस चबूतरे पर ?"

वासन्ती ने भी पूछा, "सच कमला दी, इतनी जगह रहते वही क्यों गई आप ?"

मनीषा सेन ने कहा, "क्या पता भाई, क्या सोचकर गई थी। वह बात किसी को नही बतलाती। कितनी हो बार पूछा है, लेकिन किसी भी तरह नहीं बतलाती।"

लेकिन कमला दी बतलाए या नहीं बताए, बात एक दिन खुल ही गई।

उस समय हुगली गर्ल्स स्कूल कॉलेज हो गया था। कॉलेज की लेडी प्रिंसिपल थी कमला दत्त। सारे दिन काम और काम। कोई सीमा ही नहो थी। आज स्कूल-कमेटी की बैठक है। कल कॉलेज की एजूकेशन-कमेटी का एलेक्शन है। वोट, षड्यन्त्र, फाइल और परीक्षा। इसमें पता नहीं कब सारा दिन निकल जाता। सेक्रेटरी के घर और भी ज्यादा जाना पड़ता।

सेक्रेटरी के घर भी काफी परिवर्तन हुए हैं।

आह्लादी मासी मा इसी बीच और भी मोटी हो गई है। ज्यादा बात करने से उनकी सांस उखड़ जाती है। शरीर पर कपड़े नहीं रह पाते। कहतीं, "शरीर बंधा-बंधा-सा लगता है बेटी !"

फिर कमला दत्त को देख कर कहतीं, "शरीर तो तेरा है बेटी, कैसे रखा बेटी, तैंने अपना शरीर !"

वास्तव में कमला दत्त का शरीर है भी ऐसा ही, कहीं से जरा भी बेडौल नहीं।

वह सुडौल शरीर उस दिन सेक्रेटरी ने पहली बार देखा। कमला दत्त फाइल लिए काम दिखलाने आई थी।

सेक्रेटरी ने कहा, "सुना है, सदय बाबू एलेक्शन में खड़े हो रहे हैं ?"

कमला दत्त ने कहा, "सुना तो मैंने भी है।"

सेक्रेटरी ने कहा, "वह जिससे एक भी गार्जियन का वोट न पायें, यह व्यवस्था तुम्हें करनी होगी।"

कमला दत्त ने कुछ नहीं कहा।

सेक्रेटरी ने फिर कहा, "अपने आदमियों को छोड़कर कमेटी में बाहर का एक भी आदमी मैं नहीं रखना चाहता हूं—यह तुम्हें बतलाए देता हूं।"

फिर भी कमला दत्त के मुंह से कोई शब्द नहीं निकला। इसके बाद कुछ देर रुककर बाहर जाने को बढ़ ही रही थी कि हठात् रुक गई।

सेक्रेटरी ने कहा, "कुछ कहना है ?"

कमला दत्त ने इस बार नजर उठाकर देखा—सीधी, निष्पलक, निर्भीक दृष्टि। सेक्रेटरी जैसे अवाक हो गए। कमला दत्त इस तरह तो कभी नहीं है! और तभी उन्होंने देखा, कमला दत्त का सांचे में ढला सुदृढ़, सुडौल, निर्भीक शरीर।

शायद कुछ कहने जा रहे थे, लेकिन उससे पहले कमला दत्त ने कहा, "मुझे छुट्टी चाहिए।"

"छुट्टी !"

सेक्रेटरी जैसे एक बार फिर अपने कान से सुनना चाहते थे।

"हां, कुछ दिन की छुट्टी।"

सेक्रेटरी को फिर भी विश्वास नहीं हो रहा था। बोले, "किसे चाहिए छुट्टी, तुम्हें या और किसी को ?"

"मुझे ही चाहिए।"

"छुट्टी लेकर कहां जाओगी ?"

कमला दत्त बोली, "मेरे लिए जाने की जगह है।"

सेक्रेटरी जरा गम्भीर हो गए। बोले, "बाघ-निसुन्दिपुर ? तुम्हारी मा तो मर चुकी हैं। और बाबा, उनका तो कोई पता नहीं है।"

कमला दत्त ने कहा, "नहीं, बाघ-निसुन्दिपुर छोड़कर भी मेरे जाने की जगह है।"

"कहां ?"

कमला दत्त बिना कोई उत्तर दिए चुपचाप खड़ी रही।

सेक्रेटरी ने कहा, "बैठो कमला, तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं है। शान्ति से जरा देर बैठो।"

कमला दत्त कुर्सी पर बैठ गई।

सेक्रेटरी ने पहले ठण्डे होकर ही समझाने की कोशिश की, "कुछ ही दिनों बाद एलेक्शन है। इस समय तुम्हें छुट्टी कैसे दी जा सकती है? तुम्हारे ऊपर ही तो सारा भार है। तुम समझती क्यों नहीं हो?"

कमला दत्त ने कहा, "मुझसे और नहीं होता।"

सेक्रेटरी ने कहा, "मैं तो हूं, मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। जो काम तुमसे नहीं हो, मैं कर दूंगा।"

कमला दत्त फिर भी चुपचाप बैठी रही।

सेक्रेटरी ने कहा, "तुम्हें आराम की जरूरत है, मैं समझ सकता हूं। तुम भी तो मनुष्य हो, केवल मनुष्य ही क्यों, औरत की जात। मशीन को भी आराम की जरूरत होती है; लेकिन इस समय एलेक्शन के समय!"

कमला दत्त चुप।

सेक्रेटरी ने फिर कहा, "तुम्हें छुट्टी ही तो चाहिए! लेना—बाद में लेना। जहां कहीं जाना हो, जाना—मैं भी तुम्हारे साथ जाऊंगा। तुम्हें अकेले नहीं छोड़ा जा सकता।"

कमला दत्त ने कहा, "नहीं, मुझे अभी ही छुट्टी चाहिए।"

सेक्रेटरी क्षुब्ध हो गए। आखिर इतना साहस कमला दत्त में कहां से आ गया! बोले, "फिर भी तुम्हें छुट्टी चाहिए?"

"हां।"

"कहां जाओगी?"

"कलकत्ते।"

"कलकत्ते! कलकत्ते में कहां?"

कमला दत्त ने कहा, "सुकुमारी के यहां।"

"सुकुमारी कौन? सुकुमारी वसु? अपनी बगला की टीचर?"

"हां, उसकी शादी के समय नहीं जा पाई, इस बार जाना ही है।

उन लोगों ने नया घर लिया है। मुझे बुलाया है।"

सेक्रेटरी चुप थे। काफ़ी देर तक उनके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। फिर धीरे-धीरे कहा, "सब समझ गया; लेकिन यह स्कूल, यह कॉलेज···यह सब तो तुम्हारा ही है···इसकी जिम्मेवारी, एक दिन इसकी उन्नति-अवनति, नेकनामी-बदनामी सब तुम्हारे ही ऊपर निर्भर रहेगी। जिस दिन यह और भी बड़ा होगा, देश-विदेश से बड़े-बड़े लोग आयेंगे, तब तुम्हारे ही तो नाम की जय-जयकार होगी। सब तुम्हारा आदर करेंगे। मैं कौन हूं, मैं तो कुछ भी नहीं हूं।"

लेकिन कमला दत्त कुछ नहीं बोली।

राममोहन सेन फिर कहने लगे, "अगर यह बात न होती तो और पांच लड़कियों की तरह तुम्हारी भी शादी कर देता, जिस तरह मानू, भानू, सानू, पानू—सभी नोन-तेल-लकड़ी लिए दिन काट रही हैं, तुम भी काट देती। कुछ भी झंझट नहीं था, आफत नहीं थी।"

कमला दत्त अभी भी चुप थी।

सेक्रेटरी ने कहा, "रात हो रही है, अब तुम घर जाओ।"

कमला दत्त उठी। धीरे-धीरे जाने लगी।

सेक्रेटरी ने कहा, "रुको।"

फिर पास जाकर कहा, "सीधी घर जाओगी और कहीं भी नहीं, समझी? सीधे घर। तुम्हारा मन ठीक नहीं है।"

इतना ही नहीं, बाहर आकर गाड़ीवान से भी कह दिया, "बड़ी दीदीमनि को सीधे स्कूल ले जाओ और कहीं भी मत रुकना। सीधे स्कूल, समझे।"

गाड़ीवान ने सलाम करके कहा, "अच्छा हुजूर!"

इसके बाद कमला दत्त ने गाड़ी में आकर जंगले-दरवाजे बन्द कर लिए, तब जाकर कहीं निश्चित हुए राममोहन

उस दिन शनिवार था। ग्रीष्मावकाश हो चुका था। काफी दिन पहले ग्रीष्मावकाश के दिनों ऐसे ही एक शनिवार की बात है। सेक्रेटरी नहीं थे। उस दिन भी ऐसा ही हुआ था। हां, तब कॉलेज नहीं हुआ

था। तब जो-जो थे, उनमे से बहुत-से लोग अब नहीं हैं; लेकिन फिर भी सब कमला दी, कमला दी कहते नहीं थकते।

दफ्तर में प्रिंसिपल कमला दत्त बैठी है। सभी छात्र तथा अध्यापिकाए अपने-अपने घर जा चुकी हैं।

तभी डाकिया आया। रोज ही आता है।

ज्यादातर बेकार चिट्ठियां। कुछ काम की थीं। अचानक एक चिट्ठी की लिखावट देख हृदय धक-धक करने लगा।

लिखी थी आदिनाथ ने। तीसरे लड़के के अन्नप्राशन का निमन्त्रण।

लिखा था—'किसी बार भी तो आईं नही, हर बार ही हम लोग आपकी प्रतीक्षा करते हैं। इस बार जरूर आइएगा—अगर कोई असुविधा हो तो मैं खुद भी लेने आ सकता हू।'

अंत मे सुकुमारी ने भी जोड़ दिया था—'कमला दी, अगर इस बार भी नहीं आईं, तो समझूंगी कि आप मुझसे नाराज हैं।'

चिट्ठी पढ़ते-पढते हठात् लगा, जैसे कोई पास के दरवाजे से छिपछिपकर देख रहा है।

कमला दत्त ने कहा, "कौन ? कौन हो तुम ?"

तभी कालो की मा आई। बोली, मैं हू बड़ी दीदीमनि !"

"तो छिप-छिपकर क्या देख रही है ? छिपकर देखने का क्या है यहा ? मैं कोई शेर-चीता हूं, जो खा जाऊगी !"

कालो की मा सकपका गई। बोली, "मैंने तो कुछ देखा नही।"

"मतलब ? मैंने देखा, तुम झांक रही थी और अब ना कर रही हो ?"

कालो की मा चुप हो गई; लेकिन कमला दत्त का मन खराब हो गया। आजकल प्रायः ही कालो की मां को इस तरह झांकते ही देखा है, जैसे कुछ संदेह हो, जैसे पहरा दे रही हो, जैसे एकदम नजरबंद करके रखा हो।

कल सुकुमारी के लड़के का अन्नप्राशन है। यहां से किसी को नहीं बुलाया है, सिर्फ कमला दी को आने को लिखा है। ऐसा सुयोग शायद फिर नहीं मिलेगा। सुबह की ट्रेन से अगर जाए तो शाम तक आसानी से लौट आएगी।

दूसरे दिन सुबह ही कमला दत्त ने कालो की मा को बुलाया, कहा, 'एक चिट्ठी तुम्हें सेक्रेटरी के घर ले जानी होगी।"

"इतनी सुबह-सुबह कैसी चिट्ठी दी दीमनि?"

"लिखा है, मेरी तबीयत ठीक नही है। आज सुबह सेक्रेटरी के घर नही जा पाऊंगी, यही—हां, और सुबह इस समय मैं कुछ नही खाऊंगी? मैं अपने कमरे में आराम करने जा रही हू। मुझे तग मत करना।"

कालो की मा के जाते ही कमला दत्त ने जल्दी-जल्दी सब कुछ ठीक-ठाक किया। वैसे ले जाने को था ही क्या! आने-जाने के लायक कुछ रुपये, बस। सुकुमारी के पहले और दूसरे लडके के समय गले की जंजीर और चूड़ियां देना तो हो ही चुका था। अब देने लायक कुछ नही था। चांदी के दस या बीस रुपयों से ही काम चलाना पड़ेगा। खाली हाथ जाना ठीक नही है।

सारा होस्टल खाली पड़ा था। कही भी जन-प्राणी का नाम नही। सिर्फ इमारत के एक कोने में जमादार की कोठरी थी। दफ्तर में अच्छी तरह से ताला लगा दिया। वहा पर बहुत से मूल्यवान कागज थे। टाइप-राइटिंग मशीन, स्कूल-फड के कुछ रुपये और कुछ चेयर-टेबल। कमला दत्त के अपने कमरे मे भी अब क्या रहा था! सोने की कोई चीज तो अब थी नही; ट्रंक में सिर्फ कुछ मिल और तात की साड़ियां थीं—वे भी सादी और सस्ती। और अध्यापिकाओं के कमरों में भी ऐसा कुछ नहीं था। जो था भी, सब अपने-अपने साथ ले गई थी। पहरा देने लायक कीमती चीज कोई भी नही थी।

लेकिन और एक समस्या थी। घर पहचान पाएगी? कभी भी अकेली कलकत्ता नही गई थी। एक-दो बार गई भी तो सेक्रेटरी के साथ टैक्सी में। फिर काम हो जाने पर सेक्रेटरी के साथ ही लौट आती।

जो भी हो, फिर भी कमला दत्त को क्या हुआ, पता नहीं। [illegible] शायद ऐसा ही होता है। यही छुट्टी या मजा, निषिद्ध काम को [illegible] नशा। निषिद्ध काम में शायद ऐसा ही आनन्द होता है, और [illegible] शायद सुकुमारी हर शनिवार [illegible] थी। आज जैसे सुकुमारी था [illegible]

सुकुमारी से छूत लगी है। वहां से भाग जाएगी—दूर, बहुत दूर। फिर कभी भी नहीं लौटेगी। वह शहर के किसी निर्जन भाग में एक छोटा-सा कमरा लेकर निर्लिप्त, निरभिमान और शान्त जीवन गुज़ारेगी। इतने दिन तक मनुष्यत्व के साथ उसका जो भेद है, जिसको उसने सबसे छुपाकर रखा, मुझमें सब और सबमें मैं का जो रोड़ा था, वह शायद अब समाप्त होगा।

आदिनाथ की बातें याद आ रही थी—'पत्नी बनने की कोशिश कीजिए, पति मिलेगा; बहन होने की कोशिश कीजिए, भाई मिलेगा; मा होने की कोशिश कीजिए, सन्तान मिलेगी। आप एक वास्तविक नारी बनकर रहिए। और मैं कुछ भी नहीं चाहता।'

स्कूल से निकलकर अकेली ही कब सड़क पर आ पहुंची थी, खयाल ही नहीं था। रास्ते में ज़्यादा लोग नहीं थे। माथे को साड़ी से ढके कमला दत्त रास्ते पर आ पहुंची थी। यह बात जैसे उसे खुद को आश्चर्यजनक लग रही थी। यह बात आखिर हुई कैसे—यह सोच नहीं पा रही थी।

अचानक उसे देखकर सुकुमारी ज़रूर ही खूब आश्चर्यचकित होगी।

आदिनाथ के चेहरे का भी ध्यान हो आया। उन लोगों की शादी पर नहीं जा पाई थी। आज सुकुमारी को आशीर्वाद दे आएगी। कहेगी—'सुखी रहो।'

फिर सुकुमारी शायद उन दिनों की बातें फिर से याद कराएगी। कहेगी, 'कमला दी, आप तो इनके साथ मिलने को मना करती थी। तुम्हीं तो कहती थी—इसमें कल्याण नहीं है। तुम्हींने तो कितना रोका, नाराज हुईं। आज देख जाओ, हम कितने सुखी हैं! कितना मंगल हुआ है! कितना कल्याण हुआ है! हम लोगों ने जरा भी बुरा नहीं किया।'

सुकुमारी कहेगी, 'जब तक नौकरी करती थी, उस समय मेरा स्वास्थ्य कितना खराब था! आज शादी के बाद देखो, मैं कितनी मोटी हो गई हूं! मेरा रंग कितना साफ निकल आया है!'

सुकुमारी और भी कहेगी, 'तुम्हारे पास मैं सिर्फ शिक्षिका ही थी। और अब देखो, मैं मां बन गई हूं। तुम्हारी तो एक भी बात ठीक नहीं

निकली कमला दी ! तुमने सब झूठ ही कहा था ।'

फिर सुकुमारी अपना घर दिखलाएगी—'यह मेरी रसोई है, यह सोने का कमरा है, यह बैठक और पूजा-घर, तुलसी और कमला दी, ये है मेरे छात्र—यह बडा लड़का, मझला और छोटा !' सब देख-सुनकर कमला दत्त कहेगी—'तुम लोगों को सुखी देखकर मैं बहुत खुश हू सुकुमारी ! उस दिन मेरी ही भूल हुई थी। मैंने तुझे जो कुछ भी उपदेश दिए, सब झूठे ! सब बेकार की बात ! मैंने गलती की थी, मुझे ईर्ष्या हुई थी। तू विश्वास रख।'

मौका मिलने पर आदिनाथ शायद पूछेगा, 'फिर कभी उस पोर्तुगीज चर्च की ओर घूमने गईं क्या ?'

कमला दत्त कहेगी, 'हां, गई थी।'

आदिनाथ पूछेगा, 'क्या देखा ?'

'कुछ नहीं !'

'आपका लिखा वह नाम वहा नही है ?'

'वह मिट गया है, और अगर न मिटा हो तो मिट जाना ही ठीक है। इसीसे मैं खुद जाकर ही एक दिन मिटा आई।'

'क्यों ?'

'इसलिए कि अनजाने मे जो कुछ किया था, होश मे आने पर वह सह्य नही हुआ।'

'यह आपसे किसने कहा कि अनजाने में आपने गलत काम किया था ? आप खुद अपने मन को ही तो ठीक से पहचान नही पाई।'

'अपने को क्या सभी पहचान पाते है आदिनाथ बाबू ?'

'जरूर ! मगर पहचानने की कोशिश ही नही की। आप तो अंधेरे कमरे में काली बिल्ली पकड़ने की कोशिश कर रही थीं।'

'लेकिन ऐसा क्यों हुआ ? यह क्या मेरे जन्म-लग्न का फल है ? बाबा कहते थे···'

इस पर आदिनाथ शायद ठठाकर हंस पड़ेगा। कहेगा—'अच्छा, बतलाइए, सुबह सूर्य उगता है इसलिए हमारी नींद खुलती है या हमारी नींद खुलने का समय होता है, तब सूर्य उगता है ?'

यमुना इस कोई जवाब देने की कोशिश करेगी, लेकिन उससे पहले ही आदिनाथ कहेगा, 'उत्तर इतनी जल्दी न दीजिए। यह सवाल इतना सरल नहीं है।'

'सहज क्यों नहीं है ?"

'अगर इतना ही सरल होता तो आपको कष्ट ही किस बात का था ! प्रकृति के नियम को तो आप मानती नहीं हैं, नियम ही आपके लिए बेनियम है। उसका गुण-गान और नहीं करना होगा ! प्रकृति तो आदिनाथ नहीं है कि सहज ही में छोड़ देगी। मैंने गिर्जा के चबूतरे पर ही आपको छोड़ दिया था, लेकिन वह अपना हिसाब पाई-पाई वसूल करेगी। वह न तो आदमी देखती है, न औरत। उसका बाकी वह लेकर ही छोड़ेगी।'

'लेकिन सेक्रेटरी तो कहते हैं—लाभ ही बड़ा है, हिसाब कुछ भी नहीं है। अगर लाभ हो तो हिसाब में भूल रहने पर भी कोई हानि नहीं।'

'लाभ में है ऊपर दूसरी मंजिल पर रहने वाला। ऊपर जाने के लिए नीचे दरवान को भूलने से नहीं चलने का। उसी दरवान का नाम है हिसाब, इसी का मतलब है नियम।"

'नियम ! किस बात का ?'

'यही कि मैं आपको अच्छा लगा, या एक दिन आप मुझे अच्छी लगी थी। यह नियम आपने उस दिन तो माना नहीं था ?'

'लेकिन अभी भी तो समय है !'

'नहीं, और समय नहीं है।'

"क्यों ?"

'लग्न पार हो चुकी है—प्रकृति का मिजाज ही ऐसा है। एक बार लग्न पार हो जाने पर वह फिर नहीं आती।'

'लौटती नहीं है ? लेकिन मैं तो लौटने के लिए नहीं आई हू आदिनाथ बाबू···!'

अचानक जाने कैसा शोर होने लगा। ट्रेन आने वाली है। प्लेटफॉर्म पर काफी भीड़ थी। टिकट तो ले ही चुकी थी। इस बार खयाल रखना

होगा। घूंघट ठीक कर कमला दत्त तैयार ही हो गई। समय है। अभी भी समय है। अभी भी लग्न पार नहीं हुई है!

"यह रही बड़ी दीदीमनि, यहां हैं!'

'यह क्या कालो की मां! तुम यहां! तुम्हें तो बतलाया नहीं था! तुमसे तो कुछ भी नहीं कहा था!"

लेकिन अचानक सामने आए सेक्रेटरी राममोहन सेन।

"आप?"

सेक्रेटरी ने कहा, "यूनिवर्सिटी से एक चिट्ठी आई है। यह देखो, इसीलिए तुमसे कुछ परामर्श करना था।"

कमला दत्त ने कहा, "कहिए!"

सेक्रेटरी बोले, एक मिनट में तो सब कहा नहीं जा सकता। और भी कुछ काम था।"

"तब स्कूल ही चलिए, या आपकी कचहरी?"

राममोहन सेन ने कहा, "एलेक्शन के सम्बन्ध में तुमसे कई बातें कहनी थीं। मैंने सदय बाबू की नामजदगी को रद्द करने का प्रबन्ध कर लिया है।"

फिर ज़रा रुककर बोले, "हमारी उस चिट्ठी के बारे में यूनिवर्सिटी वालों ने क्या कहा है, जानती हो?"

कालो की मां ने तब तक गाड़ी बुला ली थी। बात करते-करते सेक्रेटरी ने कमला दत्त को गाड़ी में चढ़ा लिया। और उधर कलकत्ते जाने वाली ट्रेन धड़-धड़ करती जुबली ब्रिज पार कर रही थी।

गाड़ी में पहले कमला दत्त उठी। फिर कालो की मां को चढ़ने का इशारा किया राममोहन सेन ने। सबसे बाद में खुद चढ़े। चढ़कर अच्छी तरह से दरवाजे बन्द कर लिए। गाड़ी ने चलना शुरू कर दिया था, लेकिन गाड़ी के पहियों की आवाज़ को दबाती ट्रेन की आवाज़ अभी भी आ रही थी।

सेक्रेटरी ने कहा, "तुम्हें शायद नहीं मालूम, कमेटी ने तुम्हारे वेतन में और पचास रुपये बढ़ा दिए हैं।"

कमला दत्त सिर्फ उनके चेहरे की ओर ताकती रही। कुछ भी जवाब नहीं दिया।

सेक्रेटरी ने कहा, "हम लोगों ने ठीक किया था कि तुम्हारा जो काम है, उसे देखते हुए तुम्हारा वेतन बहुत ही कम है।"

फिर भी वह आखे फाड़े सेक्रेटरी की ओर देख रही थी।

सेक्रेटरी ने कहा, "सोचता हू, तुम लोगों के होस्टल की इमारत बहुत छोटी है। पास में एक और बड़ी-सी इमारत बनवानी होगी। कर्मचारी बढ़ रहे है। छात्राएं भी पहले से काफी अधिक हो गई है। मीटिंग में कमेटी के सामने यह बात उठाऊंगा···।"

अचानक तभी कमला दत्त बोल उठी, "ज़रा-सा पानी होगा?"

"पानी !"

सिर्फ कालो की मां ही नही, सेक्रेटरी भी यह सुनकर हैरान रह गए। पूछा, "पानी ! प्यास लगी है ! पानी पीना है क्या ?"

कमला दत्त ने कहा, "नही।"

कमला दत्त ने फिर कहा, "ज़रा-सा पानी दीजिए न !"

इसके साथ ही कमला दत्त को लग रहा था, ट्रेन जैसे उसके सिर के ऊपर से धड़-धड़ करती जा रही है। एक-एक पहिया निकलता है और हर बार जैसे उसके सिर के हज़ारों टुकड़े करता जाता है। हर क्षण उसकी मृत्यु हो रही है। अकाल मृत्यु, जिससे उसे कोई छुटकारा नहीं है।

सेक्रेटरी ने फिर पूछा, "पानी का क्या होगा ?"

लेकिन कमला दत्त को लग रहा था—एक घोडागाडी···गगा ताई—वे लोग खूब सुखी हैं—तेल-नोन-लकड़ी और गृहस्थी तुम्हारे लिए नही है···हम लोग सेवा करने आए है—देख बेटी, देख, कैसे सुख में हू ! सुबह से एक प्याली चाय भी नही मिली है···तुम्हें कहते हैं वजिन मेरी, गुरु-मां—सजेगी क्यों नही, औरत की जात बिना गहने पहने अच्छी नही लगती···तुम्हारे अच्छे के लिए ही कह रही हू। सुकुमारी, उसमें मंगल नही है, कल्याण नहीं है···उसका मिथुन लग्न में जन्म हुआ है, उसके भाग्य में सुख नही है।

···शनि की दशा है, मैं क्या कर सकता हूं···सारे दिन क्या बात

करते हो, तुम लोगों की ऐसी क्या बातें हैं ? न, आप समझाकर कहिए, अगर कभी···आप पत्नी हो सकती है, मां हो सकती है, बहन हो सकती है, आप साधारण औरत ही हैं···आपके लिए ही है यह स्कूल, कॉलिज, डिग्री···और तो पातू, मातू, भानू उनके लिए है पति···उनके लिए है लड़के-लड़की··· उनके लिए ही है कुलाचार···बड़ी तकलीफ होती है··· वह है सिस्टर निवेदिता, नाईटिंगल और वह कमला दत्त···वही···

सेक्रेटरी ने देखा, कमला दत्त अपने-आपसे न जाने क्या बड़बड़ा रही थी।

फिर पूछा, "पानी का क्या होगा कमला ?"

गाड़ी के चक्के से सारा माथा फट गया है···खून···खून···हाथ भी खून से सन गए हैं···ओफ···लोग क्या कहेंगे !

सेक्रेटरी ने कहा, "कमला, पानी का क्या करोगी ?"

कमला दत्त बोली, "पानी के बिना साफ कैसे करूंगी ?"

कमला दत्त तब भी सोच रही थी—आत्मोत्सर्ग के हिज्जे करो तो, ठीक-ठीक···कमला दत्त ने मुझे दो क्षण के लिए शान्ति दी थी···याद रखने लायक क्या आपके जीवन में कुछ घटा ही नहीं···आधी रात को नींद टूटने पर क्या करती हैं···आप पिंजरे की चिड़िया हैं, फिर से जंगली चिड़िया बन जाइए न···वह लिखा रहने दीजिए···आप एक मिनट के लिए भी कभी नारी रही थीं, यह इसी बात की साक्षी रहेगा···

सेक्रेटरी अभी भी कुछ समझ नहीं पा रहे थे। काली की मां भी जैसे हतवाक् हो गई थी। कमला दत्त को वह पकड़े बैठी थी, जैसे उसके न पकड़ने से दोदीमनि गिर पड़ेगी। गाड़ी उस समय भी धड़-धड़ करती चली जा रही थी।

सेक्रेटरी ने कहा, "क्या हुआ है कमला तुम्हें ?"

कमला दत्त ने कहा, "जरा-सा पानी दीजिए न !"

"पानी ! क्या करोगी ? पियोगी ?"

कमला दत्त ने कहा, "नहीं।"

"तब ?"

"हाथ धोऊंगी।"

सेक्रेटरी फिर भी कुछ नही समझ पाए। बोले, "हाथ क्यो धोओगी? हाथ मे क्या लगा है?"

कमला दत्त ने कहा, "खून।"

कहकर आदिनाथ रुका। बोला, उधर मैं कमला दत्त की चिट्ठी पाकर हावडा स्टेशन पर खडा था। एक के बाद एक ट्रेन आ रही थी और जा रही थी—कमला दत्त का पता नही। उस समय मैं इस सबके बारे मे कुछ भी नही जानता था। बाद मे सब पता लगा, कमला दत्त को सेक्रेटरी ने रोक लिया था।"

फिर जरा रुककर कहा, "इसके बाद जब भी हम लोगों के कोई हुआ, सुकुमारी ने हर बार कमला दी को निमत्रण भेजा। कमला कभी कुछ रुपये, तो कभी कोई गहना भेज देती। मैंने भी कई बार सोचा कि एक बार हो आऊ। जाकर कमला दत्त से मिल आऊ अथवा गिरजे के उसी चबूतरे पर देख आऊ कि कमला दत्त के हाथ का लिखा मेरा नाम अभी भी उतना ही स्पष्ट है या नही; लेकिन मेरा जाना नहीं हो पाया। मेरा व्यापार भी धीरे-धीरे अब काफी बढ़ गया था। और शायद उम्र के साथ-साथ मन भी बदल गया था। कमला दत्त के प्रसग को इस तरह आहिस्ते-आहिस्ते प्रायः भूल ही गया।"

मैंने पूछा, "और स्कूल?"

आदिनाथ बोला, "कहा तो कि वह स्कूल बाद मे कॉलेज हो गया। कमला दत्त ने और भी तीन विषय मे एम० ए० पास किया। वह अब कॉलेज की प्रिंसिपल थी। सक्षेप मे, इस बीच बहुत कुछ बदल गया था।"

"फिर?"

"फिर काफी दिनों तक कोई खबर नही मिली। कई साल तो आसाम के जगलों में ही कट गए। व्यवसाय में सभी कुछ भूल गया था। जवानी की वे आखें ही बदल गई थीं। फिर तो चश्मा-वश्मा लगाकर प्राय: बूढा ही हो गया। लड़की की शादी की चिन्ता अलग सवार थी सर पर। इसी बीच एक दिन ट्रेन मे काछड़ा जाते एक आदमी से परिचय हुआ। बात-चीत से मालूम हुआ कि वह हुगली के रहने वाले थे। उन्हीं से पूछा—

देखने की मन में इच्छा हो आई। आज की कमला दत्त को देखकर शायद पहले की कमला दत्त का कोई आभास कर पाऊं !

कह दिया, "चलूंगा।"

इतने दिन बाद आज कमला दत्त की कहानी लिखते-लिखते न जाने क्यों मन बार-बार उचट जाता है। पहले भी कई बार कोशिश की, लेकिन लिख नहीं पाया, दो-एक पंक्ति लिखने के बाद ही रुक जाना पड़ता। लिखी पंक्तियां काट देता। फिर तो करीब-करीब कमला दत्त के प्रसंग को भूल ही गया था।

लेकिन उस दिन अचानक फिर याद आ गया।

याद आने का भी एक कारण था।

लिखते-लिखते आज बार-बार यही बात याद आ रही है।

उस दिन घटनावश कलकत्ते के एक बालिका विद्यालय के पुरस्कार-वितरण-समारोह में जा पहुंचा।

अचानक देखा, सभापति के आसन पर बैठे थे राममोहन सेन। पास बैठे एक सज्जन ने भी कहा—'उन्हीं का नाम है श्री राममोहन सेन।' आदिनाथ के धीरोदात्त नायक राममोहन सेन ! अच्छी तरह से देर तक देखा। क्या प्रशान्त श्रीवान् चेहरा था ! उम्र हो गई है, फिर भी स्वास्थ्य बनाए रखा है। सिर पर तरतीब से संवरे खिचड़ी बाल। कन्धे पर पटरी की चादर, चुन्नट की धोती, और सिले किया कुर्ता। उनके आसपास, आगे-पीछे असंख्य महिलाओं की भीड़ थी।

साथ ही फिर से पुरानी बातें याद आने लगी। आदिनाथ की कहानी याद आई, सुकुमारी याद आई। आदिनाथ व्यापार करके और भी धनी हो गया है। घर बनाया है, गाड़ी ले ली है। सुकुमारी सुगृहिणी हो गई है। एक दिन घर से अलग हो गया था। अब फिर सब ठीक हो गया है।

राममोहन सेन मशाई उस समय गम्भीर वाणी में अपना भाषण दे रहे थे—' मुहल्ले-मुहल्ले में हमें ऐसी संस्थाएं शुरू करनी होंगी, हर एक ग्राम में ऐसे ही आश्रम खोलने होंगे।

' यहां हम सब सेवा करने आए हैं, मनुष्यत्व-लाभ की दुःसाध्य

साधना। संसार में हम अक्षय सम्पत्ति का अधिकार लेकर आए हैं। विधाता के दिए इतने बड़े दान को, इतनी सामर्थ्य को बेकार खोकर हमें उसका उपहास नहीं करना है। इस महान उद्देश्य को एक ओर कर नोन-तेल-लकड़ी के चक्कर में नहीं पड़ना है।'

मुझे याद आई काफी दिन पहले की घटना। दुपहर की ट्रेन से हम दोनों ही बैंडिल के लिए रवाना हुए।

जाकर दुःखान्त कुछ देखना होगा, यही आशंका थी, लेकिन वह इतना भयानक होगा, यह नहीं सोचा था। सोचा था, अगर किसी दिन कमला दत्त को लेकर कहानी लिखूंगा तो उस कहानी में यही बात कहूंगा कि हमारी अन्तर-प्रकृति में एक चिरन्तन नारी का वास है। पुरुष और नारी दोनों के अन्तर में ही है। वह कहती है, मैं ज्ञान नहीं मानती। परमार्थ नहीं मानती। ख्याति नहीं मानती। समस्त विश्व की निधि के बदले में जो चाहती हूं, वह है परमामृत। वह कहती है—ख्याति और सम्मान काफी पाया है। वह केवल दूरत्व की ही सृष्टि होती है। अर्थ या सम्पत्ति भी नहीं चाहती, क्योंकि उसमें केवल विच्छिन्नता का भय है। मैं सिर्फ प्रेम चाहती हूं, शुद्ध प्रेम। कारण, ज्ञान—उसमें सिर्फ सोचना ही होता है; लेकिन प्रेम—वह मिलन कराता है। याज्ञवल्क्य से मैत्रेयी ने धन-सम्पत्ति नहीं मांगी, मांगा था प्रेम का वह परममंत्र। लेकिन जो इस प्रेम का एक कण भी नहीं पाता, जिसके जीवन में प्रेम की पवित्र लग्न कभी आई ही नहीं, जिसे जबर्दस्ती परमामृत से वंचित किया गया, उसी का नाम है कमला दत्त! सोचा था, कहानी में इसी बात को विभिन्न प्रकार से समझाने की कोशिश करूंगा।

लेकिन जाकर आंखों से जो कुछ देखा, उसके बाद कहानी लिखने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

बैंडिल स्टेशन के पास ही पीपल का वह पेड़ आज भी वैसे ही खड़ा था; लेकिन स्कूल का नाम लेते ही गाड़ीवान ने कहा, "स्कूल तो कभी का बन्द हो चुका है हुजूर!"

फिर भी गए; लेकिन स्कूल के सामने पहुंचने पर भीतर या बाहर

कहीं भी किसी जीवित प्राणी का कोई नामोनिशान तक नहीं मिला। आदिनाथ ने कहा, "चलो, सेक्रेटरी के घर चलें, वहां पहुंचकर शायद कमला दत्त का कुछ पता चले।"

सेक्रेटरी के छोटे लड़के बाहर आए, शिशुमोहन सेन। बोले, "कमला दी ! कमला दत्त ! आप लोग उनसे मिलेंगे !" फिर न जाने क्या सोच-कर पूछा, "आप लोग कहां से आ रहे हैं ?"

हम लोगों की बात सुनकर कहा, "अच्छा, आइए मेरे साथ।"

स्कूल के सामने पहुंचकर उन्होंने सदर दरवाजे का ताला खोला, हम लोग अन्दर गए, खाली इमारत। अन्दर चारों ओर घास और तरह-तरह के पौधे उग आए थे। आदमी के रहने का कहीं कोई निशान नहीं था। फिर अन्दर जाकर एक और कमरे का दरवाजा खोला। शिशुमोहन बोले, वह, "देखिए" उधर" !'

अच्छी तरह से देखने की कोशिश की। लगा, खिड़की-दरवाजे बन्द कमरे में टेबल के पास जैसे एक मूर्ति निश्चल बैठी है। हम लोगों को देखते ही उठकर सामने आ गई। सर के बाल आधे पक गए थे। काफी दिन से बालों में तेल नहीं पड़ा था।

आदिनाथ ने धीरे से कहा, "कमला दत्त ?"

कमला दत्त तब तक हम लोगों के पास आ गई थी। कुछ देर हम लोगों के चेहरे की ओर न जाने क्या देखती रही, फिर बोली, "आप लोग कलकत्ते से आए हैं ?"

आदिनाथ ने कहा, "हां।"

कमला दत्त ने फिर कहा, "हम लोगों का कॉलेज देखने आए हैं न ! आप लोगों के लिए ही मैं बैठी थी। हां, तो आइए मेरे साथ !"

फिर हम लोगों को साथ लेकर बाहर आईं। वहां भी कोई नहीं था। ईंट, चूने, बालू के स्तूप अभी भी वैसे ही पड़े थे। कुछ ने उगकर जगह को और भी भयानक बना दिया था। कमला दत्त की ओर तिरछी नजर से देखा—प्राणहीन दो कठोर आंखें चेहरे पर भी अस्वाभाविक रुक्षता, सारा शरीर कृश। वहां खड़े होकर कमला की वह प्रतिमा देख-

कर जैसे डर लगने लगा।

कमला दत्त ने सामने की ओर उंगली से इंगित करके कहा, "वह देखिए—पूर्व में जो खुली जगह देख रहे हैं, वहां हम लोगों की कैमिस्ट्री और फिज़िक्स की प्रयोगशाला होगी; और उसके पास ही होगा फिज़िकल कल्चर जिमनासियम, और वह खाली मैदान देख रहे हैं न, उसमें बनेगा एक काफी बड़ा हॉल—किसी मशहूर व्यक्ति के आने पर वहां उसका भाषण होगा—और अभी वैसे यह कॉलेज है, लेकिन एक दिन इसे यूनिवर्सिटी बनाने की इच्छा है हमारे सेक्रेटरी की · हमारे सेक्रेटरी से मिले हैं आप लोग ?"

कहकर कुछ देर अपने-आप न जाने क्या बड़बड़ करती रही; फिर बोली, "कुलाचार के बिना सिद्धि नहीं होती।"

सब असम्बद्ध प्रलाप! डर लग रहा था।

बाहर आने पर सेक्रेटरी के छोटे लड़के ने कहा, "कितने ही डॉक्टर-वैद्यों को दिखलाया गया है, बाहर भी कई बार भेजा गया है, लेकिन कमला दी को सभी जगह से लौटना पड़ा। कहते हैं—बड़ा उत्पात करती हैं। अब इसीलिए यहां स्कूल में ही रखा गया है। देखभाल के लिए साथ में कालो की मां है। यहां वह फिर भी शान्त रहती हैं। नहीं तो ··"

आदिनाथ यह सब कुछ भी नहीं जानता था। उसने पूछा, "आपके बाबा कहां हैं—स्कूल के सेक्रेटरी ?"

"बाबा एक काम से आज कलकत्ता गए हैं। तरह-तरह के कामों से उन्हें प्रायः ही कलकत्ते जाना पड़ता है। आने में देर होगी।"

आदिनाथ ने पूछा, "लेकिन यह स्कूल बन्द क्यों हो गया ?"

"स्कूल के लिए तो बाबा ने प्रायः सब कुछ ही खर्च कर डाला। जितने दिन तक कमला दी अच्छी थी, स्कूल चलता था। फिर जब कमला दी का यह हाल हो गया तो स्कूल और कौन देखता ?"

आदिनाथ बोला, "लेकिन दो साल पहले तो कमला दत्त ने मुझे यह चिट्ठी लिखी थी !"

और आदिनाथ ने सचमुच ही अपनी जेब से पुरानी चिट्ठी निकाली। सेक्रेटरी के लड़के ने कहा, "दो साल पहले भी स्कूल चल रहा था।

फिर उनका खुद का शरीर ही ठीक नहीं रहा, तो स्कूल बन्द करने के सिवाय उपाय ही क्या था।"

कमला दत्त तब तक उसी तरह बड़बड़ाती चुपचाप अपने कमरे में चली गई।

हम लोग भी बाहर आकर खड़े हो गए। सेक्रेटरी-पुत्र भी आहिस्ते-आहिस्ते ताला बन्द कर हम लोगों के साथ सड़क पर आ गए।

सभा में राममोहन सेन तब भी कहे जा रहे थे— पृथ्वी पर और लोग चाहे जो कुछ करें, चाहे जो कुछ सोचें, यहा हम शान्ति पाने नही आए हैं। आराम करने नही आए है। हमें कल्याण चाहिए। कल्याण चाहने पर दुःख-कष्ट से डरने से तो काम नहीं चलेगा। कल्याण तो संसार मे आता ही दुःख का मुकुट पहनकर है…'

थोड़ी देर बाद भाषण समाप्त हुआ और साथ ही जोर-जोर से तालियां बजने लगी, जैसे रुकना ही नही चाहती थीं।

लेकिन मैं कोशिश करके भी ताली नही बजा पाया था। मुझे जैसे लग रहा था कि आज एक कमला दत्त हजार-हजार कमला दत्तो मे बदल गई है। मेरी आंखों के सामने उस समय बन्द कमरे मे कमला दत्त की पत्थर जैसी मूर्ति घूम गई। मन में हुआ—वह जैसे उल्लास-ध्वनि न होकर, आर्तनाद था। कासिम खां के अत्याचार से जैसे चारो ओर हजारों चजिन मेरी त्राहि-त्राहि कर उठी।